केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान

(समवत् विश्वविद्यालय)

(एन. ए. ए. सी. के द्वारा श्रेणी 'अ' में स्वीकृत)

Central Institute of Buddhist Studies

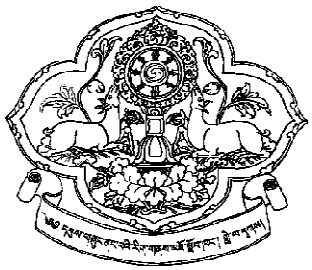

वार्षिक विवरण

Annual Report

2015–2016

चोगलमसर, लेह–लदाख–194101 (ज. एवं क.)

Choglamsar, Leh-Ladakh 194101 (J&K)

विषयानुक्रमणी

पृ.सं.

1. संक्षिप्त इतिहास
2. उद्देश्य
3. प्रबन्धन
4. उप–समितियों का गठन
5. धन
6. कर्मचारी संख्या
7. विभाग और संकाय
8. नवीन प्रवेश
9. परिसंवाद गोष्ठी/संगोष्ठी/कार्यशाला
10. शैक्षिक यात्रा
11. प्रकाशन
12. शोध कार्य
13. परिसर
14. पुस्तकालय
15. संग्रहालय
16. विशेष व्याख्यान /अन्य शैक्षिक क्रियाकलाप :
    - (क) स्व.ग्यल–स्रस बकुला रिनपोछे व्याख्यानमाला
    - (ख) संयुक्त कार्यक्रम
    - (ग) भोटी दिवस
    - (घ) दवाईयों की सुविधा
    - (ङ) वार्षिक क्रीडा–प्रतियोगिता
    - (च) वार्षिक /मासिक पत्रिका
17. पाठ्यक्रम
18. छात्रवृत्ति
19. विद्यार्थियों को पाठय पुस्तक एवं कापियों का निःशुल्क वितरण
20. परीक्षा परिणाम

21. गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय
22. वार्षिकोत्सव
23. अन्य महत्वपूर्ण घटनायें
    (क) भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती
    (ख) सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन की जयन्ती, अध्यापक दिवस
    (ग) हिन्दी दिवस
    (घ) बुम (भगवान बुद्ध के प्रवचनों) का पाठ
    (ङ) लद्दाख के बौद्ध मठों द्वारा मंत्र पाठ, एक अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर
    (च) स्वच्छ भारत अभियान
24. यू.जी.सी विशेषज्ञ दल का आगमन

25. बौद्ध दार्शनिक शास्त्र–अनुवाद परियोजना
26. हिमालयी बौद्ध–संस्कृति–विश्वकोश परियोजना के संकलन का आरम्भ
27. राष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव
28. कुशीनगर में बौद्ध महोत्सव
29. बेंगलुरू में बौद्ध महोत्सव
30. पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र
31. उपाधि /उपाधि–पत्र प्राप्त करने के पश्चात् छात्रों की नियुक्ति

32. डुजिंग फोडंग विद्यालय
    (क) संक्षिप्त इतिहास
    (ख) परीक्षा परिणाम
    (ग) अन्य क्रिया–कलाप
    (घ) कर्मचारी संख्या

33. बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग (हि.प्र.)
    (क) संक्षिप्त इतिहास
    (ख) परीक्षा परिणाम
    (ग) कर्मचारी संख्या

34 परिशिष्ट
    i) प्रबन्धक समिति की संरचना
    ii) शिक्षा समिति की संरचना

iii) वित्त समिति की संरचना

iv) प्रकाशन समिति की संरचना

v) ग्रन्थालय समिति की संरचना

vi) शोध समिति की संरचना

vii) केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की कर्मचारी संख्या

viii) केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह का परीक्षा परिणाम

ix) गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयवार एवं कक्षावार नामांकन का विवरण

x) परीक्षा का परिणाम (डी.पी.एस.,जंस्कार)

xi) डी.पी.एस.,जंस्कार की कर्मचारी संख्या

xii) परीक्षा का परिणाम (बी.डी.एस.वी., केलांग)

xiii) कर्मचारी संख्या (बी.डी.एस.वी., केलांग)

,,,,,,,,,,

1.संक्षिप्त इतिहास :

सन् 1959 से पूर्व लदाख के विद्वान्, श्रामणेर एवं भिक्षु उच्च बौद्ध शिक्षा के लिए तिब्बत जाते थे। वे तिब्बत जाकर वहाँ के विभिन्न प्रसिद्ध महाविहारों, यथा– ड्रि–गुङ, ग–दन, सेरा, टशी–ल्हुनपो, ड्रे–पुङ, सक्या, सङ्–ङग–छोसलिङ, देरगे आदि में अनेक वर्षों तक बौद्ध विद्याओं का अध्ययन करते थे। परन्तु सन् 1959 की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के परिणामस्वरूप अचानक इस परम्परा में व्यवधान पैदा हुआ। तत्पश्चात् यह आवश्यकता अनुभव की गयी कि बौद्ध दर्शन के विधिवत् अध्ययन के लिए इस आर्य देश अर्थात् भारत में ही एक बौद्ध विद्या केन्द्र की स्थापना की जाय। बौद्ध संस्कृति एवं दर्शन के प्रचार–प्रसार के लिए लेह को चिह्नित किया गया, जो प्राकृतिक, भौगोलिक एवं पारम्परिक दृष्टि से सर्वथा अनुकूल था।

तदनुसार चौदहवें परमपावन दलाई लामा जी के वरिष्ठ गुरु योंगजिन लिङ रिन्पोछे द्वारा वर्तमान केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की पूजन–विधि द्वारा स्थापना की गयी। यह संस्थान प्रारंभ में 'बौद्ध दर्शन महाविद्यालय' के नाम से जाना जाता था। सन् 1962 में स्व॰ भदन्त कुशोक बकुला जी के आग्रह पर तत्कालीन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने लदाख के लोगों के बीच इस प्रकार के संस्थान की आवश्यकता का अनुभव किया। तदनुसार उन्होंने इस संस्थान को प्रबंधन एवं वित्तीय सहायता के लिए भारत सरकार के संस्कृति विभाग को सौंपना स्वीकार किया।

प्रारम्भ में इस संस्थान में मात्र 10 भिक्षु छात्र अध्ययन करते थे, जो लदाख के विभिन्न गोनपाओं से संबद्ध थे। छात्रों को भोट साहित्य तथा बौद्ध दर्शन पढ़ाने के लिए दो अध्यापकों को नियुक्त किया गया था। लगभग तीन वर्षो तक सभी विद्यार्थियों एवं अध्यापकों का खर्च

उपर्युक्त दस गोनपाओं ने वहन किया। सन् 1959 से 1961 तक यह विद्यालय लेह में स्थित रहा। उसके पश्चात् इसको लेह से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर स्थित स्पितुग गाँव में स्थानान्तरित किया गया। सन् 1973 में संस्थान को लेह से 8 किलोमीटर दक्षिण–पूर्व दिशा में चोगलमसर में पुनः स्थानान्तरित किया गया। सन् 1964 में संस्थान को एक शैक्षिक संस्थान के रूप में जम्मू व कश्मीर पंजीयन कानून 1941 के अन्तर्गत पंजीकृत किया गया। प्रारम्भ में यहाँ बौद्ध दर्शन के अतिरिक्त संस्कृत, हिन्दी, भोटी एवं अंग्रेजी विषयों का अध्ययन होता था। सन् 1973 में संस्थान को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ॰ प्र॰ से सम्बद्ध कराया गया और सीमांत क्षेत्र के छात्रों के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम शुरू किए गए। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सिफारिश पर यूजीसी अधिनियम की धारा 3, 1965 के तहत अधिसूचना संख्या एफ.9–5/2001–यू.एस.(ए) दिनांक 15–01–2016 के अनुसार केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह को 'समवत् विश्वविद्यालय' का दर्जा प्रदान किया।

बौद्ध विद्या के प्रकाण्ड तिब्बती विद्वान् भदन्त येशे थुबतन ने 1967 तक संस्थान के प्रथम प्राचार्य के रूप में कार्य किया। तत्पश्चात् प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान भदन्त लोछोस रिन्पोछे जी की संस्थान के द्वितीय प्राचार्य के रूप में नियुक्ति हुई। डॉ॰ टशी पलजोर ने सन् 1979 से 2005 तक संस्थान के प्राचार्य के रूप में कार्य किया। सन् 2005 से 2010 तक पाँच साल प्राचार्य के रूप में कार्य करने के बाद डॉ0 नवांग छेरिंग संस्थान के प्राचार्य के पद से सेवानिवृत्ति हुए और 15 जून 2010 को डॉ0 वंगछुग दोर्जे नेगी ने प्राचार्य पद का प्रभार लिया। तदनन्तर, दिनांक 19–12–2011 को सम्पन्न हुई प्रबंधकारिणी की बैठक में प्राचार्य के पद को निदेशक के रूप में पुनर्नामकरण करने का निर्णय लिया गया। दिनांक 12–12–2014 को डॉ. वंगछुग दोर्जे नेगी ने निदेशक पद छोड़ा और निदेशक पद का प्रभार प्रो. कोनछोग वंगदु को सोंपा गया।

2. उद्देश्य : संस्थान का मूल उद्देश्य छात्रों की प्रतिभा अर्थात् व्यक्तित्व को बौद्ध विचार, साहित्य, कला एवं विविध आधुनिक विषयों के ज्ञान द्वारा विकसित और सुसज्जित करना है। सम्पूर्ण हिमालयी क्षेत्रों की बौद्ध संस्कृति एवं कला की शिक्षा हेतु यह इस देश का एक अपूर्व संस्थान है। संस्थान बौद्ध दर्शन और सांस्कृतिक अध्ययन में स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट कार्यक्रम चलाती है और फीडर स्कूलों का स्थापित और देखरेख करता है। उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संस्थान ने निम्नलिखित लक्ष्य निर्धारित किये हैं–

क. ज्ञान की शाखाओं में उत्कृष्टता एवं नवीनता की ओर ले जाने के लिए उच्च शिक्षा प्रदान करना जिन्हें मुख्य रूप से स्नातकोत्तर और शोध डिग्री के स्तर पर उपयुक्त समझा जा सके, जो विश्वविद्यालय की अवधारणा के अनुरूप हों अर्थात विश्वविद्यालय शिक्षा विवरण (1948), भारत में उच्च शिक्षा के नवीकरण, क्रियाकलाप पर समिति का विवरण (2009) और समीक्षा समिति विवरण के समवत् विश्वविद्याएँ (2009)।

ख. विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली के उद्देश्य हेतु विशिष्ट सहयोग के लिए विशेष क्षेत्रों में परीक्षित योग्यता के साथ काम में लगाना है। अर्थात् शैक्षणिक काम एक सामान्य स्वभाववाले कार्यक्रमों यथा– कलाविषय, विज्ञान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, दंत चिकित्सा की पढ़ाई, फार्मेसी तथा प्रबन्ध आदि में पारंपरिक संस्थाओं द्वारा नियमित रूप से पारंपरिक डिग्री (उपाधि) प्रदान करता है, से स्पष्ट रूप से अन्तर करने योग्य हो।

ग. ज्ञान की उन्नति तथा एक पर्याप्त पूर्णकालिक संकाय/शोधकर्ता (पीएचडी और पोस्ट डॉक्टरल) द्वारा विविध विषयों में विभिन्न शोधकार्यों के माध्यम से इस का प्रचार करने हेतु उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण तथा शोध सुविधाएं प्रदान करना है।

घ. पूर्व में बौद्ध दर्शन महाविद्यालय के नाम से जाना जाने वाला शैक्षिक संस्थान केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर के विकास और प्रबंधन की देखभाल और सुसंचालन करना है।

ङ. विभिन्न कार्यकर्मों के अध्ययन तथा बौद्ध दर्शन की विविध शाखाओं एवं सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में शोधकार्य करके उपाधि और प्रमाणपत्र प्रदान करने हेतु अनुदेश देना है।

च. शोध, प्रकाशन, जीर्णोध्दार और शिक्षा की उन्नति के लिए सुविधा प्रदान करना तथा बौद्ध दर्शन की ऐसी शाखाओं के ज्ञान का प्रसार करना जिन्हें संस्थान उचित समझें।
छ. विश्व के किसी भी भाग में स्थित शैक्षिक और अन्य संस्थानों के साथ सहयोग करना जिन के उद्देश्य इस संस्थान के उद्देश्य के समान हों। सहयोग इस प्रकार करना जिससे कि उन के समान उद्देश्यों के प्राप्ति के लिए लाभकारी हों।

ज. ऐसे सभी कार्यों को करना जो कि संस्थान के आंशिक या सम्पूर्ण उद्देश्यों को प्राप्त कराने में आवश्यक, आकस्मिक एवं लाभकारी हों।

3. प्रबंधन : संस्थान का प्रबंधन संयुक्त सचिव, संस्कृति विभाग, भारत सरकार की अध्यक्षता में गठित एक प्रबंधकारिणी के द्वारा सम्पन्न होता है। इस प्रबंधकारिणी के सदस्यों का संगठन विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, संघों, विश्वविद्यालयों तथा बौद्ध विद्वानों के प्रतिनिधियों से बना है। प्रबंधकारिणी के पुनर्गठन की पहली बैठक से लेकर सदस्यों के कार्यकाल की अवधि तीन साल है। संस्थान के निदेशक इस प्रबंधकारिणी के सदस्य–सचिव हैं। वर्तमान में इस प्रबंधकारिणी की संरचना पृष्ठ संख्या –– पर परिशिष्ट के रूप में है। इस प्रबंधकारिणी की बैठक हर छः महीनों के बाद आयोजित की जाती है। प्रबंधकारिणी के पास अधिकार का प्रयोग करने या सभी कर्तव्यों का पालन करने, कार्य करने तथा संस्था के ज्ञापन–पत्र में बताये गये उद्देश्यों को प्रभाव में लाने के लिए जो भी आवश्यक या परिणामी और आकस्मिक कार्य हों उन सब को

करने का अधिकार है। पुनरपि भारत सरकार समय–समय पर महत्वपूर्ण नीति के मामलों में निर्देश दे सकता है, जिस का अनुसरण प्रबंधकारिणी को करना होगा।

4. उप–समितियों की संरचना :
प्रबंधकारिणी के निर्देशों के समुचित पालन हेतु तथा शैक्षिक, वित्त, अनुसंधान अैर प्रकाशन आदि के मामलों में सहयोग करने के लिए अनेक उप–समितियों की संरचना की गई है। इन उप–समितियों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :

शिक्षा समिति : प्रबंधकारिणी द्वारा प्रख्यात पण्डितों एवं विद्वानों की एक शिक्षा समिति की संरचना की गई है। तत्सम्बन्धी क्षेत्रों में प्रबंधकारिणी को उसकी आवश्यकतानुसार सलाह देने के लिए वर्ष में एक या दो बार इस समिति की बैठक होती है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. –– पर है।

वित्त समिति : संस्था के स्मरण–पत्र और संस्थान के नियम एवं नियमन के अनुसार उप–सचिव (वित्तीय)/निदेशक (वित्त), संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली की अध्यक्षता में एक वित्त समिति की संरचना की गई है। संस्थान के निदेशक तथा प्रबंधकारिणी को संस्थान के धन–सम्पत्ति एवं वित्त से संबंधित विषयों पर सलाह देने के लिए वर्ष में एक या दो बार इस समिति का बैठक होती है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. –– पर है।

प्रकाशन समिति : संस्थान हिमालय की कला, संस्कृति एवं भाषा से सम्बद्ध दुर्लभ ग्रन्थों तथा पाण्डुलिपियों का प्रकाशन भी करता रहा है। इन दुर्लभ ग्रन्थों/पाण्डुलिपियों को प्रेस में भेजने से पूर्व इनके प्रकाशन की समीक्षा एवं उपादेयता प्रमाणित करने के लिए प्रकाशन समिति के समक्ष रखा जाता है। यह समिति प्रकाशन के क्षेत्र में प्रख्यात विद्वानों एवं विशेषज्ञों को जोड़कर बनी है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. –– पर है।

ग्रन्थालय समिति : ग्रन्थालय समिति पुस्तकालय के क्षेत्र में जानकारी प्राप्त विशेषज्ञों से बनी है और यह समिति समय–समय पर ग्रन्थालय की प्रगति एवं उत्कृष्टता के लिए सिफारिश करती है, जिसमें अतिरिक्त कर्मचारी, यंत्रों (मशीन) एवं उपकरणों, डिजिटलीकरण और सूचीपत्र आदि की आवश्यकतायें सम्मिलित हैं। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. –– पर है।

शोध समिति : संस्थान की शोध–समिति शोधवृत्ति हेतु शोध–छात्रों का चयन करने के लिए साक्षात्कार का कार्य–संचालन करती है और शोध–छात्रों के क्रियाकलापों तथा प्रगति की समीक्षा करती है। इस समिति की वर्तमान संरचना परिशिष्ट के रूप में पृष्ठ सं. –– पर है।

5. धन : भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत संस्कृति विभाग इस संस्थान को सम्पूर्ण आर्थिक अनुदान प्रदान करता है। वर्ष 2015–16 के लिए संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार ने प्रबन्धन समिति, के.बौ.वि.वि., लेह द्वारा अनुमोदित संस्थान की विभिन्न योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए योजनागत तथा योजनेतर मदों में क्रमशः रु 825.00 लाख एवं रु 801.00 लाख स्वीकृत किये हैं।

6. कर्मचारी संख्या : संस्थान के प्रशासनिक अधिकारी तथा अन्य कर्मचारियों के सहयोग से संस्थान के निदेशक एक प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी के रूप में संस्थान का पर्यवेक्षण करते हैं। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के कर्मचारियों की कोटि–वार संख्या, शैक्षणिक एवं शिक्षणेतर श्रेणी का पृथक् विवरण पृष्ठ संख्या –– पर परिशिष्ट के रूप में है।

7. संकाय तथा विभाग : इस संस्थान को विश्वविद्यालय की पद्धति पर सुचारू तथा प्रभावी रूप से चलाने के लिए बौद्ध विहारों की परम्परा, पांच महाविद्याओं के आधार पर संस्थान में संकायों एवं विभागों की स्थापना की गयी है, जो निम्न है :

1. अध्यात्म तथा न्यायविद्या संकाय (Faculty of Philosophy and Logic)
2. शब्दविद्या संकाय (Faculty of Literature and Language)
3. सोवा रिगपा (भोट चिकित्सा) एवं शिल्प विद्या संकाय (Faculty of Bhot Medical Sciece and Arts)
4. आधुनिक विद्या संकाय (Faculty of Modern Studies)

इस के अतिरिक्त उक्त संकायों को इनके अध्ययन के अनुसार विभिन्न विभागों में विभाजित किया गया है, जिनका वर्णन निम्नप्रकार है :

1) अध्यात्म तथा न्यायविद्या संकाय (Faculty of Philosophy and Logic)

यह संकाय मूलशास्त्र एवं विभिन्न सम्प्रदायों की शाखाओं सहित तीन विभागों से बना है। बौद्ध विहारों की प्रणाली के अनुसार अध्यात्म तथा न्यायविद्या दो स्वतन्त्र विद्याएँ हैं, जिनके अनेक विभाग हैं, परन्तु संस्थान के पाठयक्रम की अनुकूलता के लिए इनको साथ रखा गया है। उपरोक्त संकाय के अंतर्गत निम्न विभाग हैं–

i) भोट बौद्ध दर्शन विभाग
ii) बौद्धदर्शन विभाग (संस्कृत माध्यम)

iii) सम्प्रदाय शास्त्र विभाग

2) शब्दविद्या संकाय (Faculty of Literature and Languages)

यह संकाय भाषाओं से बना है। इस संकाय के अंतर्गत निम्न विभाग हैं–

i) भोटी / तिब्बती विभाग
ii) शास्त्रीय विभाग (संस्कृत और पालि)
iii) आधुनिक भाषाओं का विभाग (अंग्रेजी और हिन्दी)

3) सोवा रिगपा (भोट चिकित्सा) एवं शिल्पविद्या संकाय (Faculty of Bhot Medical Sciece and Arts)

संस्थान हिमालय की परम्परागत कला तथा संस्कृति को संरक्षण देने और उन्नत करने में अत्यधिक रुचि ले रहा है। तदनुसार इस क्षेत्र की कला तथा संस्कृति को संरक्षित एवं उन्नत करने हेतु निम्न विभागों की स्थापना की गई है :

i) **सोवा रिगपा तथा ज्योतिष विभाग :** रोगियों को जड़ी–बूटियों से निर्मित औषधियाँ उपलब्ध कराना इस क्षेत्र की सैकड़ों वर्ष से चली आ रही प्राचीन परम्परा है। इस प्रदेश में जब ऐलोपेथिक दवा नहीं थी, उस समय अमची विद्या (भोट चिकित्सा) ही अधिक प्रसिद्ध थी। वर्तमान समय में भी इस प्रदेश के लोग अमची (भोट चिकित्सा) को सर्वाधिक उपयोगी मानते हैं, क्योंकि इससे दुष्प्रभाव नहीं होते हैं। इन्हीं कारणों के चलते लोग इसे पसन्द करते हैं। उक्त बातों को ध्यान में रखकर संस्थान इच्छुक विद्यार्थियों को अमची (भोट चिकित्सा विद्या) की शिक्षा प्रदान कर रहा है। बारहवीं उत्तीर्ण विद्यार्थी, जिन्हें भोटी भाषा का पर्याप्त ज्ञान है, केवल उन्हें ही छः वर्ष के अमची (भोट चिकित्सा विद्या) पाठ्यक्रम के लिए उपयुक्त विद्यार्थी माना जाता है। ऐसे अनेक विद्यार्थी हैं, जिन्हें उक्त उपाधि प्राप्त हुई है और वे आज व्यक्तिगत एवं सरकारी पदों पर अमची कार्य कर रहे हैं।

ii) **हिमालय के कला और शिल्प :**

क) पारम्परिक थंका/चित्रकला विभाग : चित्रकला इस क्षेत्र में बहुत प्रसिद्ध है। लदाख के बौद्ध विहारों में यह कला अत्यन्त प्रसिद्ध है, जिनमें विभिन्न प्रकार के थंका–चित्र एवं भित्ति–चित्र दिखाई पड़ते हैं। अलची विहार के भित्ति–चित्र तथा हेमिस एवं लामायुरु गोनपा के थंका–चित्र बहुत प्रसिद्ध हैं। इन विहारों में कुछ थंकाएँ हज़ारों वर्ष पुरानी हैं, जिनका आज भी दर्शन किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त यहां के प्रत्येक गांव में एक गोनपा अवश्य दिखाई पड़ता है, जिसमें थंकाओं, भित्ति–चित्रों एवं मूर्तियों का अपार भण्डार है। गर्मी के समय में दुनियाँ भर से पर्यटक लदाख में स्थित थंकाओं, भित्ति–चित्रों, मूर्तियों तथा अन्य धार्मिक वस्तुओं से सुसज्जित बौद्ध विहारों का दर्शन करने आते हैं। संस्थान ने विद्यार्थियों के प्रशिक्षणार्थ भोटी चित्रकला

पाठ्यक्रम की व्यवस्था कर रखी है। थंका बनाने की सदियों पुराने परम्परा को जीवित रखने के लिए अनेक विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

ख) पारम्परिक मूर्ति–कला विभाग : लदाख क्षेत्र में मिट्टी से मूर्तियों तथा मुखौटों का निर्माण करना एक सामान्य बात है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि यहां के बौद्ध विहार मूर्तियों एवं मुखौटों से परिपूर्ण हैं। यहां के प्रत्येक विहार में विशेष तिथि पर धार्मिक त्यौहार अर्थात् गुस्तोर/दोस्मोछे/छे–चु मनाये जाते हैं। इस अवसर पर विभिन्न प्रकार के बुद्धों, बोधिसत्वों, इष्टदेवों आदि की वेश–भूषा एवं मुखौटा धारण कर मुखौटा–नृत्य जो छमस् के रूप में प्रसिद्ध है, का प्रदर्शन किया जाता है। संस्थान ने विद्यार्थियों को बुद्धों, बोधिसत्वों, देवी–देवताओं, इष्टदेवों आदि की मूर्तियों के निर्माण हेतु कला के प्रशिक्षणार्थ व्यवस्था कर रखी है। इच्छुक विद्यार्थी, जो दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर चुके है, उन्हें छः वर्ष का मूर्तिकला प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। वर्तमान में अनेक विद्यार्थी मूर्ति एवं मुखौटा निर्माण कला के अन्तर्गत प्रशिक्षण ले रहे हैं।

ग) पारम्परिक काष्ठकला विभाग : प्राचीन काल में लदाख में पुस्तकों के प्रकाशन हेतु कोई मुद्रण यन्त्र उपलब्ध नहीं था। ऐसी स्थिति में लोग लकड़ी के ब्लॉकों से धार्मिक ग्रन्थों या अन्यान्य ग्रन्थों की प्रतिलिपि प्राप्त कर लेते थे। धार्मिकग्रन्थों की लिपियां विशेषकर कठोर लकड़ी के ब्लॉक पर नियमित रूप से खोदी जाती हैं, जिससे बाद में पढ़ने के लिए किसी कागज़ पर छपायी की जा सके। एक बार किसी लकड़ी के ब्लॉक पर खुदाई हो जाने पर ज़ेरक्स मशीन की तरह उससे हज़ारों बार प्रतिलिपियां निकाली जा सकती है। प्राचीन काल में लदाख में यह कला अत्यन्त प्रसिद्ध थी। यहाँ बौद्धविहारों एवं बौद्ध गृहों के छत पर पाँच रंगों की पताकायें फहराने की परम्परा है, जिन्हें दरचोग के नाम से जाना जाता है और मुख्य द्वारों पर बड़ी लम्बी पताका फहरायी जाती हैं जो दरछेन कहलाती हैं। कपड़े की पताकाओं पर लकड़ी के ब्लॉकों से सूत्रपाठ, मन्त्र, लुङ्ता एवं ग्यलछ़न चेमो (द्वजाग्र) छापे जाते हैं, जो आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक हैं। उक्त काष्ठकला के निरन्तर संरक्षण के उद्देश्य से संस्थान ने एक छः वर्षीय काष्ठकला पाठ्यक्रम की व्यवस्था कर रखी है। यहाँ छात्र लकड़ी के ब्लॉक के निर्माण के अतिरिक्त साज–सज्जा वस्तु, यथा– ड्रेगन, पक्षी, सिंह, घोड़ा आदि जन्तुओं एवं अन्य वस्तुओं की निर्माण कला का भी प्रशिक्षण लेते हैं। लदाख क्षेत्र में यह अत्यन्त प्रसिद्ध है और व्यक्ति अपनी जीविका के लिए इसे अच्छा क्षेत्र मानता हैं।

4) आधुनिक विद्या संकाय (Faculty of Modern Studies)

इस संकाय के अर्न्तगत तीन विभाग हैं जो निम्न प्रकार हैं :

i) बौद्ध पुराणेतिहास विभाग
ii) तुलनात्मक दर्शन विभाग
iii) सामाजिक विज्ञान विभाग

8. नवीन प्रवेश :

संस्थान के निर्धारित प्रवेश के नियमों के अन्तर्गत प्रवेश समिति द्वारा साक्षात्कार के आधार पर छात्रों को कक्षा 6 से 9 तक में प्रवेश दिया जाता है। संस्थान के शाखा गोनपा विद्यालयों के छात्रों को संस्थान में सीधे प्रवेश दिया जाता है। संस्थान के छः वर्षीय पाठ्यक्रम वाले अमची, तिब्बती थंका चित्रकला, मूर्तिकला तथा काष्ठ कला में भी सीट की उपलब्धता के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। वर्तमान सत्र के दौरान प्रस्तुत विवरण के अनुसार व्यावसायिक कक्षाओं के साथ सभी कक्षाओं में कुल 110 नये छात्रों को प्रवेश दिया गया।

9. परिसंवाद गोष्ठी/संगोष्ठी/कार्यशाला :

(क) प्राप्त विवरण के अनुसार वर्तमान सत्र के दौरान संस्थान ने दिनांक 11–07–2015 से लेकर 14–07–2015 तक " बौद्ध महायान के सक्या समप्रदाय के विशिष्ट दृष्टि, भावना एवं चर्या" विषय पर भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों, बौद्ध महाविहारों एवं संस्थाओं से विद्वानों को आमन्त्रित कर चार दिवसीय अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन आचार्य नागार्जुन सभाभवन में किया। इस संगोष्ठी का उद्घाटन बौद्ध महायान के सक्या सम्प्रदाय के परम पूज्य सक्या ठीज़िन रिनपोछे जी ने किया। इस अवसर पर परम श्रद्धेय तोगदन रिनपोछे और लोदीङ खनरिनपोछे जी भी उद्घाटन समारोह में उपस्थित थे। भारतवर्ष के विभिन्न विश्वविद्यालयों, संस्थाओं एवं विहारों से पधारे विद्वानों ने इस परिसंवाद गोष्ठी में भाग लिया और अपने शोधपत्र/निबन्ध प्रस्तुत किये। इनके अतिरिक्त इस परिसंवाद गोष्ठी में अनेक लदाख के स्थानीय विद्वानों ने भी भाग लिया। परिसंवाद गोष्ठी में प्रस्तुत किये गये शोधपत्रों/निबन्धों को ''लद्दाख प्रभा'' शीर्षक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जाता है। इस संगोष्ठी के समापन समारोह का संचालन केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के भूतपूर्व प्राचार्य डॉ. नवांग छेरिङ जी ने किया। इस अवसर पर संस्थान के वरिष्ठ विद्यार्थियों ने एक रंगा रंग सांस्कृतिक कार्य क्रम प्रस्तुत किया।

(ख) संस्थान ने दिनांक 1 सितम्बर से 2 सितम्बर 2015 तक ''पांडुलिपि के निवारक और उपचारात्मक संरक्षण'' विषय पर दो दिन के लिए वर्कशाप आयोजित की। राष्ट्रीय पांडुलिपि शिष्टमण्ड़ल ने उक्त कार्यशाला के लिए निधि उपलब्ध करायी इस दौरान एम.आर.सी./एम.सी. सी. के विद्वानों तथा लदाख के विभिन्न गोनपाओं के विद्वानों ने भाग लिया। इस में व्याख्यान देने के लिए और संरक्षण की कला का प्रदर्शन करने के लिए राज्य अभिलेख और अनेक निजी एन.जी.ओ. के विशेषज्ञों को आमन्त्रित किया। यह दल ने व्यावहारिक उद्देश्य के लिए हेमीस गोनपा, चेमडे गोनपा और माठो गोनपा भी गया।

(ग) दिनांक 8 सितम्बर 2015 को संस्थान ने एल.एन.पी. लेह के सहयोग से यूनिसेफ के संरक्षण के तहत ''शिशु संरक्षण के विषय पर परामर्श सह–संवेदीकरण'' विषय पर एक दिन की वर्कशाप आयोजित की गई। यूनिसेफ के दो प्रतिनिधि श्रीमती वंदना खनधारी और श्री हिलाल भट्ट इस वर्कशाप में उपस्थित थे और उन्होंने अपने विचारों को व्यक्त किया। इस में 15 गोनपाओं के प्रतिनिधियाँ और बच्चों के विषयों से सम्बन्धित भिक्षुओं सहित गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय के 15 अध्यापकों ने भाग लिया। इस अवसर पर यूनिसेफ के प्रतिनिधियों ने एक पावर प्वाइंट प्रस्तुति का प्रदर्शन किया।

(घ) संस्थान के पाठ्यक्रमों में संशोधन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए और अर्द्धवार्षिक पाठ्क्रम (सेमेस्टर) प्रणाली को प्रारंभ करने के उद्देश्य से संस्थान ने ''पाठ्यक्रमः इस की रूपरेखा, कार्यान्वयन और प्रभाव'' विषय पर चार दिन की वर्कशाप का आयोजन किया जिस के लिए संस्थान ने दो विशेषज्ञ महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के प्रो.एम.के.दास और केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्याय, सारनाथ के प्रो. टशी छेरिङ को आमंत्रित किया। सभी संकाय के सदस्यों को इस वर्कशाप में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहने तथा भाग लेने के लिए निर्देश दिया ताकि एक व्यापक पाठ्यक्रम को विकसित कर सकें। इस वर्कशाप का आयोजन दिनांक 3–11–2015 से 6–11–2015 तक किया गया क्योंकि इस दौरान सभी विद्यार्थी वार्षिक परीक्षा तैयारी की छुट्टी पर थे। यह कार्यशाला बहुत ही सफल रही।

(ङ) दो दिन की कार्यशाला/प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय के अध्यापकों
के लिए किया गया। इस अवसर पर राज्यसरकार शिक्षा विभाग के विशेषज्ञ, के.बौ.वि.सं. के विद्वान, विद्यालय प्रशासन/प्रबन्ध के विशषज्ञों ने व्याख्यान दिया और शिक्षण में सहायक साधनों के प्रयोग का प्रदर्शन किया। इस कार्यशाला की विषय–वस्तु आधुनिक शिक्षण प्रणालीविज्ञान और विद्यालय प्रशासन/प्रबन्ध है। 70 गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय के अध्यापकों ने इस कार्यशाला में सक्रिया रूप से भाग लिया तथा उन्होंने व्यावहारिक समस्याओं को प्रस्तुत किया जिनके लिए विशेषज्ञों ने विभिन्न समाधानों का सुझाव दिया।
(च) दिनांक 2 जून, 2015 को ''तथागत बुद्ध और उनका उपदेश'' विषय पर तिब्बती पंचांग के अनुसार बुद्ध जयंती उत्सव की पूर्व संध्या पर एक दिन की स्थानीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर छः विद्वानों ने अपने बहुमूल्य पत्र प्रस्तुत किये और उन पर प्रश्नोत्तर भी हुआ। उक्त संगोष्ठी में के.बौ.वि.सं. लेह के संकाय सदस्यों और विद्यार्थियों के अतिरिक्त सामान्य जनता ने भी भाग लिये।

10. शैक्षिक यात्रा : संस्थान के उत्तर मध्यमा द्वितीय, शास्त्री तृतीय, आचार्य द्वितीय वर्ष, शिल्पकला, थंका चित्रकला तथा काष्ठकला कक्षा के 50 छात्रों का एक दल जनवरी 2016 में

36 दिनों के लिए शैक्षिक यात्रा (भारत दर्शन) के लिए भेजा गया। इस दल ने दिल्ली, कोलकाता, भुवनेश्वर, मैसूर, चेन्नई, पांड़िचेरी, बैंगलोरू, मुंबई, औरंगाबाद आदि का भ्रमण किया। शैक्षिक यात्रा का आयोजन संस्थान के खनपो कोनछोग शेडुब, प्राध्यापक और श्री छेरिङ छोलदन, प्राध्यापक के नेतृत्व में किया गया। उक्त यात्रा का उद्देश्य छात्रों को देश की ऐतिहासिक, औद्योगिक, धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर से परिचित कराना तथा उनमें राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न करना है।

कनिष्ठ कक्षा के विद्यार्थियों को स्थानीय शैक्षिक यात्रा (लदाख दर्शन) के अन्तर्गत नुबरा घाटी में 5 दिन के लिए संस्थान के तीन अध्यापकों के नेतृत्व में ले जाया गया था। उक्त यात्रा में पूर्वमध्यमा द्वितीय कक्षा के कुल 95 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने उस क्षेत्र के ऐतिहासिक स्थल, विहार, झील आदि का दर्शन किया। इस प्रकार संस्थान ने इन शैक्षिक यात्राओं के संचालन पर रु. 6.15 लाख रूपये व्यय किये।

उपरोक्त शैक्षिक यात्राओं के अतिरिक्त 20 अमची छात्रों के दल ने अमची प्राध्यापक के मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में अगस्त 2015 में 7 दिन के लिए करगील ज़िले के सापीय का भ्रमण किया। इस यात्रा का उद्देश्य अमची पद्धति से औषधि बनाने के लिए विभिन्न आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियों की पहचान कराना है। इसके लिए उन्होंने विविध प्रकार की जड़ी–बूटियों का संग्रह करके प्रदर्शन किया। उन जड़ी–बूटियों के नमूनों को अलबम में सुरक्षित रखा गया है। भ्रमण के दौरान कच्चे द्रव्यों को जमा करते हुए अनेक प्रकार की जड़ी बूटियों की पहचान की गयी। संस्थान के अमची विभाग ने इस वर्ष के दौरान प्रायोगिक कक्षा के द्वारा विभिन्न अमची औषधियाँ स्वयं बनायीं, जिनमें चूर्ण, गोली और अर्क सम्मिलित हैं। प्राप्त विवरण के अनुसार सत्र के दौरान उन औषधियों को रोगियों के लिए निःशुल्क मुहैया कराया गया।

11. प्रकाशन : संस्थान ने अब तक विभिन्न विषयों पर 85 दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन किया है जिनमें अखिल भारतीय परिसंवाद गोष्ठी का निबन्ध संकलन (लदाख–प्रभा) का प्रकाशन सम्मिलित है। वर्ष 2015–16 के दौरान संस्थान ने परम पूज्य तोकदन रिनपो द्वारा विरचित 'लदाख का इतिहास', 'जंस्कार की सांस्कृतिक विरासत', 'तिब्बती पर्याय का शब्दकोश', भोटी में 'धर्मपद' तथा श्री टशी रबग्यस द्वारा विरचित हिन्दी में 'लदाख का इतिहास' पांच ग्रन्थों का प्रकाशन किया।

12. शोध कार्य : संस्थान ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की पद्धति पर बौद्ध धर्म तथा चार भोट बौद्ध सम्प्रदायों पर शोध हेतु चार शोधवृत्तियों की व्यवस्था की है। अभी तक संस्थान के नौ शोध छात्रों को पी–एच॰ डी॰ (विद्यावारिधि) की उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है। 13 मार्च 2015 को आयोजित प्रबंधकारिणी के बैठक में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के समान शोधवृत्तियों की संख्या चार से आठ तक बढ़ाने के प्रस्ताव को मंजूरी दी।

13. परिसर : यह संस्थान लेह शहर के दक्षिण की ओर आठ किलोमीटर दूर चोगलमसर में सिंधु नदी के तट पर स्थित है। इसके दो परिसर हैं–नया और पुराना परिसर। पुराना परिसर 23 कनाल के क्षेत्र फल में स्थित है। इसमें कक्षा 6 से 8 तक के कुल 167 कनिष्ठ छात्रों के लिए कक्षाऐं चलायी जाती हैं। यह विद्यालय प्रशिक्षित स्नातक (टी.जी.टी.) तथा अन्य कर्मचारियों के सहयोग से एक प्रधान अध्यापक के प्रभार में चलाया जाता है। इसमें शैक्षिक विभाग, एक छोटा सभाभवन, कार्यालय तथा बच्चों के लिए पुस्तकालय हैं। पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र जैसी संस्थान की कुछ परियोजनाएँ पुराने परिसर में कार्यरत हैं।

नया परिसर पुराने परिसर से आधा किलोमीटर दूरी पर स्थित है। इस में संस्थान का पृथक् कक्षा–भवन, प्रशासनिक भवन, पुस्तकालय तथा तीन छात्रावास, हैं जिनमें सौ–सौ विद्यार्थियों के रहने की क्षमता है, जो भिक्षुओं, छात्रों तथा छात्राओं को रहने के लिए अलग–अलग दिये गये हैं। नये परिसर में 60 कर्मचारी आवास हैं और एक अतिथि भवन है, जिसमें 20 अतिथि रुक सकते हैं। इसी प्रकार नये परिसर में एक खेल–मैदान है, जो दर्शकों के बैठने की जगह, प्रसाधन कक्ष, भण्डार आदि सुविधाओं से युक्त है। संस्थान के विभिन्न कार्यक्रमों को चलाने के लिए 700 लोगों के बैठने की क्षमता वाला एक सभाभवन है। दार्शनिक वादविवाद भवन, विद्यार्थियों के मनोरंजन केन्द्र अपनी गतिविधियों को करने के लिए सुलभ है।

14. पुस्तकालय : संस्थान का महत्वपूर्ण अंग इसका पुस्तकालय है, छात्र एवं अध्यापक ही नहीं अपितु संस्थान के अन्य सदस्य भी सूचना एवं ज्ञान की प्राप्ति हेतु इस पर निर्भर रहते हैं। बड़ी संख्या में देशी एवं विदेशी पर्यटक भी इस पुस्तकालय में आते रहते हैं। संस्थान के पुस्तकालय को नये परिसर में स्थानान्तरित कर लिया गया है, जिसके लिए तीन मंज़िला पृथक् भवन बना है। पुस्तकालय को 'स्लिम थुमी सॉफ़्टवेअॅर' लगाकर 'कॅम्प्यूटाराइज' किया गया है। इस पुस्तकालय में तीन विभाग हैं– (1) सामान्य विभाग, (2) भोट अथवा सुंगबुम विभाग और (3) सन्दर्भ विभाग। इस पुस्तकालय में कुल 32,242 ग्रन्थ, भोटी, अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, पालि तथा उर्दू भाषाओं में धार्मिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक, काव्य एवं सामाजिक विषयों पर उपलब्ध हैं। पुस्तकालय में विश्वकोश, शब्दकोश तथा वार्षिक ग्रन्थों का संग्रह भी है। प्राप्त विवरण के अनुसार इस सत्र के दौरान संस्थान ने रू0 3.22 लाख की कुल 824 पुस्तकें क्रय की गयीं। पुस्तकालय 22 भारतीय एवं विदेशी शोध पत्रिका/समसामयिक पत्रिकाओं का ग्राहक बना। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार की भाषाओं में अन्य 20 प्रकार की पत्रिकायें क्रय की गईं हैं। विद्याथियों एवं पाठकों की रूचि को ध्यान में रखते हुए पुस्तकालय 08 प्रकार के समाचारपत्रों का भी क्रय करता है।

15. संग्रहालय : संस्थान ने एक छोटा पुरातात्विक संग्रहालय स्थापित किया है। विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों से प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों का संचय कर इस संग्रहालय में स्थापित किया गया है। इस संग्रहालय में लदाख की बौद्ध कलाकृतियों, चित्रों और छायाचित्रों के साथ–साथ

विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों के पुरातात्विक अवशेषों के नमूने संरक्षित किये गये हैं। लदाख में यह अपने ढंग का एक अनूठा संग्रहालय है, जो प्रति वर्ष यहाँ बड़ी संख्या में आने वाले देशी एवं विदेशी पर्यटकों और शोधकर्ताओं को आकर्षित करता है।

16. विशेष व्याख्यान/अन्य शैक्षिक क्रियाकलाप :

(क) स्व॰ ग्यल–स्रस बकुला रिनपोछे व्याख्यान माला :

स्व॰ कुशोक बकुला रिनपोछे लदाख के एक प्रकाण्ड विद्वान् एवं समाज–सुधारक थे। उन्होंने लदाख के विकास के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन इस प्रदेश की गरीब एवं ज़रुरतमंद जनता के कल्याण एवं निर्धनता के उन्मूलन में लगाया। जम्मू–कश्मीर सरकार के मन्त्रिमण्डल में उनका एक विशेष राजनीतिक पद होने के अतिरिक्त वे भारत की लोकसभा के सदस्य तथा मंगोलिया में भारत के राजदूत भी रहे। उनकी सामाजिक सेवा के आधार पर भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। उनके प्रयासों से ही सन् 1959 में इस प्रदेश की बहुमूल्य सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण एवं विकासार्थ इस केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान की स्थापना हुई, जो पहले बौद्ध दर्शन विद्यालय के रूप में जाना जाता था। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की प्रबन्ध समिति ने दिनांक 27–02–2004 की अपनी बैठक में उनकी स्मृति में एक विशेष व्याख्यान माला प्रारम्भ करने का निर्णय लिया। प्राप्त विवरण के अनुसार इस वर्ष दिनांक 1–12–15 से 3–12–2015 तक 11 व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। इसके लिए संस्थान ने प्रो. नवंग समतन, कुलपति, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ को आमंत्रित किया। उन्होंने अपना व्याख्यान एक विशेष विषय 'विश्वविद्यालयों में शिक्षा एवं प्रशासन प्रणाली' पर दिया। दूसरा व्याख्यान दिनांक 2–12–2015 को ''बौद्धधर्म और विज्ञान'' विषय पर दिया जिस में संस्थान के कर्मचारी और विद्यार्थियों ने भाग लिया। तीसरा व्याख्यान दिनांक 3–12–2015 को लेह के जोखङ विहार में ''लमचो नमसुम'' विषय पर दिया, जिस में संस्थान के कर्मचारी, विद्यार्थियों तथा बड़ी संख्या में सामान्य जनता ने भाग लिया।

(ख) संयुक्त कार्यक्रम : दिनांक 1–8–2015 को सामाजिक कार्यों में कार्यरत लदाख के बौद्धों तथा के. बौ. वि.सं. लेह ने संयुक्त रूप से एक दिन की ''विश्वव्यापी वैकल्पिक सभा'' का आयोजन किया। इस में संस्थान के विद्यार्थियों के अतिरिक्त लेह जिला के सरकारी विद्यालयों तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर जापान तथा डेनमार्क के विद्वानों ने उक्त विषय पर व्याख्यान दिया तथा एक पावर प्वाइंट प्रस्तुति का प्रदर्शन भी किया। व्याख्यान कार्यक्रम के बाद विद्यार्थियों की समूह परिचर्चा का भी आयोजन किया गया।

(ग) भोटी दिवस : संस्थान ने दिनांक 24–9–15 को भोटी दिवस मनाया। प्रथम सत्र के दौरान विद्वानों ने इस क्षेत्र में भोटी के प्रयोग तथा भोटी के शिक्षण की आवश्यकता और वर्तमान में भोटी की परिस्थिति पर भाषण दिया। द्वितीय सत्र में विविध विद्यालयों के विद्यर्थियों ने भोटी में कवितायें प्रस्तुत कीं। इस अवसर पर छात्रों ने एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम और भोटी में एक नाटक का प्रदर्शन किया। श्रेष्ठ कविता पाठ करने वाले छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

(घ) दवाईयों की सुविधा : संस्थान में एक अपना दवाखाना है, जहाँ से विद्यार्थी, अध्यापक एवं कर्मचारियों को दवाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। इसके लिए एक अस्थायी डॉक्टर की नियुक्ति की गयी है जो एक दिन के अन्तर पर यहाँ आते हैं। एक परिचारिका एवं एक सहपरिचारिका उक्त डॉक्टर की सहायता करती हैं। यह दवाखाना अध्यापक, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त लाभदायक है। सत्र के दौरान संस्थान ने रु 1.23 लाख के दवाईयाँ खरीदकर विभिन्न बीमारियों के इलाज के लिए विद्यार्थी एवं कर्मचारियों को दीं।

(ङ) वार्षिक क्रीड़ा–प्रतियोगिता : खेल गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए संस्थान ने गत वर्ष 24 सितम्बर से 1 अक्तूबर 2015 तक आठ दिवसीय वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता का आयोजन कराया, जिसके अंतर्गत अनेक प्रकार के खेल–कूदों की गतिविधियों का प्रबंध किया गया। क्रीड़ाप्रतियोगिता तीन सदनों, यथा– नालन्दा, विक्रमशिला एवं तक्षशिला में कराई जाती है। इस में संकाय सदस्य और विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और सफलतापूर्वक कार्यक्रम को समाप्त कराया। इन में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाले तथा विजेताओं को वार्षिकोत्सव के दौरान पुरस्कारों एवं प्रमाणपत्रों से सम्मानित किया गया।

(च) वार्षिक पत्रिका : संस्थान 'रिगपे दुद्चि़' नामक एक वार्षिक पत्रिका तथा 'लोमे गछ़ल' और 'ग्रीन ग्रोव' नामक दो मासिक समाचार–पत्रक क्रमशः भोटी और अंग्रेजी में प्रकाशित करता है जिनमें संस्थान के अध्यापक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी विभिन्न विषयों पर अपना लेख प्रस्तुत करते हैं। विगत वर्ष में संस्थान के अध्यापकों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न क्रिया–कलापों में प्राप्त किये गये चित्रों को इन में विशेष रूप से प्रकाशित किया। यह सम्पूर्ण रूप से एक सांस्थानिक पत्रिका है एवं इसमें पूर्ण रूप से संस्थान के स्वरूप तथा उद्देश्य को ही सम्मिलित किया जाता है।

17. पाठ्यक्रम : प्रारम्भ में संस्थान में एक दस वर्षीय पाठ्यक्रम प्रचलित था जिसके अन्तर्गत हिन्दी, संस्कृत, बौद्ध दर्शन एवं भोटी भाषा की पढ़ाई होती थी। सन् 1973 में संस्थान, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश से सम्बद्ध हुआ तथा संस्थान के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, सीमान्त प्रदेशीय छात्रों की आवश्यकतानुसार एक विशेष पाठ्यक्रम तैयार किया गया। पाठ्यक्रम पर समय–समय पर पुनर्विचार करने के लिए

विश्वविद्यालय ने एक अध्ययन समिति गठित की है। पाठ्यक्रम की समीक्षा तथा नये पाठ्यक्रम को लागू करने आदि के लिए समिति की बैठक वर्ष में एक बार होती है।

संस्थान के पाठ्यक्रम में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, भोट साहित्य एवं बौद्ध दर्शन अनिवार्य विषय हैं। राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, पालि, इतिहास, तुलनात्मक दर्शन, अमची/तिब्बती चिकित्साविद्या, काष्ठकला, शिल्पकला तथा चित्रकला वैकल्पिक विषय के रूप में हैं। विश्वविद्यालय द्वारा गठित अध्ययन समिति के अनुमोदन पर संस्थान के पाठ्यक्रम को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने स्वीकृत किया है।

सन् 1984 ई0 से जम्मू तथा कश्मीर विश्वविद्यालयों एवं राज्य विद्यालय शिक्षा समिति ने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रमाणपत्रों को पारस्परिक आदान–प्रदान के रूप में मान्यता प्रदान करते हुए निम्नलिखित परीक्षाओं से समकक्षता प्रदान की है–

1.	पूर्वमध्यमा	मैट्रिक (हाई स्कूल)
2.	उत्तर मध्यमा	उच्चतर माध्यमिक (भाग–2)
3.	शास्त्री अंग्रेजी के साथ	बी॰ए॰ (स्नातक)
4.	आचार्य	एम॰ए॰ (स्नातकोत्तर)

प्राप्त विवरण के अनुसार सत्र के दौरान संस्थान ने तिब्बत के महायान सम्प्रदाय शास्त्रों को अनिवार्य वैकल्पिक विषय के रूप में कक्षा शास्त्री और आचार्य के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया है। इस कार्य का विभाग के सदस्यों, विद्यार्थियों तथा लदाख के अन्य विद्वानों ने स्वागत किया है।

18. छात्रवृत्ति : संस्थान में अध्ययनरत छात्रों में से कुल 625 छात्रों पर 685.00 रूपये से 845.00 रूपये के बीच प्रतिमाह की दर से छात्रवृत्ति के रूप में वर्ष 2015–2016 के दौरान कुल 65.35 लाख रूपये खर्च किये गये।

इस के अतिरिक्त रु.77.48 लाख लदाख क्षेत्र, हिमाचल प्रदेश के लाहुल व स्पीति घाटी और जम्मू और कश्मीर के अन्य भागों में स्थित 50 गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान किये गये।

19. विद्यार्थियों को पाठ्य पुस्तक एवं कापियों का निःशुल्क वितरण : संस्थान में तथा इस के फीडर गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थी लदाख के सबसे पिछड़े और दूरदराज क्षेत्रों से हैं और वे जनजाजि अनुसूची के हैं। तदनुसार, संस्थान ने ट्रिब्यूनल उप–योजना के अन्तर्गत, संस्थान के सभी विद्यार्थियों के लिए पाठ्य पुस्तक एवं उत्तरपुस्तिकाओं का निःशुल्क वितरण करने की व्यवस्था की है। प्राप्त विवरण के अनुसार इस वर्ष के दौरान संस्थान ने 14.30

लाख रुपये की पाठ्यपुस्तकें एवं उत्तरपुस्तिकायें खरीदीं और केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान तथा इस क्षेत्र के विभिन्न भागों में स्थित शाखा विद्यालयों एवं फीडर गोनपा/श्रामणेरिका विद्यालयों के विद्यार्थियों में निःशुल्क वितरित कीं।

20. परीक्षा परिणाम : संस्थान की कक्षा छठी से आठवीं तक की परीक्षाएँ संस्थान द्वारा आयोजित की गईं जबकि पूर्वमध्यमा से आचार्य तक की परीक्षाएँ सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा संचालित की गईं। सम्पूर्ण परीक्षा परिणाम 83.33% प्रतिशत रहा। वर्ष 2015–16 सत्र के अन्तर्गत प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण पृष्ठ संख्या –– पर परिशिष्ट के रूप में है।

कनिष्ठ छात्रों के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिए प्रति वर्ष मई, अगस्त और नवम्बर में क्रमशः त्रैमासिक, अर्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षाएँ आयोजित करने के लिए संस्थान द्वारा आवश्यक प्रबंध किये गये हैं।

21. गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय : अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु यह संस्थान विभिन्न गोनपाओं में 50 गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय चला रहा है जो इस प्रदेश में अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। ये विद्यालय सम्बन्धित गोनपाओं के सहयोग से चलाये जा रहे हैं। तदनुसार उक्त गोनपा कक्षाओं एवं छात्रावास की सुविधाओं के साथ–साथ धार्मिक क्रियकलापों की शिक्षा प्रदान करते हैं। संस्थान की ओर से प्रवेश प्राप्त छात्रों की संख्या के आधार पर विद्यार्थियों के लिए एक से तीन शिक्षकों की व्यवस्था की जाती है। इसके अतिरिक्त साज–सामान, लेखन–सामग्री, पाठ्यपुस्तक एवं कापी और प्रत्येक विद्यार्थी के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था की जाती है। संस्थान द्वारा नियुक्त शिक्षक विद्यार्थियों को गोनपा–विषयक शिक्षा के साथ–साथ अन्य आधुनिक विषयों, जैसे – भोटी भाषा, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि की शिक्षा प्रदान करते हैं। प्राप्त विवरण के अनुसार विगत वर्ष लदाख के विभिन्न गोनपाओं में स्थापित 50 गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों में कुल 903 विद्यार्थी अध्ययनरत थे। वर्ष 2015–16 के विद्यार्थियों के नामांकन का विवरण विद्यालयवत् एवं कक्षावार पृष्ठ संख्या –– पर परिशिष्ट के रूप में है।

22. वार्षिकोत्सवः संस्थान के 56 वें वार्षिकोत्सव का आयोजन 23 अक्टूबर 2015 को संस्थान के सभागार में पूरे उत्साह के साथ मनाया गया। इस उत्सव में संस्थान की परीक्षाओं में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने वाले तथा संस्थान की विभिन्न प्रतियोगिताओं, यथा – निबंध प्रतियोगिता, कविता–आवृति प्रतियोगिता, व्याख्यान प्रतियोगिता, खेलकूद गतिविधि, सांस्कृतिक गतिविधि, प्रश्नमंच इत्यादि में भाग लेने वाले विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। हिमालय क्षेत्र के महान विद्वान श्री टशी रबग्यस जी उक्त समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे, उन्होंने प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किये। इस अवसर पर संस्थान के विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रदर्शन किया। संस्थान के अध्यापकों, कर्मचारियों

एवं विद्यार्थियों के अतिरिक्त लदाख के अनेक विद्वान एवं अतिथि भी उक्त समारोह में उपस्थित थे। यह समारोह राष्ट्रगान के साथ सम्पन्न हुआ।

23. अन्य महत्वपूर्ण घटनायें :

प्राप्त विवरण के अनुसार विगत वर्ष संस्थान में निम्नलिखित उत्सव एवं क्रियाकलापों का बड़े उत्साह के साथ आयोजन किया गया:

(क) भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म–दिवस :

दिनांक 14 अप्रैल 2015 को डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 124 वीं जयन्ती मनाई गई। अनेक विद्वानों एवं विद्यार्थियों ने इस समारोह में भाग लिया और उनकी जीवनी एवं उपलब्धि पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विद्यार्थियों के बीच निबंध और भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रो. कोनछोग वंगदुस, निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्यालय संस्थान इस समारोह में सभापति के रूप में उपस्थित थे।

(ख) डॉ. राधाकृष्णन की जयन्ती, अध्यापक दिवस : संस्थान ने दिनांक 5 सितम्बर 2015 को भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन की जयन्ती अध्यापक दिवस के रूप में मनाई। इस अवसर पर अध्यापकों तथा विद्यार्थियों ने डॉ. राधाकृष्णन के जीवन और उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। अध्यापकों ने विद्यार्थियों द्वारा डॉ. राधाकृष्णन की सिद्धान्तों एवं विचारों का अनुसरण करने तथा अपने जीवन में कार्यान्वित करने के लिए बल दिया।

(ग) हिन्दी दिवस : संस्थान ने दिनांक 14 सितम्बर, 2015 को हिन्दी दिवस मनाया, जिस में हिन्दी में विभिन्न प्रकार की साहित्यिक प्रतियोगितायों का संचालन किया गया, जैसे निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता तथा व्याख्यान प्रतियोगिता आदि। इस में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इस के अतिरिक्त विद्वानों ने हिन्दी भाषा के महत्त्व पर व्याख्यान दिया।

(घ) बुम (भगवान बुद्ध के प्रवचन) का पाठ : संस्थान ने दिनांक 10 से 04 जुलाई 2015 को विश्व के सभी प्राणियों की शान्ति एवं उन्नति के लिए भुम (भगवान बुद्ध के प्रवचन) पाठ आयोजन किया जिसमें संस्थान के सभी कर्मचारी और विद्यार्थी सम्मिलित हुए और जिसका प्रबन्ध संस्थान के सभी कर्मचारी और विद्यार्थियों से चन्दा लेकर किया गया।

(च) नेपाल तथा उत्तरी भारत के कुछ भागों में आये भूकंप आपदा के पीड़ितों के लिए आधे दिन के अनुष्ठान का प्रबन्ध किया गया। इस में सभी कर्मचारी और विद्यार्थी शामिल हुए। इस में

उपस्थित सभी लोगों ने उक्त आपदा में मरे हुए लोगों की आत्मा की शान्ति के लिए तथा इससे प्रभावित लोगों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना की।

(छ) लदाख के बौद्ध मठों द्वारा मन्त्र पाठ,एक सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर : यूनेस्को (UNESCO) ने सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर की सूची स्थापित की है। इस का उद्देश्य महत्त्वपूर्ण विश्वव्यापी सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर का उत्तम संरक्षण तथा उनके महत्व की जागरूकता को सुनिश्चित करना है। सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर की सूची के कार्यक्रम का प्रारंम्भ सूक्ष्म धरोहर सुरक्षा के महत्व की ओर ध्यान अंकित करने के लक्ष्य के साथ हुआ जिन को युनेस्को (UNESCO) द्वारा सारभूत अंग एवं सांस्कृतिक भिन्नता का एक पात्र और रचनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में चिह्नित किया गया है। इस सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर को जीवित धरोहर भी कहा जाता है, अर्थात् व्यावहारिक रूप के प्रतीक, अभिव्यक्ति, ज्ञान, एक व्यक्ति का कौशल तथा उपकरण, वस्तुएं, शिल्पतथ्य और सांस्कृतिक अन्तरिक्ष इन के साथ सम्बद्ध है जिन को सम्पूर्ण समाज/समुदाय/व्यक्ति उनकी अपनी सांस्कृतिक धरोहर के भाग के रूप में मान्यता देते हैं। इस प्रकार आई.सी.एच. निम्न किसी भी क्षेत्र में भी प्रकट किया जा सकता है–मौखिक परम्परा तथा भाषा की अभिव्यक्ति, पालन करने वाली कला। सामाजिक प्रथा, कर्मकाण्ड एवं त्यौहार, प्रकृति एवं सम्पूर्ण विश्व तथा पारम्परिक शिल्प–कौशल सुरक्षित रखने का ज्ञान और अनुष्ठान। तदनुसार सांस्कृतिक मंत्रालय, भारत सरकार ने लदाख के बौद्ध मठों द्वारा मन्त्र पाठ को यूनेस्को (UNESCO) की प्रतिनिधि सूक्ष्म सांस्कृतिक धरोहर की सूची (द्वितीय दायरा) में उल्लिखित करने के लिए नामांकन फाइल तैयार करने का काम संस्थान को सौंपा है। संस्थान ने नामांकन फाइल 60 मिनट अवधि के प्रालेख पोषण श्रव्यदृष्टि तथा अँग्रेजी में 10 मिनट अवधि वाले छोटे रूपान्तर को आंगुलिक चलचित्र (डिजिटॅल् विड्यू) रूप में तैयार किया है और उसे मॉडल अे'जॅन्सि अइ.जी. एन.सी.ए. के माध्यम से युनेस्को (UNESCO) के सामने प्रस्तुत किया है। युनेस्को (UNESCO) ने लदाख के बौद्ध मठों द्वारा मन्त्र पाठ को चुना। लदाख के बौद्ध मठों द्वारा किये गये मन्त्र पाठ में निम्नगोनपाओं का मन्त्र पाठ समाविष्ट है:

क्रमिक संख्या	गोनपा का नाम	आलाप की विषयवस्तु
1.	हेमिस गोनपा	रिगमा चुटुग
2.	ठिगसे गोनपा	शरकंगरिमा
3.	स्पितुग गोनपा	नस्–तन्
4.	फ्यांग गोनपा	चोत्
5.	माठो गोनपा	कुनरिग

(च) स्वच्छ भारत अभियान : भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी की पहल पर भारत सरकार ने सम्पूर्ण देश को साफ सुथरा रखने के विचार से स्वच्छ भारत अभियान का शुभारंभ किया। तदानुसार केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह ने इस शुभारंभ को ध्यान में रखते हुए संस्थान के

सभी कर्मचारी तथा विद्यार्थियों को सम्मिलित कर संस्थान के कार्यालय, कक्षा, परिसर और आसपास के क्षेत्रों की सफाई निम्न अवसरों पर कराया।

i) विश्व पर्यावरण दिवस दिनांक 5 जून, 2015
ii) महात्मा गांधी जयंती दिनांक 2 अक्तूबर, 2005

इस के अतिरिक्त संस्थान द्वारा निर्मित पंचांग के अनुसार संस्थान प्रतिमास सफाई का काम कराता है। इस के अतिरिक्त सप्ताह में संकाय सदस्य स्वच्छ भारत अभियान के महत्व पर भाषण देते हैं और इस वर्ष प्राप्त विवरण के अनुसार छात्रों में उक्त विषय पर निबंध प्रतियोगिता, कविता पाठ प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, चित्रकारी प्रतियोगिता आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया।

24.यू.जी.सी विशेषज्ञ दल का निरीक्षण : दिनांक 25 से 26 जून, 2015 तक प्रो. आर.एल. गोदरा, कुलपति, उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय के नेतृत्व में यू.जी.सी विशेषज्ञ के एक दल ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह को समवत विश्वविद्यालय के दर्जा देने के सम्बन्ध में संस्थान का प्रत्यक्ष निरीक्षण किया। इस दल के अन्य सदस्य इस प्रकार हैं– प्रो. विमलेन्द्र सिंह, बी.एच.यू., प्रो. आर. एन. सिंह, जम्मू विश्वविद्यालय, डॉ. पेरोसुरामन, निदेशक, टाटा ईन्सटीचुट ऑफ सोशल सइन्स, प्रो. भिक्षु सत्यपाल, दिल्ली विश्वविद्यालय और ए.के.खण्डूरी, उप सचिव, यू.जी.सी.। संस्थान के शैक्षिक एवं भौतिक आधारभूत संरचना का सम्पूर्णरूप से निरीक्षण करने के बाद तथा संस्थान के कर्मचारियों, विद्यार्थियों तथा भूतपूर्व छात्रों के साथ परस्पर बातचीत करने के बाद इस दल ने संस्थान के सभी गतिविधियों, कार्यों, भौतिक एवं शैक्षिक आधारभूत संरचनाओं पर सन्तोष प्रकट किया। तदनुसार केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह को समवत विश्वविद्यालय के दर्जा देने का सिफारिश किया। यू.जी.सी विशेषज्ञ दल के सिफारिश पर भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने अपनी अधिसूचना संख्या 9–5/2001–यू3(ए) दिनांक 15–01–2016 तहत केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह को समवत विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया।

25. बौद्ध दार्शनिक शास्त्र–अनुवाद परियोजना : भोटी भाषा में हजारों की संख्या में अनेक ऐसे बौद्ध दार्शनिक ग्रन्थ हैं जिन में भगवान बुद्ध के उपदेश सम्मिलित हैं और भारतीय तथा तिब्बती पण्डितों द्वारा विरचित अनेक ग्रन्थ भोटी भाषा में उपलब्ध हैं। गैरभोटी भाषी विद्वान तथा शोध कर्ता इन बहुमूल्य ग्रन्थों से लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। अतः संस्थान ने विद्वानों, शोध कर्ताओं और अन्य रूचि रखने वालों के लाभ के लिए संस्थान की प्रबंधकारिणी के स्वीकृति से बौद्ध दार्शनिक ग्रन्थों को हिन्दी में अनुवाद करने के लिए एक छोटी सी अनुवाद परियोजना का आरंभ किया है।

26. हिमालयी बौद्ध–संस्कृति–विश्व–कोश के संकलन का आरम्भ : संस्थान की प्रबन्ध–समिति ने प्रो॰ रमेश चन्द्र तिवारी की देख–रेख में हिमालयी बौद्ध–संस्कृति–विश्व कोश की रचना की परियोजना का अनुमोदन किया है। परियोजना का कार्य पाँच वर्ष का है एवं 10 भागों में विश्वकोश तैयार करने की योजना है। विद्वानों को अनुबन्ध के आधार पर नियुक्त कर इस परियोजना का कार्यारम्भ हो चुका है। उक्त योजना मुख्य सम्पादक के निरीक्षण में दो सम्पादक एवं तीन शोध–सहायकों के सहयोग से प्रगति पर है। प्राप्त विवरण के अनुसार इस सत्र के दौरान संस्थान ने इस विश्व कोश के दो खण्ड़ों को प्रकाशित किया है, जो लदाख क्षेत्र से सम्बन्धित हैं। अन्य खण्डों का काम प्रगति पर है। दिनांक 19–12– 2011 को हुई केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की प्रबंधकारिणी की बैठक में इस परियोजना के महत्व को ध्यान में रखते हुए इसकी अवधि अगले पाँच साल के लिए बढ़ा दी गई है।

27. राष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव : भारत सरकार संस्कृति मंत्रालय ने विविध राज्यों के सांस्कृतिक संगठनों के अतिरिक्त संस्कृति मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित और इस के अधीन काम करने वाले विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों को कार्य में लगा कर दिनांक 3 नवम्बर 2015 से 6 नवम्बर 2015 तक इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में राष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव का आयोजन किया। उक्त महोत्सव में भाग लेने के लिए संस्थान ने कला और शिल्प के विशेषज्ञों का एक दल प्रतिनियुक्त किया। इस अवसर पर संस्थान के शिल्प शिक्षक ने थंका चित्र कला का प्रदर्शन किया। इस के अतिरिक्त संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की एक दुकान भी लगायी।

28. कुशीनगर में बौद्ध महोत्सव : भारत सरकार संस्कृति मंत्रालय के निर्देशानुसार संस्थान के कलाकारों के एक दल ने केन्द्रीय तिब्बती विश्व विद्यालय, सारनाथ, वाराणसी द्वारा दिनांक 24–11–2015 से 26–11–2015 तक आयोजित बौद्ध महोत्सव में भाग लिया। इस में थंका, थंका बनाने का प्रदर्शन, थंका बेचने का प्रदर्शन और हिमालय क्षेत्र की संस्कृति का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर संस्थान द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के प्रचार एवं विक्रय के लिए पुस्तकों की एक दुकान भी लगायी।

29. बेंगलुरू में बौद्ध महोत्सव : संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देश पर संस्थान ने दिनांक 1–12–2015 से 4–12–2015 तक बेंगलुरू में आयोजित बौद्ध महोत्सव में भाग लिया। इस अवसर पर संस्थान के अंगभूतों का प्रदर्शन और विक्रय किया, जिस में थंका चित्रकारी भी

शामिल है। इस के अतिरिक्त संस्थान ने सेरा गोनपा के विशेषज्ञों के छमस नृत्य का भी प्रबन्ध किया। यह कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा।

30. पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र :

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह को पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र के रूप में लदाख क्षेत्र के लिए ''पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र'' पद प्रदान किया है। तदनुसार संस्थान ने अनुबन्ध के आधार पर विद्वानों की नियुक्ति कर उन्हें काम सौंपा है। वर्तमान में सात कुशाग्रबुद्धि कर्मचारी इस योजना पर मार्च से नवम्बर तक काम कर रहे हैं। उक्त योजना के प्रलेख पोषण का काम कठोर ठण्ड के मौसम के कारण दिसम्बर से फरवरी तक तीन महीने के लिए बन्द रहता है। संस्थान ने लदाख क्षेत्र के 2130 मठों, महलों एवं व्यक्तियों से लगभग 30,807 पाण्डुलिपियों का संग्रह किया है तथा प्रयास है कि इस क्षेत्र में उपलब्ध सभी पाण्डुलिपियों का संग्रह किया जा सके। इसके अतिरिक्त संस्थान लदाख क्षेत्र के विभिन्न विहारों में उपलब्ध दुर्लभ पाण्डुलिपियों का संरक्षण भी करता है। अब तक 22,526 पन्नों का संरक्षण किया जा चुका है।

31.उपाधि /उपाधि–पत्र प्राप्त करने के बाद छात्रों की नियुक्ति : संस्थान पी–एच. डी. (विद्यावारिध) उपाधि, भोट बौद्धदर्शन, संस्कृत बौद्ध दर्शन, बौद्ध पुराणेतिहास इतिहास, भोट साहित्य तथा तुलनात्मक दर्शन विषयों में आचार्य (एम.ए. से समकक्षता), शास्त्री (बी.ए. से समकक्षता), उत्तर मध्यमा (+2 से समकक्षता) और पूर्वमध्यमा (मैट्रिक से समकक्षता) की उपाधि प्रदान करता है। इस के अतिरिक्त भोट चिकित्सा, थंका/चित्रकला,मूर्ति–कला और काष्ठकला में भी छः वर्ष की उपाधि दी जाती है। यह अवलोकन किया गया है कि जिन विद्यार्थियों ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से ऊपर बताये गये पाठ्यक्रमों में उपाधि प्राप्त की है वे बेरोजगार नहीं है। जिन विद्यार्थियों ने इस संस्थान से उपाधि प्राप्त की है वे विशेषकर शिक्षा विभाग, जम्मूकश्मीर, केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय, और निजी स्कूलों में आसानी से नियुक्त हो जाते हैं। जिन उम्मीदवारों के पास ऊपर की उपाधियाँ हों उन्हें आकाशवाणी और दूरदर्शन विभागों में नियुक्त होने का अच्छा अवसर है क्योंकि इन विभागों में उन उम्मीदवारों को वरीयता दी जाती है जिन को स्थानीय भाषा का अच्छा ज्ञान हो। संस्थान गर्व महसूस करता है कि केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान का एक पूर्व छात्र कश्मीर प्रशासनिक सेवा और संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से भर्ती होकर राज्य सरकार तथा केन्द्र सरकार के कार्यालयों में अच्छे स्थानों पर विराजमान है। जम्मू एवं कश्मीर उच्च न्यायालय में प्रथम लदाखी आदरणीय श्री टशी रबस्तन की न्यायाधीश के रूप में नियुक्त हुई है, उन्होंने उत्तर मध्यमा तक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह में अध्ययन किया है।

इस के अतिरिक्त संस्थान के पूर्व छात्र पूरे भारत में सेना और अर्ध सैनिक बलों में देश के लिए सेवा कर रहे हैं। संस्थान के कुछ पूर्व छात्र विश्व भारती विश्वविद्यालय, शान्ति

निकेतन कलकत्ता, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली आदि प्रख्यात विश्वविद्यालयों में काम कर रहे हैं। जम्मू और कश्मीर के पुलिस विभाग में अनेक ऐसे अधिकारी हैं जिन्होंने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से उपाधि प्राप्त की हैं। के.बो.वि.सं. , लेह की शाखा और फीडर स्कूल केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के पूर्व छात्रों को नियुक्त कर चलाये जारहे हैं, जो इस क्षेत्र की संस्कृति और विरासत के संरक्षण तथा पदोन्नति के लिए उपयोगी है।

भोट चिकित्सा में उपाधि प्राप्त विद्यार्थी केन्द्र प्रायोजित योजना 'राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन' के अधीन राज्य के स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत हैं, जो पूरे क्षेत्र में ग्रामीण मरीजों को देखता है।

थंका/चित्रकला,मूर्ति–कला और काष्ठकला में उपाधि प्राप्त विद्यार्थी स्थानीय लोग तथा लदाख में आये पर्यटकों से थंका, मूर्ति और लकड़ी पर नक्काशी का काम करके अच्छी खासी धनराशि कमा रहे हैं। इस के अतिरिक्त जिन उम्मीदवारों ने ऊपर बतायी गई उपाधियाँ प्राप्त की हों वे उन संस्थाओं में प्रशिक्षिक के रूप में नियुक्त होते हैं, जहाँ पर समान पाठ्यक्रम हों।

इस प्रकार हजारों विद्यार्थियों ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से उपाधियाँ प्राप्त की है और उन में से कोई भी बेरोजगार नहीं है। यह केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की एक महान् उपलब्धि है।

32. डुजिंग फोटंग विद्यालय, जंस्कार :

(क) संक्षिप्त इतिहास–जंस्कार बौद्ध संघ के निमन्त्रण पर सन् 1980 में पहली बार परम पावन दलाई लामा जी जंस्कार पधारे थे। उन्होंने इस क्षेत्र की संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता का अनुभव करते हुए एक विद्यालय की स्थापना के लिए जंस्कार बौद्ध संघ को कुछ धनराशि भेंट की। जंस्कार बौद्ध संघ ने इस क्षेत्र के निर्धन एवं जरूरतमंद छात्रों के कल्याण के लिए सितम्बर वर्ष 1984 में डुजिंग फोटंग में एक विद्यालय की स्थापना की। यहाँ प्रारंभ में कुल 101 छात्रों को प्रवेश दिया गया तथा तीन अध्यापकों को नियुक्त किया गया। दूर–दराज के क्षेत्रों के छात्रों के लिए एक छात्रावास का प्रबंध भी किया गया। जंस्कार के बौद्ध निवासियों ने भी इस विद्यालय के कोष के लिए धन जुटाया। परम पूज्य दलाई लामा जी ने वर्ष 1988 में दूसरी बार जंस्कार पधारने पर विद्यालय के विकास के लिए पुनः धनराशि भेंट की। जंस्कार बौद्ध संघ और क्षेत्र की जनता ने तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी को इस विद्यालय के महत्व के बारे में अवगत कराया तथा उनसे निवेदन किया कि केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की तरह इस विद्यालय का प्रबंधन भारत सरकार अपने अधीन कर ले। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी ने मार्च/अप्रैल 1988 में अपनी जंस्कार यात्रा के दौरान वहाँ के नागरिकों की भावनाओं का समादर करते हुए "डुजिंग फोटंग विद्यालय" को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह से सम्बद्ध करने की घोषणा की थी। तदनुसार भारत सरकार ने नवम्बर, 1989 से इस विद्यालय को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की शाखा के रूप में मान्यता प्रदान कर दी।

तब से यह विद्यालय केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के वित्तीय एवं प्रशासनिक नियन्त्रण में चलाया जा रहा है। वर्तमान में इस विद्यालय में प्रथम कक्षा से दसवीं कक्षा तक कुल 295 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। डुजिंग फोटंग विद्यालय के परिसार में शैक्षिक विभाग, एक छोटा सा पुस्तकालय, एक छोटा बहुउपयोगी सभा भवन, 100 छात्रों के रहने के लिए छात्रावास, कर्मचारी आवास और एक खेल का मैदान है। जो विद्यार्थी छात्रावास में नहीं रहते हैं, उनको उठाने के लिए एक स्कूल बस भी है। जंस्कार घाटी एक अलग क्षेत्र है और सर्दियों में लगभग 6 से 7 महीने के लिए लेह और कारगिल से कटा रहता है।

(ख) परीक्षा का परिणाम (डी.पी.एस.,जंस्कार) : डुजिंग फोटंग विद्यालय, जंस्कार के कक्षा पहली से आठवी तक के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षायें प्रधानाध्यापक के निरीक्षण में संस्थान द्वारा अयोजित की गईं। कक्षा नवीं तथा दसवीं के विद्यार्थियों की वार्षिक परीक्षायें के.बौ.वि.सं. लेह, के माध्यम से सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा संचालित की गईं। वहाँ के विद्याथियों को परीक्षा के लिए लेह आना पड़ता था और अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। अतः इन बातों को ध्यान में रखकर वहाँ एक परीक्षा केन्द्र स्थापित किया गया। वर्ष 2015–2016 सत्र के अर्न्तगत विद्यार्थियों के नामांकन और प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण पृष्ठ संख्या ––– पर परिशिष्ट के रूप में है।

(ग) अन्य क्रिया–कलाप (डी.पी.एस.,जंस्कार) : यह स्कूल विविध शैक्षिक क्रिया–कलापों का आयोजन कर रहा है, जैसे – वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता, साहित्यिक प्रतियोगिता, ऐतिहासिक स्थलों/विहारों का दर्शन, राष्ट्रीय स्तर के महापुरुषों का जन्म दिवस मनाना, मासिक व्याख्यान प्रतियोगिता आदि। इसके अतिरिक्त इस स्कूल में एक छोटा सा ग्रन्थालय है जहाँ विद्यार्थियों के लिए ग्रन्थों का एक अच्छा संग्रह उपलब्ध है।

(घ) कर्मचारी संख्या–प्राप्त विवरण अनुसार डुजिंग फोटंग विद्यालय के कर्मचारियों की संख्या पृष्ठ संख्या ––– पर परिशिष्ट के रूप में है।

33. बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग, जिला लाहुल व स्पीति (हि.प्र.)

(क) संक्षिप्त इतिहास : हिमालय क्षेत्र क्रमशः लाहुल, स्पीति, किन्नौर, पंगी, कुल्लू और मनाली की बहुमूल्य बौद्ध कला, भाषा और संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलंग, लाहुल–स्पीती (हि.प्र.) की स्थापना सन् 1976 में हुई। सन् 1959 से पूर्व इस क्षेत्र के विद्वान, श्रामणेर एवं भिक्षु उच्च बौद्ध शिक्षा के लिए तिब्बत जाते थे। परन्तु 1959 की ऐतिहासिक घटना के परिणामस्वरूप अचानक इस परम्परा में व्यवधान पैदा हुआ। अतः नवशिष्यों को पारम्परिक बौद्ध शिक्षा देने के लिए बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग अस्तित्व में आया। आरम्भ में यह विद्यालय यहाँ के निवासियों से धन जुटाकर चलाया जाता था। तत्पश्चात् भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने बौद्ध/तिब्बती संस्था विकास के वित्त सहयोग

योजना के अर्न्तगत कुछ वित्तीय सहयोग दिया। इस क्षेत्र के लोगों ने इस विद्यालय को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह और केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी की प्रणाली के अनुसार भारत सरकार की एक स्वायत्त संस्था के रूप में प्रभार लेने के अथक प्रयास किये। परन्तु यह भारत सरकार के संस्कृति मन्त्रालय की एक स्वायत्त संस्था के रूप में प्रभार नहीं ले सका।

तथापि वर्तमान में, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की प्रबन्धकारिणी की संस्तुति के आधार पर इस विद्यालय को डुज़िंग फोटंग विद्यालय (डी.पी. एस.) जंस्कार के समान केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के शाखा विद्यालय के रूप में अपने अधीन लेने का निर्णय लिया है। तदनुसार संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार के पत्र सं0 एफ. /1–11/2004–बी.टी.आई. दिनांक 05–03–2010 के अनुसार बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग (हि.प्र.) को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह ने अपनी शाखा के रूप में ले लिया है। तब से इस विद्यालय के प्रशासन को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा पूर्ण वित्तीय सहयोग से चलाया जारहा है।

वर्तमान में, इस विद्यालय में, कक्षा प्रथम से दसवीं कक्षा तक 75 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह द्वारा अपने शाखा विद्यालय के रूप में लेने के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की संख्या में वृद्धि होने की सम्भावना है। यह विद्यालय सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से सम्बद्ध है और विद्यार्थियों की परीक्षा का आयोजन उक्त विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता है। इस विद्यालय में एक प्रधानाध्यापक, छः प्रशिक्षित स्नातक, एक भोटी अध्यापक, एक बौद्ध दर्शन का अध्यापक, एक कार्यालय सहायक और तीन चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी कार्यरत है।

कक्षाओं को चलाने के लिए विद्यालय के अपने भवन हैं और दुर्गम क्षेत्र से आये विद्यार्थियों के लिए एक छात्रावास भी है।डुज़िंग फोटंग विद्यालय, जंस्कार के समान इस विद्यालय के कर्मचारियों का वेतन, छात्रों की छात्रवृत्ति, साज–सामान और दिन–प्रति दिन का व्यय केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान,लेह द्वारा दिया जाता है। बाद में प्रबंधकारिणी ने इस विद्यालय को मण्डोगलु, मन्डी. हि.प्र. में स्थानांतरण किया गया जिस के लिए डीगुङ कग्युद संघ ने निःशुल्क शिक्षाभवन तथा छात्रावास प्रदान किया है।

(ख) परीक्षा का परिणाम (बी.डी.एस.वी., केलांग)

इस विद्यालय की छठी कक्षा से आठवीं कक्षा तक की वार्षिक परीक्षायें प्रधानाध्यापक के निरीक्षण में संस्थान द्वारा अयोजित की जाती हैं। कक्षा नवीं एवं दसवीं कीं वार्षिक परीक्षा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा अयोजित की जाती है, जिससे की यह विद्यालय सम्बद्ध है। वर्ष 2015–2016 सत्र के अर्न्तगत विद्यार्थियों के नामांकन और प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण पृष्ठ संख्या –– पर परिशिष्ट के रूप में है।

(ग) कर्मचारी संख्या :

बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग जिला लाहुल व स्पीति (हि.प्र.) के कर्मचारी संख्या पृष्ठ संख्या –– पर परिशिष्ट के रूप में है।

****

परिशिष्ट I

I) के.बौ.वि.सं. लेह के प्रबन्धक समिति की संरचनाः

क्र.सं.	नाम और पता	पद
1.	श्रीमती अरविन्द मंजीत सिंह संयुक्त सचिव, संस्कृति विभाग, भारत सरकार नई दिल्ली	अध्यक्ष
2.	श्री स्वगत विश्वास जिला उपायुक्त, लेह	उपाध्यक्ष
3.	प्रो. रमेश कुमार द्विवेदी	

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
के कुलपति द्वारा मनोनीत प्रतिनिधि
जिससे संस्थान सम्बद्ध है — सदस्य

4. श्रीमती महालक्ष्मी रामकृष्ण
निदेशक (वित्त)
संस्कृति विभाग, भारत सरकार
नई दिल्ली — सदस्य

5. भारत सरकार के विदेशमंत्रालय के प्रतिनिधि — सदस्य (भूतपूर्व अधिकारी)

6. निदेशक/उपसचिव
भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय
(संस्थान के मामले से सम्बन्धित लेनदेन) — सदस्य (भूतपूर्व अधिकारी)

7. मुख्य शिक्षा पदाधिकारी, लेह
जम्मू–कश्मीर सरकार के शिक्षा विभाग के प्रतिनिधि — सदस्य (भूतपूर्व अधिकारी)

8. गेशे लोबज़ङ समतेन,
अध्यक्ष, लदाख गोनपा संघ,लेह
(लदाख गोनपा संघ के प्रतिनिधि) — सदस्य

9. श्री छेवंग ठिनले, अध्यक्ष, लदाख बौद्ध संघ, लेह
(लदाख बौद्ध संघ के प्रतिनिधि) — सदस्य

10–12 भारत सरकार द्वारा मनोनीत तीन बौद्ध विद्वान

(क) प्रो. नवांग समतेन, भूतपूर्व कुलपति,
केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी — सदस्य

(ख) डॉ. रवीन्द्र पन्त,
निदेशक, नव नलन्दा महाविहार, नलन्दा — सदस्य

(ग) भिक्षु विमलतिस,
गाँव चोंगखम, पी.ओ.चोंगखम
जिला लोहित, अरूणाचल प्रदेश — सदस्य

13. भारत सरकार द्वारा मनोनीत कर्मचारी प्रतिनिधि सदस्य

14. प्रो. कोनछोग वंगदु,
निदेशक
केन्द्र बौद्ध विद्या संस्थान, लेह सदस्य सचिव

परिशिष्ट II

II) शिक्षा समिति की संरचना :

क्र.सं. नाम और पता
पद

1. प्रो. येशे थबखस,
केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ
अध्यक्ष

2–5 लदाख में स्थित चार महायान सम्प्रदायों के प्रतिनिधि
सदस्य
(1) प्रो॰ जमयङ ग्यलछ़न
(2) डॉ. उर्ज्ञन डादुल

(3) खनछेन छेवंग रिगज़ीन
(4) प्रो. कोनछोक वंगदु

6. प्रो0 सत्यपाल,
अध्यक्ष, बौद्ध अध्ययन विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
सदस्य

7. प्रो. आर.के.द्विवेदी,
अध्यक्ष बौद्ध दर्शन विभाग,
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी
सदस्य

8. प्रो. बी॰ एन॰ लाभ
अध्यक्ष, बौद्ध अध्ययन विभाग,
जम्मु विश्वविद्यालय,
सदस्य

9. प्रो॰ सोनम ग्याछ़ो,
केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ
सदस्य

10. डॉ. टशी पलजोर (भूतपूर्व प्राचार्य)
मैत्री निवास, भजोगी
मनाली, जिलाकुल्लू (हि.प्र.)
सदस्य

11. डॉ॰ , प्रो. कोनछोग वंगदु, निदेशक,
केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह
सदस्य–सचिव

परिशिष्ट III

III) **वित्त समिति की संरचना :**

क्र.सं.	नाम और पता पद
1.	श्रीमती महालक्ष्मी रामकृष्ण निदेशक (वित्त), संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली अध्यक्ष
2.	श्री स्वराज कुमार आर्य (संस्थान के मामले से सम्बन्धित लेनदेन) उपायुक्त, संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली सदस्य
3.	प्रो. कोनछोग वंगदु,, निदेशक केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह सदस्य
4.	श्री छेरिंग मुटुप, प्रशासनिक अधिकारी, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह सदस्य–सचिव

परिशिष्ट **IV**

IV) **प्रकाशन समिति की संरचना :**

क्र.सं.	नाम और पता पद
1.	प्रे. कोनछोग वंगदु,, निदेशक, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह अध्यक्ष
2.	डॉ0 पद्माकर मिश्रा, प्रकाशन प्रभारी, सं॰ सं॰ विश्वविद्यालय, वाराणसी सदस्य
3.	मुख्य सम्पादक, अनुवाद विभाग केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी सदस्य
4.	खनपो कोनछोग फनदे, लेह–लद्दाख सदस्य
5.	डॉ0 लोबज़ंग छेवांग, भूतपूर्व प्रो॰ तुलनात्मक दर्शन, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह सदस्य
6.	डॉ. कोनछोग रिगज़िन शोध अधिकारी, के.बौ.वि.सं., लेह सदस्य
6.	श्री छेरिंग मुटुप, प्रशासनिक अधिकारी,

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह
सदस्य–सचिव

परिशिष्ट V

V) **ग्रन्थालय समिति की संरचना :**

क्र.सं.	**नाम और पता पद**
1.	प्रो. कोनछोग वंगदु, निदेशक, केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह अध्यक्ष
2.	पुस्तकालयाध्यक्ष, जिला पुस्तकालय, लेह सदस्य
3.	डॉ. टशी समफेल निदेशक, स्नोङचन पुस्तकालय, पी. ओ. कुलान, सहस्त्रधारा रोड,देहरादून सदस्य
4.	भिक्षु लगदोर, निदेशक, तिब्बती पुस्तकालय एवं अभिलेख, धर्मशाला (हि.प्र.)
5.	श्रीमती छेवांग डोलमा, पुस्तकालय एवं सूचनाधिकारी,

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान,लेह
सदस्य–सचिव

परिशिष्ट VI

VI) **शोध समिति की संरचना :**

क्र.सं.	नाम और पता पद
1.	प्रो. आर. के. द्विवेदी, अध्यक्ष, बौद्ध दर्शन विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी अध्यक्ष
2.	प्रो. प्रद्युम्न दुबे, पालि एवं बौद्ध अध्ययन बी. एच. यू. वाराणसी सदस्य

3. डॉ. हीरापाल गंग नेगी,
ॲसोशिएट् प्रोफेसर,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
सदस्य

4. प्रो. जमयंग ग्यलछ़न
भूतवूर्व प्रो., भोट साहित्य
के. बौ. वि. संस्थान, लेह
सदस्य

5. डॉ0 एल. एन. शास्त्री,
मुख्य सम्पादक,
केन्द्रीय तिब्बती अध्ध्यन विश्वविद्यालय,
सारनाथ, वाराणसी (उ0प्र0)
सदस्य

6. प्रो. कोनछोग वंगदु, निदेशक,
केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह

सदस्य–सचि

परिशिष्ट VII

VII) **केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के कर्मचारयिों की कोटि–वार संख्या :**

क. शैक्षणिक पद

क्र.सं.	पद का नाम	वेतनमान	स्वीकृत पद	भरे गये	रिक्त पद
1.	निदेशक	37400–6700+10000	01	01	–
2.	प्रोफेसर/आचार्य	37,400–67000+8900	04	03	01
3.	उपाचार्य	15,600–39100+7600	10	07	03

4.	प्राध्यापक	15600–39100+5400	23	23	–
5.	प्रशिक्षक, शिल्पकला	15600–39100+5400	01	01	–
6.	प्रशिक्षित स्नातक	9300–34800+4600	12	09	03
7.	प्रशिक्षक, काष्ठकला	5200–20200+2800	01	01	–
8.	अध्यापक, गो॰ वि॰	5200–20200+2800	100	90	10

ख. प्रशासनिक पद

1.	प्रशासनिक अधिकारी	15600–39100+6600	1	1	–
2.	अति0प्र. अधिकारी	15600–39100+6600	1	1	–
3.	अधीक्षक	9300–34800+4200	1	1	–
4.	लेखाकार	9300–34800+4200	1	1	–
5.	मेडिकल सुपरवाईज़र	9300–34800+4200	1	1	–
6.	निजी सहायक	9300–34800+4200	1	1	–
7.	मुख्य सहायक	9300–34800+4200	1	1	–
8.	आशुलिपिक	5200–20200+2800	1	1	–
9.	कार्यालय सहायक	5200–20200+2400	4	4	–
10.	रोकड़िया	5200–20200+2400	1	1	–
11.	भण्डारक	5200–20200+2400	1	1	–
12.	एल.डी.सी	5200–20200+1900	1	1	–
13.	पम्प चालक	5200–20200+2400	1	1	–
14	गाड़ी चालक	5200–20200+2400	2	2	–
15.	गार्ड कमांडर	5200–20200+2400	1	1	–
16.	वरिष्ठ चौकीदार	5200–20200+1900	1	1	–
17.	चौकीदार	4440–7440+1300	4	4	–
18.	जमादार	4440–7440+1400	1	1	–
19.	चपरासी	4440–7440+1300	6	5	1
20.	छात्रावास रसोईया	4440–7440+1300	4	3	1
21.	छात्रावास बैरा	4440–7440+1300	1	1	–
22.	कैन्टीन बैरा	4440–7440+1300	1	1	–
23.	माली	4440–7440+1300	1	1	–
24.	सफाई कर्मचारी	4440–7440+1300	3	3	–

ग. पुस्तकालय कर्मचारी

25.	पुस्तकालय एवं सूचनाधिकारी	15600–39100+5400	1	1	–
26.	सहायक सम्पादक / सह सूचीकार	9300–34800+4200	1	–	1
27	पुस्तकालय सूचना सहायक	9300–34800+4200	1	1	–
28.	पुस्तकालय–परिचारक	4440–7440+1300	1	1	–

घ. शोध एकांश

29.	शोधाधिकारी	15600–39100+5400	1	1	–
30.	अनुवादक	9300–34800+4600	1	1	–

परिशिष्ट **VII**ए

VIII) केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के 2015–2016 सत्र के अन्तर्गत प्रत्येक कक्षा की परीक्षाओं के परिणाम का विवरण :

क्रम.स	कक्षा	छात्र संख्या	परीक्षा में प्रवेश	परीक्षा में उत्तीर्ण	उत्तीर्ण कुल छात्र का प्रतिशत
क.	विश्वविद्यालय कक्षाऐं				
1.	पूर्वमध्यमा प्रथम	92	88	54	61.36%

2.	पूर्वमध्यमा द्वितीय	57	55	50	90.90%
3.	उत्तरमध्यमा प्रथम	42	42	35	83.33%
4.	उत्तरमध्यमा द्वितीय	65	65	60	92.30%
5.	शास्त्री प्रथम	52	52	39	75%
6.	शास्त्री द्वितीय	40	39	39	100%
7.	शास्त्री तृतीय	08	08	08	100%
8.	आचार्य प्रथम	21	21	20	95.23%
9.	आचार्य द्वितीय	16	15	15	100%
	कुल	393	385	320	83.11%
ख.	पारम्परिक हिमालयन कला				
1.	काष्ठकला	7	7	7	100%
2.	मूर्तिकला	11	11	11	100%
3.	अमची	33	28	22	78.57%
4.	चित्रकला	21	21	20	95.23%
	ज्योतिष	2	2	02	100%
	कुल	74	69	62	89.85%
ग.	कनिष्ठ कक्षाऐं				
1.	छठी	69	63	42	66.66%
2.	सातवीं	60	54	43	79.62%
3.	आठवीं	102	99	88	88.88%
	कुल	231	216	173	80.09%
पूर्णयोग	**क + ख + ग**	**698**	**670**	**555**	**82.83%**

परिशिष्ट IX

IX) **गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयवत् एवं कक्षावत् नामांकन का विवरणः**

क्र. सं.	गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय का नाम	कक्षावत् कुल नामांकन							कुल शैक्षणिक पद
	गोनपा विद्यालय	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पंचम	छठी	योग	

1.	हेमीस गोनपा विद्यालय, हेमीस, लेह	12	12	16	23	23	11	97	04
2.	शचुकुल गोनपा विद्यालय, शचुकुल, चंगथंग, लेह	03	07	04	03	06	09	32	3
3.	चेमडे गोनपा विद्यालय, चेमडे, लेह	–	04	10	03	04	–		2
4.	अनले गोनपा विद्यालय, अनले, लेह	01	01	04	03	04	–	13	2
5.	कर्मा डूपग्युद छोसलिंग गोनपा विद्यालय, चोगलमसर	–	02	06	03	02	–	13	2
6.	लीकीर गोनपा विद्यालय, लीकीर, लेह	08	08	02	04	08	–	30	3
7.	ठीकसे गोनपा विद्यालय, ठीकसे, लेह	02	–	04	04	03	–	13	2
8.	सामस्तानलींग गोनपा विद्यालय, सामस्तानलींग, नूबरा, लेह	–	03	02	01	02	–	08	2
9.	स्पीतुग गोनपा विद्यालय, स्पीतुग, लेह	07	04	06	03	07	–	27	2
10.	फ्यांग गोनपा विद्यालय, फ्यांग, लेह	05	04	–	03	–	–	12	2
11.	ग्युदजिन तान्त्रिक गोनपा विद्यालय, फे	03	–	02	07	–	–	12	1
12.	मठो गोनपा विद्यालय, मठो,लेह	–	05	01	02	01	09		1
13.	हनुथंग गोनपा विद्यालय	05	02	–	01	–	–	08	1
14.	स्तगना गोनपा विद्यालय, स्तगना, लेह	02	02	01	–	01	–	06	1
15.	स्क्युरबनचन गोनपा विद्यालय, खलचे	–	01	04	01	04	–	10	1
16.	मूद गोनपा स्कुल मूद, चंगथंग, लेह	02	–	01	02	–	–	05	1
17.	न्योमा गोनपा विद्यालय, चंगथंग	02	08	01	–	02	–	13	2
18.	छुशुल गोनपा विद्यालय, चंगथंग	03	03	07	–	–	–	13	2

19.	रिज़ोंग गोनपा विद्यालय, रिज़ोंग, लेह	02	03	06	06	05	–	22	2
20.	देस्कीद गोनपा विद्यालय, देस्कीद, नूबरा, लेह	03	04	02	–	04	–	13	1
21.	यरमा गोनबो गोनपा विद्यालय, नुबरा	–	–	01	03	03	–	07	1
22.	बरदन गोनपा विद्यालय, बरदन, जंस्कार, कारगील	10	10	01	04	–	–	25	1
23.	कोरज़ोग गोनपा विद्यालय, चंगथंग	09	01	–	02	05	–	17	2
24.	कारशा गोनपा विद्यालय, कारशा, जंस्कार, कारगील	03	02	06	09	03	–	23	2
25.	लामायुरू गोनपा विद्यालय, लामायुरू, लेह	02	03	–	06	08	–	19	2
26.	फूगथल गोनपा विद्यालय, फूगथल, जंस्कार, कारगील	–	12	05	13	10	07	47	3
27.	रंगदुम गोनपा विद्यालय, जंस्कार	03	11	–	04	04	–	22	2
28.	मुने गोनपा विद्यालय, जंस्कार	–	04	05	08	03	–	20	1
29.	जोंगखुल गोनपा विद्यालय,जंस्कार	05	–	04	–	–	–	09	1
30	स्तोंगदे गोनपा विद्यालय, जंस्कार	04	05	03	–	–	–	12	1
31.	स्तगरिमो गोनपा विद्यालय, जंस्कार	04	03	02	03	02	–	14	1
32.	पलदार गोनपा विद्यालय, पलदार	04	03	04	02	04	–	17	3
33.	की गोनपा विद्यालय, कजा, स्पीती	–	–	05	10	08	–	23	2
34.	तनग्युद गोनपा विद्यालय, कज़ा, स्पिती	–	–	03	10	05	–	18	2
35	उरग्यन दोरजे छोसज़ोङ, सबु	04	04	05	06	–	–	19	2

श्रामणेरी विद्यालय

36.	तिमोस्गंग श्रामणेरी विद्यालय	–	01	06	02	–	–	09	1
37.	स्किदमंगश्रामणेरी विद्यालय, स्कितमांग	02	02	02	02	04	–	12	2
38.	चुलीचन श्रामणेरी विद्यालय, चुलीचान, लेह	–	07	06	02	01	–	16	2
39.	बौद्धखरबु श्रामणेरी विद्यालय, बौद्धखरबु, करगील	04	01	02	–	03	–	10	1
40.	वाखा श्रामणेरी विद्यालय, वाखा, कारगील	–	01	–	02	02	–	05	1
41.	शारगोल श्रामणेरी विद्यालय, शारगोल, कारगील	01	03	02	01	01	–	08	2
42.	ज़ंगला श्रामणेरी विद्यालय, ज़ंगला, जंस्कार, कारगील	07	–	01	01	01	–	10	1
43.	करशा श्रामणेरी विद्यालय, जंस्कार कारगील	07	02	02	04	01	–	16	1
44.	टशी छोसलिंग श्रामणेरी विद्यालय, हि0 प्र0	02	07	05	01	04	–	19	2
45.	सक्या श्रामणेरी विद्यालय, चोगलमसर	04	04	05	–	03		16	2
46	यङ्चेन् छोसलिङ् श्रामणेरी विद्यालय, स्पीती हि0	02	04	11	–	12	–	29	2
47.	तुङरि श्रामणेरी विद्यालय, ज़ङ्कर	05	02	02	05	04	–	18	2
48.	दोर्गे ज़ोङ् श्रामणेरी विद्यालय,	06	–	09	–	–	–	15	1
49.	फगमो लिङ् श्रामणेरी विद्यालय,	07	06	13	–	–	–	26	2
50	देछेन छोलिङ् श्रामणेरी विद्यालय,	–	–	25	–	–	–	25	2
	कुल योग	**155**	**171**	**214**	**169**	**167**	**27**	**903**	**87**

परिशिष्ट X

X) वर्ष 2015–2016 के परीक्षा का परिणाम (डी.पी.एस.,जंस्कार) :

क्र.सं.	कक्षा	छात्र संख्या	उपस्थित	परीक्षा में उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
1.	प्रथम	69	69	60	86.95%
2.	द्वितीय	32	32	29	90.62%
3.	तृतीय	24	22	18	81.81%
4.	चतुर्थ	19	19	18	94.73%
5.	पांचवीं	29	26	23	88.46%
6.	छठी	34	34	23	67.84%
7.	सातवीं	26	26	23	88.46%
8.	आठवीं	23	23	21	91.30%
9.	नौवीं	19	19	15	78.94%
10.	दसवीं	20	19	18	94.73%
	कुल	**295**	**289**	**248**	**85.81%**

परिशिष्ट XI

XI) डी.पी.एस.,जंस्कार की कर्मचारी संख्या :

क.	शैक्षिक कर्मचारी	वेतनमान	स्वीकृत पद	स्थिति	रिक्त पद
1.	प्रधानाध्यापक	9300–34800+4800	1	1	–
2.	टी.जी.टी	9300–34800+4200	7	7	–
3.	अध्यापक	5200–20100+2800	5	5	–
4.	शारीरिक शिक्षा अध्यापक (अनुबन्ध पर)	17,140/=(स्थिर)		1	

ख.	गैर शैक्षिक कर्मचारी	वेतनमान	स्वीकृत पद	स्थिति	रिक्त पद
1.	कार्यालय सहायक (अनुबन्ध पर)	9,910/=(स्थिर)	–	1	–
2.	रसोइया	4440–7440+1300	1	1	–
3.	चपरासी	4440–7440+1300	1	1	–
4.	गाड़ी चालक अनुबन्ध पर	8510 /=(स्थिर)	–	1	–
5.	माली	4440–7440+1300	1	1	–
6	चौकीदार	4440–7440+1300	1	1	–

प्ररिशिष्ट **XII**

XII) बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग के वर्ष 2015–2016 की परीक्षा का परिणामः

क्र. सं.	कक्षा	छात्र संख्या	उपस्थित	परीक्षा में उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
1.	प्रथम	6	नया प्रवेश	नया प्रवेश	नया प्रवेश
2.	द्वितीय	4	”	”	”
3.	तृतीय	10	”	”	”
4.	चतुर्थ	11	”	”	”
5.	पांचवीं	11	”	”	”
6.	छठी	20	”	”	”
7.	सातवीं	5	”	”	”
8.	आठवीं	3	02	02	100%
9.	नवीं	3	नया प्रवेश		नया प्रवेश
10.	दसवीं	2	01	01	100%
	कुल	**75**	–	–	–

प्ररिशिष्ट **XII**

XII) बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग की कर्मचारी संख्या :

क.	शैक्षिक कर्मचारी	वेतनमान	स्वीकृत पद	स्थिति	रिक्त पद
1.	प्रधानाध्यापक	9300–34800+4800	1	–	1
2.	टी.जी.टी	9300–34800+4200	8	8	
3.	शारीरिक शिक्षा अध्यापक	9300–34800+4600	1	1	–

ख.	गैर शैक्षिक कर्मचारी	वेतनमान	स्वीकृत पद	स्थिति	रिक्त पद
4	कार्यालय सहायक	5200–20200–2400	1	1	–
5.	चपरासी	4440–7440+1300	3	3	–

****

Central Institute of Buddhist Studies

(Deemed to be University)
Accredited by NAAC with 'A' Grade

Annual Report
2015-2016

Choglamsar, Leh (Ladakh) 194104 (J&K)

INDEX

S.No.	Contents	Page No.
1.	Brief History	1
2.	Objectives	2-3
3.	Management	3-4
4.	Constitution of Sub-Committees	4-5
5.	Funds	5
6.	Staff Strength	5
7.	Faculties and Departments	5-8
8.	New Admission	8-9
9.	Seminar/Symposium/Workshop	9
10.	Educational Tour	10-11
11.	Publication	11
12.	Research	11
13.	Campus	12
14.	Library	12
15.	Museum	13
16.	Special Lecture/Other Academic Activities	13
i)	K.G.Bakula Rinpoche Memorial Lecture Series	13
ii)	Collaborated Programmes	14
iii)	Bhoti Day	14
iv)	Medical Facilities	14
v)	Annual Sports Meet	14
vi)	Annual/Monthly Magazines	14
17.	Syllabi	15
18.	Stipend to Students	15-16
19.	Free distribution of Text Books and /Note Books to Students	16
20	Examination Result	16
21.	Gonpa/Nunnery School	16
22.	Annual Function	17
23.	Other Important Events	17
i)	Celebration of Birth Anniversary of Bharat Ratna Dr.B. R.Ambedkar	17
i)	Celebration of Birth Anniversary of Dr.Radha Krishanan as Teachers'Day	17
iii)	Celebration of Hindi Divas	18
iv)	Bhum Recitation	18

	v)	Buddhist Chanting of Ladakh: An Intangible Cultural Heritage	18
	iv)	Swach Bharat Abhiyan	19
24.		Visit of UGC Expert Team.	19
25.		Project for Translation of Buddhist Philosophical Texts	20
26.		Project for the Compilation of Encyclopedia of Himalayan Buddhist Culture	20
27.		Rastriya Sanskrit Mela	20
28.		Buddhist Festival at Kushinagar	21
29.		Buddhist Festival at Bengaluru	21
30.		Manuscripts Resource Centre	21-22
31.		Placement of Students after obtaining their degree/ diploma	22-23
32.		Duzin Photang School	
		(i) Brief History	23
		(ii) Examination Result	23-24
		(iii) Other Activities	24
		iv) Staff Strength	24
33.		Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya,Keylong (H.P.)	24-25
		(i) Brief History	
		(ii) Examination Result	25
		(iii) Staff Strength	25

Annexures

i)	Composition of Board of Management	26-27
ii)	Composition of Academic Committee	28-29
iii)	Composition of Finance Committee	30
iv)	Composition of Publication Committee	31
v)	Composition of Library Committee	32
vi)	Composition of Research Committee	33
vii)	Staff Strength of CIBS	34-35
viii)	Examination Result of CIBS	36
ix)	School-wise and Class-wise enrollment of Gonpa/Nunnery Schools	37-38 39
x)	Examination Result of DPS, Zanskar	40
xi)	Staff strength of DPS, Zanskar	41
xii)	Examination Result of BDSV, Keylong	42

xiii) The Staff Strength of BDSV, Keylong 43

1. BRIEF HISTORY:

Prior to 1959, scholars, novices and monks of Ladakh used to go to Tibet in pursuit of higher monastic Buddhist education and used to study and do research for years in the famous Mahaviharas of Drepung, Sera, Gadan, Tashi Lhunpo, Sakya, Sagnag Chosling, Derge, Dregung etc. This practice abruptly came to an end because of historical reasons. Hence, it was held imperative that a Buddhist Institute should be established for formal Buddhist education in this country. Leh was chosen the centre for the dissemination of the Buddhist Culture and Philosophy in view of its geophysical suitability and traditional matrix.

Accordingly, the Central Institute of Buddhist Studies was established at Leh with the holy rituals performed by Rev Ling Rinpoche, the Senior Tutor to H.H. Dalai Lama XIV. The Institute was initially called the "School of Buddhist Philosophy". In 1962, at the behest of Ven Kushok Bakula, Pandit Jawahar Lal Nehru, the first Prime Minister of India, was convinced of the necessity of such an Institution for the Buddhists living in the Himalayas. Thus the Institution was given full accreditation in the matter of financial support under the administrative charge of the Ministry of Culture, Govt. of India.

In its initial stages, the Institute admitted ten scholars: one each from ten important Gonpas (Monesteries) of Ladakh. The appointment of two teachers was made to instruct the students in Tibetan Literature and Buddhist Philosophy. For 3 years, these 10 Gonpas bore the entire expenses of the students and the teachers. From 1959 to1961, the School was conducted at Leh. From there, it was shifted to Spituk Village about 8 Kms away from Leh in 1962. The Institute had its new set up in 1973 at Choglamsar, 8 Kms South-East of Leh and was registered in the year 1964 under the J&K Registration Act VI of 1998 (1941 A.D) as an Educational Institution. Sanskrit, Hindi, English and Pali languages were introduced, besides the teaching of Buddhist Philosophy and Tibetan Literature. In 1973, the Institute was affiliated to Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, U.P., and the courses suitable to the students of the frontier region were introduced. The

Government of India Ministry of Human Resource Development (Department of Higher Education) on the recommendation of the University Grants Commission conferred the status of 'Deemed to be University' under section 3 of the UGC Act, 1956 to the Central Institute of Buddhist Studies, Leh (Ladakh), Jammu and Kashmir vide this Notification No. F.9-5/2001-US(A) dated 15-01-2016

The first Principal of the Institute was a renowned Tibetan Buddhist Scholar Ven Yeshi Thupstan who worked from 1959 to 1967. Ven Lochos Rinpoche was appointed as the second Principal of the Institute. Dr Tashi Paljor worked as the Principal of the Institute from 1979 to 2005. Consequent upon the retirement of Dr Nawang Tsering from the post of Principal after rendering 5 years of his service from 2005 to 2010, Dr.Wangchuk Dorjee Negi took over the charge of Principal on 15th June 2010. Subsequently, the Board of Management in its meeting held on 19-12-2011 decided to rechristen the post of principal as Director.Dr Wangchok Dorjee Negi relinquished the post of Director on 12-12-2014 by handing over the charge to Prof.Konchok Wangdu.

2. OBJECTIVES:

The main purpose of the Institute is to sharpen the multi-faceted personality of the students through inculcation of the wisdom of Buddhist Philosophy, literature and arts as well as to familiarize the students with the modern subjects. This has been a unique Institution in the country because of its provision to teach all the aspects of Himalayan Buddhist Culture at one place. The Institute undertakes Under Graduate, Post- Graduate and Doctoral Progammes in Buddhist Philosophical and Cultural Studies, and also establishes and maintains, feeder schools. The Objectives for which the Institute is established are:

1 To provide higher education leading to excellence and innovations in such branches of knowledge as may be deemed fit primarily at post- graduate and research degree levels fully conforming to the concept of University, namely, University Education Report (1948) and the Report of the Committee on Renovation, Rejuvenation of Higher Education in India (2009) and the Report of the Review Committee for Deemed to be Universities (2009).

2 To engage in areas of specialization with proven ability to make distinctive contributions to the objectives of the university education system,i.e., academic engagement clearly distinguishable from programmes of an ordinary nature that leads to conventional degree in arts, science, engineering, medicine, dental studies pharmacy, management etc,. routinely offered by conventional institutions.

3 To provide high quality teaching and research facilities for the advancement of knowledge and its dissemination through various research progammes undertaken by a substantial number of full time faculty/ research scholars (Ph.Ds and Post Doctorals) in diverse disciplines.

4 To develop, manage, supervise and administer the affairs of the educational institute called the Central Institute of Buddhist Studies, Chglamsar, earlier known as the School of Buddhist Philosophy.

5 To provide instructions for various courses of study and research in different branches of Buddhist Philosophical and Cultural Studies for the award of the degree and diplomas.

6 To provide facilities for research, publication, restoration and advancement of learning and dissemination of knowledge in such branches of Buddhist Philosophy, as the Institute may think fit.

7 To co-operate with educational and other institutions in any part of the world having objectives similar to those of the Institute in such manner as may be conducive to their common objectives.

8 To invite scholars of Buddhist Philosophy and Cultural Studies from India and other countries for lectures, and to hold seminars, discussions and discourses in Buddhist Philosophy and Culture.

9 To do all such things as may be necessary, incidental or conducive to the attainment of all or any of the objectives of the society.

3. MANAGEMENT:

The Management of the Institute is vested with a Board of Management under the chairpersonship of Joint Secretary to the Govt.

of India, Ministry of Culture. The members of the Board are the representatives of different Ministries, Departments, Associations, Universities and Buddhist Scholars nominated by the Govt of India, Ministry of Culture. The tenure of the members of the Board of Management is for a period of three years with effect from the first meeting of the re-constitution of the Board. The Director of the Institute is the Member-Secretary of the Board. The existing composition of the Board of Management is placed as Annexure at page 26. The meeting of the Board of Management is convened after every six months. The Board of Management have the power to exercise or perform all duties, powers, functions and rights whatsoever necessary or consequential and incidental to give effect to its objectives set forth in the Memorandum of Association However, the Govt. of India may from time to time issue directives on breed matter of policy, which the Board shall have to carry out.

4. CONSTITUTION OF SUB-COMMITTEES:

Several sub-committees have been constituted under the Board of Management to implement its directives and to assist the Board in the matter of Academic Affairs, Finances, Research, Publication etc. A brief write-up on each sub-committee is as under:

i) **Academic Committee**: The Board of Management constitutes an Academic Committee consisting of eminent scholars and academicians to advise the Board in the Academic Affairs of the Institute. The Committee meets once or twice in a year as per need to advise the Board in the respective field. The existing composition of the Academic Committee is placed as Annexure at page 28.

ii) **Finance Committee:** A Finance Committee under the chairpersonship of Director (Finance) /Deputy Secretary (Finance) of the Govt. of India, Ministry of Culture is constituted as per Memorandum of Association and Rules and Regulations of the Institute. The Committee meets once or twice a year to advise the Director and the Board of Management in matters relating to the administration of property and funds of the Institute. The existing composition of the Finance Committee is placed as Annexure at page 30.

(iii) **Publication Committee:** The Institute is carrying out the publication of rare books and manuscripts relevant to Himalayan arts, culture and language. The rare books/manuscripts proposed to be published are placed before the Publication Committee for review and justification for its publication before being sent to the press. The Publication Committee consists of eminent scholars and experts in the field of publication. The existing composition of the publication committee is placed as Annexure at page 31.

(iv) **Library Committee**: The Library Committee consists of experts in the field of Library and recommend for upgradation and improvement of the Library from time to time including the requirement of additional staff, machines and equipment, digitization, cataloguing etc. The existing composition of the Library Committee is placed as Annexure on page 32.

(v) **Research Committee:** The Research Committee of the Institute conducts interview for selection of candidates for fellowship reviews the synopsis and progress of the Research Fellows etc. The existing composition of the Research Committee is placed as Annexure on page 33.

5. Funds: The Institute is fully financed by the Ministry of Culture, Govt. of India and has been allocated a provision of Rs. 825.00 lakhs and Rs. 801.00Lakhs under Plan and Non-Plan budgets respectively for the year 2015-16 to execute various projects approved by the Board of Management, CIBS, Leh.Besides an amount of Rs. 50.00 lakh was allocated under Tribunal Sub-plan for the year, 2015-16.

6. Staff Strength: The Director being the Chief Administrative Officer supervises the Institute assisted by the Administrative Officer and other supporting staff members of the Institute. The staff strength, category-wise of CIBS, Leh, showing teaching and non-teaching staff separately, is placed as Annexure at page 34.

7. Faculties and Departments: The faculties and departments of the Institute have been established on the basis of Panch Mahavidyas of Monastic tradition for the smooth and effective functioning of the Institute on University pattern as indicated below:

i) Faculty of Adhyatma and Nyaya Vidya (Faculty of Philosophy And Logic)
ii) Faculty of Sabdha Vidya (Faculty of Literature and Languages)

iii) Faculty of Sowa Rigpa and Shilpa Vidya (Faculty of Baudh Medical Science and Arts)
iv) Faculty of Audhunik Vidya (Faculty of Modern Studies)

These faculties are further divided into different departments relevant to their studies as per details given below:

I) Faculty of Adhyatma and Nyayavidya(Faculty of Philosophy And Logic)

The faculty consists of three Departments for Mool Shastra and Sampradaya Shastra with different branches of the disciplines. As per Monastic system, Adhyatma and Nyayavidya are two independent vidyas, having different faculties. But we have combined these together to suit the syllabus of the Institute. The departments as discussed are given below:

i) Department of Bhot Baudh Darshan
ii) Department of Sanskrit Bauddh Darsahan
iii) Department of Sampradaya Shastra

II) **Faculty of Shabdavidya (Faculty of Literature and Languages)**

This faculty consists of the languages as per details given below:

i) Department of Bhot Literature
ii) Department of Classical languages (Sanskrit and Pali)
iii) Department of Modern languages (English and Hindi)

III) Faculty of Sowa Rigpa and Shilpa Vidya (Faculty of Baudh Medical Science and Arts)

The Institute takes much interest in preservation and promotion of traditional Himalayan arts and culture. Accordingly, the following departments have been set up for preservation and promotion of the arts and culture of the region:

i) **Department of Sowa Rigpa and Astrology:** It is centuries old tradition in Ladakh to provide herbal medicines to the patients. When there were no allopathic medicines, the Sowa Rigpa System of Medicines used to be very popular in the region. The people still believe that the Sowa Rigpa System of Medicines is the most useful one and has no side effect. Now the Govt.of India has also recognized Sowa Rigpa as one of the traditional and useful medicine systems. So the people opt for Sowa Rigpa System of Medicines. Keeping the facts in view, the Institute imparts training to students interested in Baudh Medical Science. The + 2(Higher Secondary) passed students having the sound knowledge of Bhot language are eligible for admission into six years' Baudh Medical Science Course. There are numbers of students who have been awarded the degree and some of them are practicing in the market, while most of them are in Govt./private jobs.

ii) **Department of Himalayan Arts and Craft:**

a) Traditional Scroll/Fresco Painting: This art of painting is very popular in the region. Monasteries of Ladakh are very popular for preserving numerous Thanka paintings and frescoes. The Frescoes of Alchi Monastery and Lamayuru Monastery are very famous. One can still see the paintings that are one thousand years old. Besides, in each village there is a monastery having Thankas, frescoes and statues. The tourists from all over the world are coming to Ladakh in summer season to visit these monasteries. The Institute runs a Buddhist Scroll Painting Course for the students. A number of students are receiving training in this course to keep alive the centuries old tradition of making the Thankas.

b) Traditional Sculpture: The making of clay statues and monastic masks are very common in Ladakh region. There are monastic festivals known as Gustor/ Dosmoche/ Tsetchu/Nagrang in

every monastery on a special occasion. On this occasion, the mask dance popularly known as Cham is performed by wearing masks of different Buddhas and Bhodisattvas, gods, deities etc. The Institute has arranged to train the students for making the art of sculpture of Buddhas, Bhodhisattvas, gods, deities etc., and also teaches the art of making masks. The interested students have to undergo the training for six years after passing Class X. Numbers of students are under training in this art of making statues and masks.

c) **Traditional Wood Block Carving**: In olden times, when there were no printing machines to print books, here in Ladakh, the people used to get the copy of religious and other texts copied from wooden blocks. The scripts of texts, especially religious texts, are carved on hard wooden blocks in a systematic way, so that the scripts get printed on a paper for reading. Once a text is carved on the wooden blocks, one can copy the text for thousand times like photostate copies. This was very popular in Ladakh in olden times.There is a system to hoist prayer flag in the monastery as well as on the top of every Buddhist household known as Tarchok, and Tarchan on the main gate. These prayer flags are printed texts on clothes of five different colours, which symbolize for high spiritual power.The text contained Lungsta and Gyal –Tsan Tsemo. The text prints out on clothes from wooden block made for the purpose. To continue this art, the Institute has introduced a six year course of Wood Carving. Besides the block making, one can learn the art of carving other decorative items like the carving of dragons, birds, lions, horses etc. This art is very popular in Ladakh region and one can earn handsome money for one's livelihood through this.

4. **Faculty of Adhunik Vidya (Faculty of Modern Studies):** There are three departments under this faculty, which are as under:

i) Department of Baudh Puranic History
ii) Department of Comparative Philosophy
iii) Department of Social Sciences

8. Admission: Admission is being provided from Class VI to Class IX on the basis of an entrance test conducted by the Admission

Committee as per the norms prescribed. However, the students of the feeder Gonpa / Nunnery Schools of the Institute are admitted directly. Admission is also given to the students to the six years' course in Sowa Rigpa, Baudh Scroll Painting, Sculpture, and Wood Carving depending on the availability of seats. During the year under report 110 students were admitted into various classes including professional courses.

9. Seminar/Symposium / Workshop:

a) During the year under Report,the Institute organized four days'All India Seminar on the subject "The Distinctive view, Meditation and Discipline in Sakya Order of Mahayana Buddhism" from 11-07-2015 to 14-07-2015 in the Acharya Nagarjuna Auditorium of the Institute by inviting scholars from different Universities, Institutions and Monasteries. The seminar was inaugurated by H.H.Sakya Trizen Rinpoche, an eminent scholar and the Highese Lama of Sakya Order of Mahayana Buddhism. H.E.Togdan Rinpoche and Loding Khan Rinpoche were also present in the inaugurat function. A large number of scholars from different Universities, Institutions and Monasteries from all over India participated in the seminar and presented their valuable papers. Besides, a large number of scholars from Ladakh region also participated in the seminar. The papers presented in the seminar have been collected and published in the form of a book titled "Ladakh Prabha". The valedictory function of the seminar was presided over by Dr Nawang Tsering, the former Principal of the Central Institute of Buddhist Studies, Leh. A colourful cultural programme by the senior students of CIBS was also performed on the occasion.

b) A Two day workshop on the subject "Preventive and Curative Conservation of Manuscripts" was organized in the Institute on 1st and 2nd September, 2015. The fund was provided by the National Mission for Manuscripts 60. scholars and experts from MRC/ MCC and different Monasteries of Ladakh region participated in it. The expert from the state Archives and private NGOS were also invited to deliver lecture and demonstrate the art of conservation. The team also visited the famous Hemis monastery, Chemdey monastery and Matho monastery for practical purpose.

c) One day work shop on Consultations Cum-Sensitizations on Child Protection Issue" was organized on 8th September, 2015 in the

conference room of CIBS, Leh in collaboration with Leh Nutrition Project (LNP) under the patronage of UNICEF. Two representatives of the UNICEF namely Ms. Vandhana Khandhari and Mr. Hilal Bhat attended the workshop and expressed their views. Representative of 15 Monasteries and 15 teachers of Gonpa/Nunnery schools alongwith Monks dealing with affairs of the children participated in the workshop. A power point presentation was given on the occasion by the representative of UNICEF.

d) Keeping in view the requirement of amendment in curriculum of the Institute and the proposal to introduce semester system, the institute organized four days' workshop by inviting two experts namely Prof M.K.Das from Mahatma Ghandhi Kashi Vidyapath, Varanasi and Prof Tashi Tsering, CUTS, Sarnath on the subject "Curriculum: Its Design, Implementation and Effects". All faculty members were directed to attend and participate in the workshop mandatorily so that a comprehensive curriculum could be developed. The workshop was organized from 3-11-2015 to 6-11-2015 as the students were on preparation leave for their annual examination. The workshop was very successful.

e) A **Two days' workshop** /training programme was arranged for the Gonpa/Nunnery School teachers. The expert from J&K Education Department, scholars of CIBS and expert in School Administration / Management delivered lectures and demonstrated the use of teaching – aids. The theme of the workshop was Modern Teaching Methodology and School Administration /Management. 70 Gonpa/Nunnery School teachers actively participated in the workshop and presented their practical problems for which the experts suggested various solutions.

f) One day local seminar on the eve of Buddha Jayanti celebration as per Tibetan calendar was organized on 2nd June, 2015 on the subject "Buddha and His Teachings". Six scholars presented their valuable papers followed by the question- answer session. A large number of general public participated in the discussion apart from the students and faculty members of CIBS,Leh.

10. Educational Tour: A group of 50 students from classes of Acharya II, Shastri-III, U.M-II,and final years of Sculpture, Painting and Wood Carving were on *Bharat Darshan* (Educational Tour) in the month of January 2016 for a period of 36 days. The group visited

Delhi,Kolkata,Bhubaneswar, Mysore, Chennai, Pondichery,Bangalore, Mumbai, Arangabad etc. The Educational Tour was conducted under the supervision of Khanpo Konchok Shedrup, and Mr Tsering Choldan, Lecturers of the Institute. The purpose of the tour was to familiarize the students with the great historical, industrial, religious, and geographical wealth of the country and to imbibe in them the feelings of National Integration.

The students of the lower classes of the Institute were also taken for a local educational tour, i.e., *Ladakh Darshan* to Nubra valley for a period of 5 days under the supervision of three teachers. The total number of students who took part in this tour was 95 from class P.M.II. They visited the historical places, monasteries, lakes etc., of the area.Thus the institute provided an amount of Rs.6.15 lakhs to conduct these tours.

Besides, a batch of twenty two students from the Department of Sowa Rigpa under the guidance of the teachers concerned toured to Sapia of Kargil Distt for 7 days in August 2015 for collection/identification of various medicinal herbs and minerals used for preparation of Sowa Rigpa system of medicines. Various herbs were collected and demonstrated for preparation of medicines. The samples have been preserved in an album for reference. A large number of herbs were identified during the tour and also the raw materials were collected. Varieties of Sowa Rigpa medicines have been prepared by the Sowa Rigpa Department of the Institute itself through practical classes which include powder, pills etc. During the year under report, these medicines are being provided to patients on very nominal charges, and freely to the staff and students of the Institute.

11. Publication: The Institute published 85 numbers of rare and valuable books on various subjects including the proceedings of the National Seminar (Ladakh-Prabha). During the year 2015-16, the Institute published five books, viz. History of Ladakh by Chosje Togdan Rinpoche, Cultural Heritage of Zanskar, Dictionary of Tibetan Synonyms, Dharmapada in Bhoti, and History of Ladakh by Tashi Rabgais in Hindi.

12. Research: The Institute has established four Fellowships for Research Scholars on the pattern of U.G.C. The research works are being conducted in the field of Buddhism as well as in the four sects of

Mahayana Buddhism. The Institute has so far awarded the degree of Ph.D to nine scholars. The Board of Management, CIBS, Leh in its meeting held on 13th March, 2015 approved the proposal to increase the number of fellowship from 4 to 8 on UGC pattern.

13. Campus: The Institute is located 8 kilometers south of Leh town on the bank of the Indus river in Choglamsar. It has two campuses new as well as old. The old campus is located on a piece of land measuring 23 Kanals and used for running the classes for the junior wing form Class 6th to 8th with the strength of 167 students. It is under the charge of a Headmaster assisted by Trained Graduate Teachers (TGTs) and other staff members.There are the teaching block, a small auditorium, office, and children's library on this campus. Some projects of the Institute such as Manuscripts Resource Centre, Manuscripts Conservation Centre, Encyclopedia of the Himalayan Buddhist Culture are also going on on the old campus. The new campus is located just half a kilometer away from the old campus built up with separate blocks for teaching, Administration, Library and hostels(with a capacity of one hundred students in each which are separately provided to the monks, boys and girls). There are 60 residential Quarters for staff and a Guest house with a capacity to accommodate 20 guests at a time. There is a sport stadium with facilities of spectators' gallery, dressing room, store etc. Besides, an auditorium with seating capacity of 700 people is available to carry out the various activities of the Institute. Besides these, a Philosophical Debate Hall, and a Students' Recreation Center are available on the campus to carryout its activities.

14. Library: The Library is a vital organ of the Institute in which not only the students and teachers, but also other members of the Institute depend upon for seeking information and wisdom. A large number of Indian as well as foreign tourists visit the Library during the tourist season. The Library of the Institute was shifted to the new campus for which a separate building of three storeys is available. The library has been computerized by installing the Slim Thumi Software. There are three sections of the Library, i.e., (1) General Section (2) Sungbum/Tibetan Section, and (3) Reference Section. The total collection of 32,242 books in Tibetan, English, Hindi, Sanskrit, Pali and Urdu on Religion, History, Philosophy, Literature, Sociology etc., is available. The Library has a well-collected reference section comprising of Encyclopedias, Dictionaries and Year Books. During the

year under report the Institute purchased 824 books worth Rs.3.22 lakhs. The Library of the Institute has subscribed 22 Indian and foreign research journals/periodicals during the year. Besides, 20 numbers of various types of magazines in different languages were also subscribed. In the interest of the students and readers, the Institute subscribes 08 different types of newspapers for the Library.

15. Museum: The Institute has built up a small archaeological Museum with a collection of antiquities and objects-de-art which among other things include sculpture and painting articles of Ladakh, antique photographs and replicas brought from many historical places of India. This is a unique Museum of its kind in Ladakh, which draws attention of tourists as well as the research scholars on a large scale every year.

16. Special Lectures/Other Academic Activities:

i) Gyalsras Kushok Bakula Rinpoche Memorial Lecture Series:

Ven. Kushok Bakula Rinpoche was a great scholar and a social reformer of Ladakh. He did yeomen service for the development of Ladakh. He spent his life for the welfare and uplift of the poor and the downtrodden people of the region. He had a good political position in the State Govt. of Jammu and Kashmir as Cabinet Minister, and was M.P. in the Indian Parliament, Ambassador to Mongolia etc. In recognition of his social work, the Govt. of India awarded him with Padma Bhushan. Due to his endeavour, the *Central Institute of Buddhist Studies* formerly known as the *School of Buddhist Philosophy*, Leh was established in the year 1959 to develop and preserve the rich cultural heritage of the region. In his memory, the Board of Management, CIBS, Leh in its meeting held on 27-2-2004 decided to commence a lecture series. During the year under report, the 11th Lecture Series was conducted from 1-12-2015 to 3-12-2015 by inviting Prof Nawang Samsten, Vice Chancellor, CUTS, Sarnath. He delivered his lecture on a specific topic, i.e., Education and Administration System in Universities'. The 2nd Lecture was delivered on 2-12-2015 on the subject "Buddhism & Science" which was attended by the staff and students of the Institute. The third lecture was delivered on 3-12-2015 at Chokhang Vihara, Leh on the subject

"Lamsonumsum" in which staff, students and a large number of general public attended.

ii**)** **Collaborated Programme**: One day "Global Alternative" Forum" was organized on 1-8-2015 by Socially Engaged Buddhists of Ladakh (SEBoL) in collaboration with CIBS, Leh. The students from Govt .and private Schools of Leh District participated, in addition to the students of the Institute. The scholars from Japan and Denmark delivered lectures on the subject and also gave a power points presentation on the occasion. A group discussion of the students was also arranged after the lecture programme.

iii) **Bhoti Day Celebration:** The Institute celebrated Bhoti Day on 24-9-2015. The scholars delivered lectures in the first session on the importance of use and teaching of Bhoti language in the region and also on the present status of Bhoti language. In 2nd session, the students from different schools presented their poems in Bhoti language. A colorful cultural programme and a drama in Bhoti language were performed by the students. Three prizes were given away to students for their best recitation.

iv) **Medical Facilities**: The Institute has a dispensary of its own and provides medicines to the students and the staff. A part- time Doctor visits the Institute every alternate day. The part-time Doctor is assisted by a Staff Nurse and a Nursing Orderly. This arrangement is very useful for the students and the staff. During the year, the Institute purchased medicines worth Rs. 1.23 lakhs to be distributed freely among the students and the staff for treatment of different ailments.

v) **Annual Sports Meet:** To encourage athletic activities, the Institute arranged Annual Sports Meet for 8 (eight) days from 24th September to 1st October 2015 during which various types of games and sports activities were conducted among the three houses, viz Nalanda, Takshila and Vikramshila. The faculty members and students actively participated and successfully completed the programme. The position holders were honoured with medals and certificates on the occasion of Annual Function.

vi) **Annual/Monthly Magazine:** The Institute also brings out an Annual Magazine entitled "**Rigpai Durtse***"*and two monthly News Letters titled **Lomai Gatsal** in Bhoti and **The Green Grove** in

English to which the students and the staff contribute articles on different subjects. The activities of the Institute and the achievements of the staff and students having received awards etc., during the year are also highlighted with their photographs. These are purely institutional magazines and these reflect the nature and scope of the Institute absolutely.

17. Syllabi: In the formative years, the ten-year syllabi covering the subjects of Hindi, Sanskrit, Buddhist Philosophy and Tibetan Language were in operation. In the year 1973, the Institute was affiliated to the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, U.P., and accordingly, special syllabi were drawn up to fulfil the requirements of the border area students and to achieve the aims and objectives for which the Institute was initially established. The University has constituted a Board of Studies to have periodical reviews of the syllabi. The Board holds a meeting once in a year to review the syllabi and to introduce new courses. The compulsory subjects are Sanskrit, Hindi, English, Tibetan Literature, and Buddhist Philosopy and the optional subjects are Political Science, Economics, Pali, Comparative Philosophy, Tibetan Medicine, Wood Carving, Sculpture and Painting. The syllabi of the Institute have been approved by the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi on the recommendation of the Board of Studies of the University. The Jammu & Kashmir Universities, and the State Board of School Education, J&K have recognized the degrees of the Sampurnanand Sanskrit University since 1984 on reciprocal basis as equivalents to the degrees given below:

1. Purva Madhyama	Matriculation
2. Uttar Madhyama	Higher Secondary
3. Shastri (with English)	B.A.
4. Acharya	M.A.

The Institute included the Sampradya Shastra of Mahayana Buddhism in Shasrti and Acharya courses as one of the compulsory subjects, which has been welcomed by the faculty members, students and other scholars of Ladakh.

18. Stipend to Students: The stipend ranging from Rs. 685/- to Rs. 845/- per student per month is presently granted to 625 students.

An amount of Rs.65.35 lakhs was disbursed to the students on account of stipend during the year 2015-16

Besides, an amount of Rs. 77.48 lakhs has also been disbursed to 946 students of 50 Gonpa/Nunnery Schools running in various monasteries of Ladakh region and Lahaul- Spiti valley of Himachal Pradesh and other parts of J&K on account of stipend.

19. **Free distribution of Text/Note books to students**: The students studying in the Institute and its branches and feeder Gonpa/Nunnery schools come from most back-ward and remote areas of the region and belong to Schedule Tribe. Accordingly, under the Tribunal Sub-Plan, the Institute arranged the free distribution of Text/Note books to all students. During the year under report, Text/Note books worth Rs 14.30 lakhs were purchased and freely distributed among the students of CIBS and its branches and feeder Gonpa/Nunnery schools located in different parts of the region.

20. Examination Result: The examinations from Class VI to Class VIII were conducted by the Institute and examinations from Purva Madhyama I to Acharya (M.A)II were conducted by the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi. The overall pass percentage of the examination was worked out to 83.33%. The result of each class of the academic year 2015-16 is placed as Annexure at page 36.

To improve the academic standard of the junior students necessary arrangements have been made to conduct the half yearly and the Annual Tests in June and November every year by the Institute.

21. Gonpa/Nunnery Schools:

To achieve its objectives, the Institute is running 50 Gonpa/Nunnery Schools in different monasteries which are extremely popular in the region. These schools are being run in collaboration with the respective monasteries, and accordingly, they arrange classrooms, hostel facilities and also provide ritual teachings. The Institute provides one to three teachers depending on the number of enrolment in a particular school. Besides, the furniture, stationeries, text books and note books and stipend to the students are being provided by the Institute. The teachers appointed by the Institute provide the modern

elementary education viz. Bhoti, Hindi, English, Mathematics, Social Studies etc., in addition to the monastic education. During the year under report, 903 students enrolled in the 50 Gonpa/Nunnery schools located in different monasteries of Ladakh. The school-wise and class-wise enrolment of the students for the year 2015-16 is placed as Annexure at page 37.

22. Annual Function: The 56th Annual Day of the Central Institute of Buddhist Studies was organized on 23rd October, 2015 on the Institute's Campus with great enthusiasm. The prizes were distributed among the position holders in the Annual Examination and in favour of the students who won in various competitions viz., essay competition, poem recitation competition, painting competition, lecture competition, sports activities, cultural activities, quiz competition etc. Shri Tashi Rabgais, an eminent Buddhist Scholar of the Himalayan region was the Chief Guest on the occasion and the prizes were distributed by him. A colorful Cultural Programme was presented by the students of the Institute on the occasion. The function was attended by many scholars, Guests of the Ladakh region in addition to the staff and students. The function was concluded with the singing of the National Anthem.

23. **Other Important Events**:

The following celebrations and activities were carried out in the Institute with great enthusiasm during the year under report:

i) **Birth Anniversary of Bharat Ratna Dr B.R. Ambedkar:**

124th Birth Anniversary of Bharat Ratna Dr. B.R. Ambedkar was celebrated on 14th April, 2015 in the Institute. The faculty members and senior students actively participated in the function and threw light on the life and achievement of Dr. B.R.Ambedkar. Easy and elocution competitions among the students were organized on the occasion. Prof. Konchok Wangdus, Director presided over the function.

ii) **Birth Anniversary of Dr RadhaKrishan**:

The Institute celebrated the birth anniversary of Dr Radhakrishan as Teachers' Day on 5th September, 2015. The teachers and students threw light on the life and achievement of Dr Radhakrishan. The teachers emphasized on the need of the students to

follow and implement the principles and ideas of Dr Radhakrishan in their life.

iii) **Hindi Divas:** The Institute celebrated the Hindi Divas on 14th September, 2015 by conducting various types of literary competitions viz. eassy writing, poem recitation, lecture delivery etc., in Hindi language. The prizes were distributed among the first, second and third position holders in the above competitions. Besides, the scholars delivered lectures on the importance and use of Hindi language.

iv) Bhum Recitation: The Institute organized Bhum Recitation on 10-04-2015 by involving the staff and students for peace and prosperity of all sentient beings in world. This arrangement has been made with the contribution of the staff and students.

v) Half - day ritual prayer was arranged by involving the staff and the students for the victims of earth quake disaster in Nepal and some parts of Northen India. The participants prayed for peace of the departed souls and for the early recovery of the affected people.

vi) Buddhist Chanting of Ladakh: The list of intangible cultural heritage was established by UNESCO, aiming to ensure the better protection of important intangible cultural heritage worldwide and the awareness of their significance. The programme for the list of intangible cultural heritage has been launched with an aim to draw attention to the importance of safeguarding intangible heritage, which has been identified by UNESCO as an essential component and a repository of cultural diversity and creative expression. The intangible cultural heritage (ICH), which is also called the living heritage, means the practice of representations, expression, knowledge, skills of a people as well as the instruments, objects, artifacts and cultural spaces associated with those communities /groups/individuals. Thus, ICH can be manifested, inter-ala, in any of the following domains: oral tradition and expressions including language, performing arts, social practices, rituals and festival events, knowledge and practices conserving nature and universe as well as traditional craftsmanship. Accordingly, the Government of India, Ministry of Culture entrusted the job to the Institute for preparation of the nomination dossier for Buddhist Chanting of Ladakh for inscription on UNESCO's representative list of intangible cultural heritage (second circle). The Institute prepared the nomination dossier in the shape of audio- visual documentation of 60

minutes duration and a shorter version of 10 minutes duration in digital video format in English, and presented the same before the UNESCO through the Model Agency IGNCA. UNESCO selected the Buddhist Chanting of Ladakh, recitation of sacred Buddhist texts in trans-Himalayan Ladakh to be included in the list of intangible cultural heritage of humanities. The Buddhist chanting of Ladakh comprised of the chanting of the following monasteries of Ladakh.

S.No	Name of Monastery	Theme of Chanting
1.	Hemis Gonpa	Rigma Chutuk
2.	Thiksay Gonpa	Shar-Kangri-ma
3.	Spituk Gonpa	Nas-Tans
4.	Pyang Gonpa	Chod
5.	Matho Gonpa	Kun-rig

vi) **Swachh Bharat Abhiyan**: The Govt. of India on the initiative of Hon'ble Prime Minister of India Shri Narandra Modi launched the Swachh Bharat Abhiyan with a view to make the whole country neat and clean. Accordingly, the Central Institute of Buddhist Studies, Leh keeping in view the initiative in mind, took up the assigned job to make neat and clean of the office, class room, campus and surrounding areas of the Institute by involving the staff and students on the following occasion.

i) World Environment Day on 5th June, 2015
ii) Birth Anniversary of Mahatama Gandhi on 2nd October, 2015

Besides, as per the framed calendar, the Institute took up the task of cleaning on monthly basis. Moreover, on weekly basis the faculty members delivering lecture to the students about the important of Swachh Bharat Abhiyan and also arranged various types of competitions viz, essay, poem recitation, lecture, painting etc., among the students on this theme during the year.

24.i) **Visit of U.G.C Expert Team :** TheU.G.C Expert Team headed by Prof. R.L Goddara, Vice Chancellor, North Gujurat University conducted its on- the- spot- visit from 25th to 26th June,2015 for conferment of deemed to be University status to CIBS, Leh. The other members of the team were Prof. Bimlender Singh, BHU; Prof. R.N.Singh Jammu University; Dr.Parasuraman, Director, Tata Institute

of Social Sciences; Prof Bhikshu Satpal, Delhi University; and A.K.Khanduri, Deputy Secretary, U.G.C. The team after thoroughly inspecting the academic and physical infrastructure, and after interacting with staff, students and alumni of the Institute, expressed their satisfaction over all activities, functions, physical and academic infrastructure, and accordingly, recommended for conferment of Deemed to be University status to CIBS, Leh. On the recommendation of the Expert Team of UGC, the Govt. of India, Ministry of Human Resource Development vide its notification No.9-5/2001-U3(A) dated 15-01-2016 conferred the status of Deemed to be University to CIBS, Leh.

25. **Project for Translation of Buddhist Philosophical Text**: Thousands of Buddhist Philosophical texts containing the teachings of Bhagwan Buddha and the books composed by the Indian and Tibetan scholars are available in Bhoti languages. The Non-Bhoti knowing scholars including researchers are unable to benefit themselves of these valuable books. Thus, the Institute has launched a small translation project to translate the Buddhist Philosophical Texts into Hindi for the benefit of the scholars, researchers and other interested people with the approval of the Board of Management of the Institute.

26**.** **Project of the Compilation of Encyclopedia of Himalayan Buddhist Culture**: The Board of Management of the Institute approved the project of the compilation of Encyclopedia of Himalayan Buddhist Culture. The project was initially approved for a period of five years and it has been proposed to compile the Encyclopedia in 10 volumes. The project is launched by engaging scholars on contractual basis. The project is in progress under the supervision of a Chief Editor assisted by two Editors and three Research Assistants. Two volumes of the Encyclopedia covering the Ladakh region have already been published. The works on other volumes are in progress. The Board of Management, CIBS, Leh in its meeting held on 19.12.2011 approved the extension of the project for a further period of five years keeping in view its significance.

27. **Rastriya Sanskriti Mela:** The Govt. of India, Ministry of Culture organized a Rastriya Sanskrit Mela by involing the different cultural organizations funded and working under Ministry of Culture apart

from cultural organizations of different states from 3rd November, 2015 to 6th November, 2015 at Indira Gandhi National Centre for Arts, New Delhi. The Institute also deputed a team of experts in the field of Arts and Craft. The Master Craft men of the Institute exhibited Thangka paintings and also demonstrated the art of Thangka painting. Besides, a book stall was installed for sell of the published books of the Institute.

28. Buddhist Festival at Kushinagar: As per direction of the Govt. of India, Ministry of Culture, a team of artists of the Institute took part in the Buddhist Festival organized by the Central University of Higher Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi w.e.f 24-11-2015 to 26-11-2015 with the components of exhibition, demostration and sale of Thangka Paintings depicting the arts and culture of the Himalayan region. A book stall was also opened for publicity and sale of the published books of the Institute.

29. Buddhist Festival at Bangalore: The Institute took part in the Buddhist Festival organized by Central Institute of Himalayan Studies, Arunachal Pradesh from 1-12-2015 to 4-12-2015 at Bangalore. The components of the Institute were exhibited, demonstrated and sold, which included Thangka Painting. Besides, the Institute arranged a Cham (Mask) dance by engaging experts from Sera Monastery. The programme was very successful.

30. Manuscripts Resource Centre:

The National Mission for Manuscripts, Govt. of India has designated CIBS, Leh as the Manuscripts Resource Centre and Manuscripts Conservation Centre for the Ladakh region. Accordingly, the Institute is carrying out the assigned job by engaging scholars on contractual basis. At present, seven Resource Persons are working on the project from March to November. The documented works are kept closed for three months from December to February due to severe cold weather. The Institute so far has documented about 30,807 manuscripts from 2,130 different Monasteries/Palaces/Individuals of Ladakh region. The Institute is trying to document all available manuscripts in the region. Besides, the Institute also carries out the conservation of rare manuscripts available in different monasteries of the region. So far, we have conserved 22,567 folios.

31. Placement of Students after obtaining their degree/diploma: The Institute provides the degree of Ph.D.; Acharya (equivalent to M.A) in Bhot Baudh Darshan, Sanskrit Baudh Darshan, Baudh Puranic History, Bhot Literature and Comparative Philosophy; Shastri (equivalent to B.A); Uttar Madyama (equivalent to +2), and Purva Madyama (equivalent to Matriculation) . Besides, Six Years' diplomas in Sowa Rigpa (Baudh Medical Science),Scroll Painting (Thangkas), Sculpture and Wood Carving are also being provided . It is observed that none of the students having obtained the above degrees from CIBS, Leh are without job. The students having passed their respective degrees/diplomas easily get appointments, especially in the Education Department of Jammu & Kashmir, Kendriya Vidyalaya, Navodaya Vidyalaya and Private Schools.The candidates having the above degrees/diplomas have good opportunity for appointment in the Department of Akashwani and Doordarshan, as they prefer for the candidates having good knowledge of the local language. The Institute feels proud that the Alumni of CIBS, Leh have good positions in the State and the Central Government Services recruited through Kashmir PSC and UPSC.The first ever Ladakhi Judge Hon'ble Tashi Rabstan appointed in the Jammu & Kashmir High Court studied in CIBS, Leh upto Uttar Madyama. Besides, the Alumni of the Institute are serving for the country in the Military and Para-Military forces all over India. Some Alumni of the Institute are working in the eminent Universities such as Vishva Bharati University,Shantinekatan; Jawahar Lal Nehru University, Delhi etc. There are numbers of officers in the police department of Jammu and Kashmir who have obtained degrees from the CIBS, Leh. The branch and feeder schools of CIBS, Leh are run by appointing the alumni of CIBS, Leh which help the preservation and promotion of the cultural heritage of the region.

The students having the diploma in Sowa Rigpa (Baudh Medical Science) have been engaged in the State Health Department under the "Centrally Sponsored Scheme," National Rural Health Mission, to look after the rural patients throughout the region. The students having diploma in Thangka Painting, Sculpture and Wood Carving are earning handsome amount by preparing the Thangkas,
Statues and Wood Carving works for the local people as well as tourists visiting Ladakh. Besides, the candidates having the above diplomas are appointed as Instructors in the organizations running similar courses.

In this way, thousands of students have passed and obtained the various degree/diploma from CIBS, Leh and none of them are found unemployed which is a great achievement of CIBS, Leh.

32. Duzin Photang School, Zanskar:

i) Brief History: In 1980, His Holiness Dalai Lama XIV paid his first visit to Zanskar on the invitation of the Buddhist Association, Zanskar and felt it necessary to open a school for the preservation of the rich culture of the area. Accordingly, he donated some funds to the Buddhist Association, Zanskar for the purpose. In September 1984, the Buddhist Association established a School at Duzin Photang for the benefit of the poor and needy students of the area. Initially, 101 students were admitted in the School and three teachers were also appointed. The hostel facilities were also provided to the students coming from far-flung areas. The Buddhist residents of Zanskar also donated funds for the improvement and upgradation of the School. H.H. the Dalai Lama, during his second visit to Zanskar in 1988, further donated funds for the development of the School. The Buddhist Association, Zanskar and the people of Zanskar had represented to the then Hon'ble Prime Minister of India, Mr. Rajiv Gandhi regarding the importance of the School with a request to take over the school by the Govt. of India on the pattern of the Central Institute of Buddhist Studies, Leh. The Hon'ble Prime Minister of India Shri Rajiv Gandhi paid his visit in March/April 1988 to Zanskar and decided that the Govt. of India would take over D.P.S. as a branch school of CIBS, Leh w.e.f. Ist November 1989. Since then, the School is being run under the financial and administrative control of CIBS, Leh-Ladakh. At present 295 students are on the roll of the School from Classes I to X. A campus consisting of teaching block, a small library, a multi - purpose Hall, Hostel for 100 students, some Staff Quarters and a play ground is available. It is one of the best campuses in the entire Zanskar valley. A bus is also available to lift the day scholars of the school. Zanskar valley is an isolated place even remains cut off from Leh and Kargil for about 6 to 7 months in a year during winter.

(ii) Examination Result : The annual examination of the students from class 1st to 8th of Duzin Photang School, Zanskar is being conducted by the School under the supervision of the Head Master.The annual examination of class IX and X are being conducted by

Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi through CIBS, Leh. An examination centre has been set up at Duzin Photang School, Zanskar keeping in view the hardship faced by the students for coming to Leh for examination purpose. The class-wise enrolment of students alongwith the result of each class for the academic year 2015-16 is placed as Annexure at page 40.

(iii) **Other activities :** The school is carrying out various co-curricular activities viz, Annual Sports- cum-Literary Competitions, Conduct of Educational Tours to visit the historical places/monasteries, celebration of birth anniversary of important national level personalities, conduct of monthly lecture competitions etc. Besides, the School has a small Library with good collection of books for the students.

iv) Staff strength: The staff strength of the Duzin Photang School for the year under report is placed as Annexure at page 41.

33. Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, District Lahoul & Spiti (H.P.)

(i) Brief History: The Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, Lahaul-Spiti (H.P) was established in the year, 1976 to preserve the most valuable Buddhist Arts, Culture and Language of the Himalayan region viz; Lahaul, Spiti, Kinnaur, Pangi, Kullu and Manali. Prior to 1959, Scholars, Novices and Monks of this area used to go Tibet to pursue higher Monastic Education which came to an end in 1959 due to historical reasons. Thus the Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong came into existence to continue the old age practice to provide monastic education to the young novices. Initially, the Vidyalaya was run with the funds raised by public donation. Subsequently, the Govt. of India, Ministry of Culture provided some financial assistance under the scheme of Financial Assistance for Development of Buddhist/Tibetan Organisations.The state Government of Himachal Pradesh also provided some financial assistances for it maintenance which was subsequently discontinued. The people of the region tried their best for the take over of the Vidyalaya as an Autonomous Organization of the Govt. of India on the pattern of Central Institute of Buddhist Studies, Leh and Central University of Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi. But, it could not be taken over as

an Autonomous Organization of the Govt. of India, Ministry of Culture. However recently, the Govt. of India, Ministry of Culture on the recommendation of the Board of Management, CIBS, Leh decided to take over the Vidyalaya as a branch School of CIBS, Leh on the pattern of Duzin Photang School, Zanskar. Accordingly, CIBS, Leh took over the Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, H.P. as a branch School from 5 March 2010 in pursuance to Govt. of India, Ministry of Culture's letter No.F.1-11/2004-BTI dated 05-03-2010. Since then the administration of the Vidyalaya is being looked after by CIBS, Leh with full financial support. At present 75 students are studying in the Vidyalaya from Class I to X. Consequent upon the take over as Branch School of CIBS, Leh, the number of students is likely to increase. The Vidyalaya is affiliated to the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi and the examination of the students is being conducted by the said University. There are one Headmaster, six Trained Graduate Teachers (TGTs), one Bhoti Teacher, one Buddhist Philosophy Teacher, one UDC and three Class-IV employees are working in the Vidyalaya. The Central Institute of Buddhist Studies, Leh is providing the salaries of the Staff, stipend to the students, furniture/furnishing items and other day-to-day expenditure of the Vidyalaya on the pattern of Duzin Photang School, Zanskar. Subsequently the Board of Management decided to shift the Vidyalaya to Mandoglu, Mandi, H.P. Where rent free accommodation is provided by the Drigung Kagyud Society.

(ii) Examination of BDSV, Keylong: The Annual Examination of Class-VI to VIII of the Vidyalaya is being conducted under the supervision of the Headmaster of the said Vidyalaya. The Annual Examination of class-IX and X is being conducted by the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi to whom the Vidyalaya is affiliated. The Class-wise enrolment of students alongwith the result of each class for the Academic Year 2015-16 is placed as Annexure at page 42.

(iii) Staff Strength: The staff strength of the Bauddha Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, H.P is placed as Annexure at page 43.

Annexures I

i) Composition of Board of Management,CIBS, Leh.

S.No.	Name and Address	Position
1.	Ms.Arvind Manjit Singh Joint Secretary to the Govt. of India Ministry of Culture, New Delhi	Chairperson
2.	Shri Saugat Biswas Deputy Commissioner/Chief Executive Officer, LAHDC,Leh.	Vice Chairman
3.	Prof. R.K. Diwedi (Nominee of the Vice-Chancellor of the University to which the Institute is affiliated)	Member
4.	Mrs. Mahalakshmi Ramakrishanan Director (Finance) Ministry of Culture Govt. of India, New Delhi	Member
5.	One Representative of the Ministry of External Affairs	Member (Ex – Officio)
6.	Director/Deputy Secretary to the Govt. of India,Ministry of Culture,(Dealing with affairs of the Insitute)	Member (Ex – Officio)
7.	Chief Education Officer, Leh (Representative of Education Deptt. Govt. of J&K)	Member (Ex-Officio)

8. Geshe Lobzang Samsten, President — Member
All Ladakh Gonpa Association, Leh
(Representative of All Ladakh Gonpa Association, Leh)

9. Shri.Tsewang Thinley, President — Member
Ladakh Buddhist Association, Leh
(Representative of Ladakh Buddhist Association, Leh)

10-12 Three Buddhist Scholars nominated by Govt. of India.

i) Prof.Nawang Samten — Member
Former Vice-Chancellor
Central University of Tibetan Studies
(CUTS), Sarnath, (U.P)

(ii) Dr.Ravindra Panth — Member
Director, Nav Nalanda Mahavihara
Nalanda

(iii) Rev.Vimalatisa Bhikhu — Member
Village: Chongkham, PO.Chongkham
Distt.Lohit, Arunachal Pradesh

13. Staff Representative nominated by Govt. of India

14. Prof. Konchok Wangdu, Director — Member- Secy
CIBS, Leh

Annexture II

ii) Composition of Academic Committee

S.No.	Name and Address	Position
1	Prof. Yeshe Thapkas, Central University of Tibetan Studies, Sarnath	Chairperson
2-5.	One Representative each from 4 major sects of Mahayana Buddhism in Ladakh	
	1) Prof. Jamyang Gyaltsan	Members
	2) Dr.Urgyan Dadul	
	3) KhanpoTsewang Rigzin	
	4) Prof. Konchok Wangdu	
6.	Prof. Satya Pal, Head Department of Buddhist Studies University of Delhi, Delhi	Member
7.	Prof. R.K.Dwivedi Prof. and Head Department of Buddhist Philosophy S.S.University, Varanasi	Member
8.	Prof. B.N. Labh, Head Department of Buddhist Studies Member Jammu University, Jammu	
9.	Prof. Sonam Gyatso Central University of Tibetan Studies, Sarnath	Member

10. Dr.Tashi Paljor,Ex-Principal,CIBS — Member
Maitri Niwas, Bhajogi
P.O. Manali, Distt. Kullu (H.P)

11. Prof. Konchok Wangdu, Director,
CIBS,Leh

Member-Secretary

Annexure III

iii) Composition of Finance Committee,CIBS, Leh

S.No.	**Name and Address**	**Position**
1.	Mrs. Mahalakshmi Ramakrishanan Director (Finance) Ministry of Culture Govt. of India New Delhi	Chairperson
2.	Shri S.K.Arya Deputy Secretary (Dealing with affairs of the Institute) Ministry of Culture Govt. of India, New Delhi	Member
3.	Prof. Konchok Wangdu Director CIBS,Leh	Member
4.	Shri.Tsering Mutup Administrative Officer, CIBS, Leh	Member- Secretary

Annexure IV

iv) Composition of Publication Committee, CIBS, Leh

S.No.	Name and Address	Position
1.	Prof. Konchok Wangdu Director, CIBS, Leh	Chairperson
2.	Dr Padmakar Mishra Publication in-Charge S.S.University, Varanasi	Member
3.	Chief Editor Translation Unit Central University of Tibetan Studies Sarnath, Varanasi (U.P)	Member
4.	Khanpo Konchok Phandey Leh, Ladakh	Member
5.	Dr Lobzang Tsewang Former Professor, Comparative Philosophy CIBS, Leh	Member
6.	Dr Konchok Rigzen Research Officer, CIBS, Leh	Member
7.	Shri Tsering Mutup Administrative Officer CIBS, Leh	Member-Secretary

Annexure V

v) Composition of Library Committee, CIBS, Leh

S.No.	Name and Address	Position
1	Prof. Konchok Wangdu Director CIBS, Leh	Chairperson
2.	Librarian District Library, Leh	Member
3.	Dr Tashi Samphel Director, Srongtsan Library, Dehradun	Member
4.	Rev Lagdor Director, Tibetan Library and Archives Dharamsala (H.P)	Member
5.	Smt.Tsewang Dolma Library & Information Officer, CIBS, Leh	Member-Secretary

Annexure VI

vi) Composition of Research Committee, CIBS, Leh

S.No.	Name and Address	Position
1.	Prof. R.K. Dwivedi Prof. and Head Department of Buddhist Philosophy S.S.University, Varanasi	Chairperson
2.	Prof. Pradyumna Dubey Professor of Pali & Buddhist Studies B.H.U., Varanasi	Member
3.	Dr. Hira Pal Gang Negi Associate Professor University of Delhi, Delhi	Member
4.	Prof. Jamyang Gyaltsan Former Professor of Bhot Literature CIBS, Leh.	Member
5.	Dr. L.N. Shastri Chief Editor Central University of Tibetan Studies Sarnath, Varanasi (U.P)	Member
6.	Prof. Konchok Wangdu Director, CIBS, Leh	Member-Secretary

Annexure VII

vii) Staff Strength category-wise of CIBS, Leh

A. ACADEMIC POSTS

S.No	Name of Post	Pay Band & Grade Pay	Sanction post	Filled up	Vacant
1.	Director	37400-67000 +10000	01	01	-
2.	Professor	37,400-67000+ 8900	04	03	01
3.	Reader	15600-39100 +7600	10	07	03
4.	Lecturers	15600-3910+5400	23	23	-
5.	Master Craftsman	15600-3910+5400	01	01	-
6.	T.G.T	9300-34800+4600	12	09	03
7.	Instructor(WC)	5200-20200+2800	01	01	-
8.	Gonpa Teacher	5200-20200+2800	100	90	10
B. NON TEACHING STAFF					
1.	Adm.Officer	15600-39100 +6600	1	1	-
2.	Addl. Adm.Officer	-do-	1	1	-
3.	Office Superintendent	9300-34800+4200	1	1	-
4.	Accountant	9300-34800+4200	1	1	-
5.	Staff Nurse	9300-34800+4200	1	1	-
6.	P.A	9300-34800+4200	1	1	-
7.	Head Assistant	9300-	1	1	-

		34800+4200			

8.	Stenographer	5200 20200+2800	1	1	-
9.	Office Assistant	5200-20200+2400	4	4	-
10.	Cashier	5200-20200+2400	1	1	-
11.	Store Keeper	5200-20200+2400	1	1	-
12.	LDC	5200-20200+1900	1	1	-
13.	Pump-Operator	5200-20200+2400	1	1	-
14.	Driver	5200-20200+2400	2	2	-
15.	Guards Commander	5200-20200+2400	1	1	-
16.	Sr.Guardsman	5200-20200+1900	1	1	-
17.	Guardsman	4440-7440+1300	4	4	-
18.	Jamadar	4440-7440+1400	1	1	-
19.	Peon	4440-7440+1300	6	5	1
20.	Hostel Cook	4440-7440+1300	4	3	1
21.	Hostel Bearer	4440-7440+1300	1	1	-
22.	Canteen bearer	4440-7440+1300	1	1	-
23.	Mali	4440-7440+1300	1	1	-
24.	Safiawala	4440-7440+1300	3	3	-
C. LIBRARY STAFF					
25.	Library and information Officer	15600-3910+5400	1	1	-
26.	Asstt.Editor Cum Cataloguer	9300-34800+4200	1	-	1
27.	Library Information Assitt.	9300-34800+4200	1	1	-
28.	Library Attendent	4440-7440+1300	1	1	-
D.RESEARCH WING					
29.	Research Officer	15600-3910+5400	1	1	-
30.	Translator	9300-34800+4600	1	1	-

Annexure VIII

viii) Result of the students of the CIBS, Leh for the year 2015-2016

S.No.	Class	No of Students enrolled	Appeared	Passed	Pass%
A	**University Classes**				
1.	P.M.I	92	88	54	61.36%
2.	P.M.II	57	55	50	90.90%
3.	U.M.I	42	42	35	83.33%
4.	U.M.II	65	65	60	92.30%
5.	Shastri I	52	52	39	75%
6.	Shastri II	40	39	39	100%
7.	Shastri III	08	08	08	100%
8.	Acharya I	21	21	20	95.23%
9.	Acharya II	16	15	15	100%
	Total	393	385	320	83.11%
B	**Traditional Himalayan Arts.**				
1.	Wood carving	7	7	7	100%
2.	Sculpture Course	11	11	11	100%
3.	Amchi Course	33	28	22	78.57%
4.	Painting Course	21	21	20	95.23%
5.	Astrology Course	2	2	02	100%
	Total	74	69	62	89.85%
C.	**Junior Wing**				
1.	VI	69	63	42	66.66%
2.	VII	60	54	43	79.62%
3.	VIII	102	99	88	88.88%
	Total:	231	216	173	80.09%
Grant Total	**A+B+C**	**698**	**670**	**555**	**82.83%**

Annexure IX

ix) School-wise and class-wise enrolment of students of the Gonpa/Nunnery schools of CIBS for the year 2016

S.No.	Name of Gonpa/Nunnery School	Class-wise total enrollment							No. of Teacher sPosted.
	GONPA SCHOOLS	**1st**	**2nd**	**3rd**	**4th**	**5th**	**6th**	**Total**	
1.	Hemis Gonpa School	12	12	16	23	23	11	97	4
2.	Shachukul Gonpa School,Changthang	03	07	04	03	06	09	32	3
3.	Chemdday Gonpa School	-	04	10	-03	04	-	21	2
4.	Anlay Gonpa School	01	01	04	03	04	-	13	2
5.	Karma Dupgyud Chosling Gonpa School	-	02	06	03	02	-	13	2
6.	Likir Gonpa School	08	08	02	04	08	-	30	3
7.	Thiksay Gonpa School	02	-	04	04	03	-	13	2
8.	Samstanling Gonpa School	-	03	02	01	02	-	08	2
9.	Spituk Gonpa School	07	04	06	03	07	-	27	2
10.	Phyang Gonpa School	05	04	-	03	-	-	12	2
11.	Gyudzin Tantric Gonpa School	03	-	02	07	-	-	12	1
12.	Matho Gonpa School	-	05	01	02	01		09	1
13.	Hanuthang Gonpa School	05	02	-	01	-	-	08	1
14.	Stakna Gonpa School	02	-2	01	-	01	-	06	1

15	Skurbuchan Gonpa School	-	01	04	01	04	-	10	1
16.	Muth Gonpa School	02	-	01	02	-	-	05	1
17.	Nyoma Gonpa School	02	08	01	-	02	-	13	2
18.	Chushul Gonpa School	03	03	07	-	-	-	13	2
19.	Rezong Gonpa School	02	03	06	06	05	-	22	2
20.	Disket Gonpa School	03	04	02	-	04	-	13	1
21.	Yarma Gonbo Gonpa School	-	-	01	03	03	-	07	1
22	Bardan Gonpa School	10	10	01	04	-	-	25	1
23	Korzok Gonpa School	09	01	-	02	05	-	17	2
24	Karsha Gonpa School	03	02	06	09	03	-	23	2
25	Lamayuru Gonpa School	02	03	-	06	08	-	19	2
26	Phukthar Gonpa School	-	12	05	13	10	07	47	3
27	Rangdum Gonpa School	03	11	-	04	04	-	22	2
28	Muney Gonpa School	-	04	05	08	03	-	20	1
29	Zongkhul Gonpa School	05	-	04	-	-	-	09	1
30	Stongday Gonpa School	04	05	03	-	-	-	12	1
31	Stagrimo Gonpa School	04	03	02	03	02	-	14	1
32	Paldar Gonpa School	04	03	04	02	04	-	17	3
33	Key Gonpa School	-	-	05	10	08	-	23	2
34	Tangyud Gonpa School	-	-	03	10	05	-	18	2
35	Nalanda Gonpa School	04	04	05	06	-		19	2

NUNNERY SCHOOL

36	Tingmosgang Nunnery School	-	01	06	02	-	-	09	1
37	Skitmang Nunnery School	02	02	02	02	04	-	12	2
38	Chulechan Nunnery School	-	07	06	02	01	-	16	2
39	Bodh Kharbu Nunnery School	04	01	02	-	03	-	10	1
40	Wakha Nunnery School	-	01	-	02	02		05	1
41	Shargol Nunnery School	01	03	02	01	01	-	08	2
42	Zangla Nunnery School	07	-	01	01	01	-	10	1
43	Karsha Nunnery School	07	02	02	04	01	-	16	1
44	Tashi Chosling Nunnery School	02	07	05	01	04	-	19	2
45	Sakya Nunnery School	04	04	05	-	03		16	2
46	Yangchen Chosling Nunnery School	02	04	11	-	12	-	29	2
47	Tungri Nunnery School	05	02	02	05	04		18	2
48	Dorge Zong Nunnery School	06	-	09	-	-	-	15	1
49	Fokmoling Nunnery School	07	06	13	-	-	-	26	2
50	Deachen Cholling Nunnery	-	-	**25**	-	-	-	25	2
	Grand Total:	**155**	**171**	**214**	**169**	**167**	**27**	**903**	**87**

Annexure X

x) Result of the students of Duzin Photang School, Zanskar,Leh-Ladakh for the year 2015-2016

S.No.	Class	No. of students enrolled	Appeared	Passed	Pass %
1.	1st	69	69	60	86.95%
2.	2nd	32	32	29	90.62%
3.	3rd	24	22	18	81.81%
4.	4th	19	19	18	94.73%
5.	5th	29	26	23	88.46
6.	6th	34	34	23	67.84%
7.	7th	26	26	23	88.46%
8.	8th	23	23	21	91.30%
9.	9th	19	19	15	78.94%
10.	10th	20	19	18	94.73%
	Total	**295**	**289**	**248**	**85.81%**

Annexure XI

xi) The staff strength of the Duzin Photang School, Zanskar

S.No	Teaching Staff	Grade	Sanction post	Position	Vacant
1.	Headmaster	9300-34800+4800	1	1	-
2.	T.G.T.	9300-34800+4600	7	7	-
3.	Primary Teacher	5200-20200+2800	5	5	-
4.	PET(Contractual)	17,140(fixed)		1	
B. NON- TEACHANG STAFF					
1.	UDC(contractual)	9,910 (Fixed)	-	1	-
2.	Cook	4440-7440+1300	1	1	-
3.	Peon	4440-7440+1300	1	1	-
4.	Driver(Contractual)	8510(Fixed)		1	-
5.	Mali	4440-7440+1300	1	1	-
5.	Chowkidar	4440-7440+1300	1	1	-

Annexure XII

xii) Result of the Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya, Mandagalu, Lahaul & Spiti, H.P. for the year 2015-2016

S.No.	Class	No. of Students enrolled	Appeared	Passed	Pass %
1.	1st	6	New admission	New admission	New admission
2.	2nd	4	-do-	-do-	-do-
3.	3rd	10	-do-	-do-	-do-
4.	4th	11	-do-	-do-	-do-
5.	5th	11	-do-	-do-	-do-
6.	6th	20	-do-	-do-	-do-
7.	7th	5	-do-	-do-	-do-
8.	8th	3	02	02	100%
9.	9th	3	New admission		New admission
10	10th	2	01	01	100%
	Total	**75**	-	-	-

Annexure XIII

xiii) The Staff Strength of the Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya, Mondagalu, H.P.

S.No	Teaching Staff	Pay Band + Grade pay	Sanctioned post	Position	Vacant
1.	Headmaster	9300-34800+4800	1	-	1
2.	T.G.T	9300-34800+4600	8	8	-
3.	Phy Ed.Teacher	9300-34800+4600	1	1	-
4.	**NON TEACHING STAFF**				
5.	U.D.C	5200-20200+2400	1	1	-
6.	Class-IV	4440-7440+1300	3	3	-

Central Institute of Buddhist Studies
Choglamar, Leh-Ladakh (J&K)
(Accredited by NAAC with "A" Grade)

1. Introduction:

i) Brief History: The Central Institute of Buddhist Studies, Leh-Ladakh is a research Institute. Formerly the School of Buddhist Philosophy, it was established at the behest of late Pt. Jawahar Lal Nehru in the year, 1959 with the active cooperation of Rev.Kushok Bakula Rinpoche. In 1962, the Ministry of Culture, Govt. of India, took up the financing of the Institute. It was later raised to the level of a degree and postgraduate Institute affiliated to Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi, U.P. Subsequent of the Govt. of India, Ministry of Human Resource Development (Department of Higher Education) vide their Notification No.F.9-5/2001-V3(A) dated 15.01.2016 declared as Deemed to be University. The Institute is managed by a Board of Management, with the Joint Secretary to the Govt. of India, Ministry of Culture as its Chairperson.

ii) Objectives: The core objective of the Institute is to develop the multifaceted personality of the students through inculcation of the wisdom of Buddhist thought and literature as well as to familiarize them with modern subjects, collections, translation, publication of rare manuscripts and research work relevant to Buddhist studies.

iii) Education Programme: To achieve its aims and objects, the Institute is actively imparting education in all spheres of Buddhist studies to young Lamas and other interested students. The basic focus is on the Buddhist Philosophy taught through Bhoti language. However, keeping in view the need to expand the horizons of knowledge general subject are also taught. Besides,6 years courses are offered to students interest in Sowa Rigpa (Bhot Chikitsa), Astrology, Tibetan Scroll Painting, Sculpture and Wood Carving to preserve the rich cultural heritage of the region. At present 167 students are studying in lower classes in the Old campus and 564 students are studying in under Graduate and Post-Graduate Department of Baudh Darshan, Bhot Baudh Darshan, Bhot Literature, Baudh Puranic History, Comparative Philosophy and traditional courses in the New Campus. Out of total strength of 731 students 675 students are being paid stipend ranging from Rs.820/= to Rs.1020= p.m. The Institute offers fellowship to Eight Research Scholars working for the award of Doctorate in the field of Buddhism.

2. Branch and Feeder Schools:

i) Duzin Photang School, Zanskar: The School was taken over as branch School of CIBS, Leh on 1st of November, 1989 on the direction of Shri Rajiv Gandhi then Prime Minister of India after his visit to Zanskar. At present, 347 students are on the roll from Class I to X and one Headmaster assisted by Seven TGTs and Five Primary Teachers have been appointed. The School has own small campus on three acres land with proper Class-Room, Library, Staff Quarters and Hostel for 100 students. The Students are being paid stipend ranging from Rs.820/= to Rs.900/= p.m.

ii) Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong: The Govt. of India, Ministry of Culture on the recommendation of the Board of Management of the Institute decided to take over the Baudh Darshan Sanskrit Vidyalaya, Keylong, Lahaul & Spiti as branch School of CIBS,Leh on 5th March, 2010. One Headmaster, Nine TGTs, One UDC and Three Class-IV employees are working in the Vidyalaya. At present the Vidyalaya is running at Mandogulu where sufficient accommodation provided by the Drigung Kagyud Othsaling Monastery for Class-Room and Hostel free of charges. Presently 75 students from Class 1st to 10th are studying in the said Vidyalaya. Stipend ranging from Rs.820/= to Rs.900/= p.m. being paid to each student.

iii) Feeder Schools: To achieve its objectives, the Institute is running 50 Gonpa/Nunnery Schools in different Monasteries/Nunneries which are extremely popular in the region. These schools are being run in collaboration with the respective Monasteries and accordingly, they arrange Class-Rooms, Hostel facilities and also provide ritual teachings. The Institute provides one or two teachers, furniture, stationery, Text Books and stipend @ Rs.940/= per student per month is being paid. The teacher provide by the Institute teaches the modern elementary education in addition to the monastic education provided by the Monasteries. At present 903 students are on roll in the Gonpa/Nunnery Schools from Class-I to V.

3. Library and Museum:

The Library is a vital organ of the Institute in which not only the students and teachers, but also other members of the Institute depend upon for seeking information and wisdom. A large number of domestic as well as foreign tourists visit the Library. The Library has been computerized by installing the SLIM Thumi Software. There are three section of Library Viz; General Section, Sungbum Section and Reference Section. The collection of 32,242 books in Bhoti, English, Hindi, Sanskrit, Pali and Urdu comprising books on Religion, History, Philosophy, Literature etc. are available. Besides, a number of Journals, Magazines and News papers are subscribed for the Library every year. Besides, the Institute has built up a modest Archaeological Museum with a good collection of antiquities and other art objects.

4. Project:

i) Encyclopedia: The Board of Management of the Institute approved the project of compilation of an Encyclopedia of Himalayan Buddhist Culture. Two Volumes on Ladakh has been completed and published. Three volumes on Lahaul-Spiti region and Kinnaur District of Himachal Pradesh has been compiled and ready to publish.

ii) Publication: The Institute has published 82 rare and valuable books so far which are being sold on a no profit no loss basis. During the year, the Institute published Five books entitled ***"History of Ladakh in Bhoti, Ladakh Prabha-19, Tibetan Synnonyms, Dharma- Pada and History of Ladakh in Hindi".***

5. Academic Activities:

i) Annual Examination: The examination of lower classes were conducted by the Institute and examination of 2nd year of the Under Graduate and Post-Graduate were conducted by the Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi. However, consequent upon the declaration the Institute as Deemed to be University, the examination system of the various courses switched over to Semester System and accordingly, the 1st years of the Under Graduate and Post-Graduates courses were conducted by the Institute. The overall result of the students for the year worked out was 82.83%.

ii) Seminar: The Institute organized four days National Seminar on the subject **"Four Noble Truth"** from 23rd to 26th August, 2016 at Acharya Nagarjuna Auditorium of the Institute. Scholars from all over India invited and presented their valuable papers on the occasion. The Seminar was inaugurated by H.E.Galden Tri Rinpoche

iii) Workshop on continuing Medical Education: The Department of Sowa Rigpa of this Institute with financial support of Govt. of India, Ministry of AYUSH organized six days workshop w.e.f. 20-25th September, 2016. Scholars from various Institution were invited as Resource Persons and presented their valuable paper and also demonstrate the treatment. 70 Sowa Rigpa Doctors and students benefited with the workshop.

iv) Training: Tow days Teachers Training for Gonpa and Nunnery School of the Monasteries/Nunneries was organized in collaboration with Leh Nutrition Project (LNP) financed by the UNICEF on the subject Child Protection and corporal punishment. Three experts from UNICEF invited as Resource Person and provide the training in which 65 Teachers and 35 Monastery Managers actively participated from 28.9.2916 to 29.9.2916.

v) Manuscript Resource and Conservation Centre: The National Mission for Manuscript, Govt. of India designated the CIBS, Leh as the Manuscript Resource Centre and Manuscript Conservation Centre for Ladakh region. Accordingly, the Institute is carrying out the assigned job by engaging scholars on a contractual basis. The Institute is trying to document all available manuscripts in the region. A field Laboratory has also been set up for conservation of Manuscripts and a number of damaged Manuscripts from famous Hemis Monastery have been conserved.

6. Contact Details:

i)	**Website :**	**www.cibs.ac.in**
ii)	**Tel:**	**01982-264437**
iii)	**Fax:**	**01982-264391**
iv)	**ID Mail**	**cibsladakh@gmail.com**

****

dUnh; cks) fo|k lLFkku dh xfrfof/k;ksa dk lf{kIr fooj.k

1- ifjp;

d! lf{kIr "fr#kl कैन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह–लदाख एक अनुसन्धान संस्थान है। इस (पूर्व नाम –बौद्ध दर्शन महाविद्यालय) की स्थापना माननीय कु ोक बकुला के प्रयास एवं स्वर्गीय प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरु के सहयोग से सन् 1959 में की गयी थी, जिसका पंजीकरण जम्मू और क मीर पंजीयन अधिनियम एक्ट 1941 के अधीन किया गया। सन् 1962 में भारत सरकार के तत्कलीन शिक्षा एवं संस्कृति मन्त्रालय के अधीन संस्कृति विभाग ने संस्थान के वित्त–प्रबन्ध का कार्य अपने हाथों में ले लिया। कक्षाओं का स्तर स्तानक एवं स्नातकोत्तर तक बढ़ने पर इसे सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि वविद्यालय (उ.प्र.) से सम्बद्धता प्राप्त हुई। संस्थान का प्रबन्धन भारत सरकार के संयुक्त सचिव/अतिरिक्त सचिव की अध्यक्षता में गठित एक प्रबन्ध–समिति द्वारा किया जाता है।

$k! %nn'; संस्थान का मुख्य उद्दे य छात्रों के युवा मस्तिष्क में बौद्ध विद्या, साहित्य एवं कला का समावेश कर उनके बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास करना है। इसके अतिरिक्त उन्हें आधुनिक विषयों, संग्रह, अनुवाद, दुर्लभ ग्रन्थों के प्रका ान तथा बौद्ध अध्ययन से सम्बन्धित शोधकार्यों से परिचित कराना है।

x! f'k{kk dk dk;)* इन उद्देश्य की प्राप्ति हेतु संस्थान बौद्ध अध्ययन की सभी आधारभूत ि ाक्षाएं युवा लामाओं एवं अन्य इच्छुक छात्रों कों प्रदान करता है। भोटी भाषा के माध्यम से बौद्ध दर्शन के अध्ययन पर विशेष बल है। साथ ही छात्रों के ज्ञान के क्षेत्रों में अधिक विकास हेतु सामान्य विषयों का भी अध्ययन कराया जाता है। इसके अतिरिक्त क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की रक्षा हेतु माध्यमिक कक्षा उत्तीर्ण इच्छुक छात्रों को सोवा रीगपा (भोट चिकित्सा),ज्योतिष, पारम्परिक थंका/चित्रकला, पारम्परिक मूर्ति–कला,

पारम्परिक काष्ठकला के छःवर्षीय पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाता है। वर्तमान में संस्थान के पुराने परिसर में निचली कक्षाओं में 137 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं तथा वि ववविद्यालय की कनिष्ठ कक्षा स्नातक के निचे और बौद्ध दर्शन, भोट बौद्ध दर्शन, भोट साहित्य, बौद्ध पौराणिक इतिहास, तुलनात्मक दर्शन से नीचे की कक्षाओं, आचार्य (स्नातकोत्तर) विभागों में तथा पारम्परिक पाठ्यक्रमों में 564 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। कुल 731 विद्यार्थियों में से 675 विद्यार्थियों को प्रति महीना रू. 820 से रू. 1020 तक की छात्रवृत्ति दी जाती।

२. ॹkk$kk fo|k,; rFkk -h.j Ld/,
d! .f1x -k2x Ld/, 3.h4ih45l! 1Ldj तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी के जंस्कर का दौरा करने के बाद उनके निर्देशानुसार दिनांक 1 नवम्बर 1989 को डुजिंग फोटंग स्कूल को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह ने अपने शाखा विद्यालय के रूप में लिया। वर्तमान में इस विद्यालय में कक्षा प्रथम से दसवीं कक्षा तक कुल 347 विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। एक प्रधानाध्यापक, उनके सहयोग के लिए सात टी.जी.टी, पांच प्राथमिक अध्यापक नियुक्त किये गए हैं। विद्यालय के तीन एकड़ क्षेत्रफल की भूमि पर अपना छोटा सा परिसर है, जहाँ पर कक्षाएं, पुस्तकालय, कर्मचारी आवास, एकसौ विद्यार्थी बैठ सकने वाले छात्रावास भवन है। यहाँ के विद्यार्थियों को प्रति महीना रू.820 से रू.900 तक की छात्रवृत्ति दी जाती है।

$k! ck) n'ku lLdr fo|k,;7 d,kx 35p-ih-!

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह की प्रबन्धकारिणी की संस्तुति के आधार पर इस विद्यालय को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह के शाखा विद्यालय के रूप में अपने अधीन लेने का निर्णय लिया है। तदनुसार बौद्ध द र्शन संस्कृत विद्यालय, केलांग (हि.प्र.) को केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह ने दिनांक 5.मार्च 2010 को अपने शाखा विद्यालय के रूप में ले लिया। एक प्रधानाध्यापक, नौ टी.जी.टी, एक कार्यालय सहायक और तीन चपरासी इस विद्यालय में कार्य कर रहे हैं। वर्तमान में यह विद्यालय मनडुकुलु में चलाया जा रहा है, जहॉ पर कक्षा एवं छात्रावास के लिए ड्रीगुङ काग्युद ओदसल–लीङ गोनपा द्वारा प्रर्याप्त कमरें नि ुल्क प्रबन्ध कर रहा है।

वर्तमान में 75 छात्राए कक्षा एक से दासवीं तक अध्ययन कर रहे है। हरेक विद्यार्थियों को प्रति महीना रू.820 से रू.900 तक की छात्रवृत्ति दी जाती है।

8k! -h.j Ld, 3xkuik9uujh Ld,! अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु यह संस्थान विभिन्न गोनपाओं में 50 गोनपा/श्रामणेरी विद्यालय चला रहा है जो इस प्रदेश में प्रसिद्ध हैं। ये विद्यालय सम्बन्धित गोनपाओं के सहयोग से चलाये जा रहे हैं। तदनुसार उक्त गोनपा कक्षाओं एवं छात्रावास की सुविधाओं के साथ–साथ धार्मिक विधियों की शिक्षा प्रदान करते हैं। संस्थान की ओर से प्रवे ा लिए गए छात्रों की संख्या के आधार पर विद्यार्थियों के लिए एक से तीन शिक्षक की व्यवस्था की जाती है। इस के अतिरिक्त साज–सामान, लेखन–सामग्री, पाठ्यपुस्तक एवं कापी और प्रति विद्यार्थी को हर महीना रू. 940/= छात्रवृत्ति दी जाती है। संस्थान द्वारा नियुक्त ि ाक्षक विद्यार्थियों को गोनपा–विषयक ि ाक्षा के साथ–साथ अन्य आधुनिक प्रारम्भिक ि ाक्षा प्रदान करते हैं। वर्तमान में गोनपा/श्रामणेरी विद्यालयों में कक्षा प्रथम से पाँचवीं तक कुल 903 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं।

:- iLrdk,; ;kj lx#k,;

संस्थान का एक महत्वपूर्ण अंग इसका पुस्तकालय है। छात्र एवं अध्यापक ही नहीं अपितु संस्थान के अन्य सदस्य भी सूचना एवं ज्ञान की प्राप्ति हेतु इस पर निर्भर रहते हैं। बड़ी संख्या में दे ाी एवं विदे ाी पर्यटक भी इस पुस्तकालय में आते रहते हैं। संस्थान के पुस्तकालय को नये परिसर में स्थानान्तरित कर लिया गया है, जिसके लिए तीन–मंज़िला पृथक भवन बना है। पुस्तकालय को 'स्लिम थुमी सॉफ़्टवेअॅर' लगाकर 'कॅम्प्यूटाराइज' किया गया है। इस पुस्तकालय में तीन विभाग हैं– (1) सामान्य विभाग, (2) भोट अथवा सुंगबुम विभाग और (3) सन्दर्भ विभाग। इस पुस्तकालय में कुल 32,242 ग्रन्थ भोटी, अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत, पालि तथा उर्दू भाषाओं में धार्मिक, ऐतिहासिक, दा ार्निक, काव्य एवं सामाजिक विषयों पर उपलब्ध हैं। इस के अतिरिक्त पुस्तकालय प्रति वर्ष अनेक पत्रिका तथा समाचार पत्रों का ग्राहक बनता है। इस के अतिरिक्त संस्थान ने एक छोटा पुरातात्विक संग्रहालय स्थापित किया है, जिस में विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों से प्राप्त पुरातात्विक अव ोा ों का संचय कर इस संग्रहालय में स्थापित किया गया है।

<-ifj;k1uk5

d! fo'o4dk'k संस्थान की प्रबन्ध–समिति ने हिमालयी बौद्ध–संस्कृति–विश्व कोश के निर्माण की परियोजना का अनुमोदन किया है और इस वि व कोश के दो खण्ड़ों को प्रकाशित किया है, जो लदाख क्षेत्र से सम्बन्धित हैं। अब हिमाचल प्रदे ा के लहोल–स्पिति और कीनौर जिलों से सम्बन्धित तीन खण्ड प्रका ान के लिए तैयार है।

$k! idk'ku संस्थान ने अब तक 82 दुर्लभ तथा अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रका ान किया है, जिन्हें न लाभ, न घटा के आधार पर बेच रहा है। इस वर्ष के दौरान संस्थान ने » ,nk$k dk "fr#kl 3?kk2h *!7 ,nk$k i?kk41@7 frAcrh l*kuFkh7 /kB*in rFkk ,nk$k dk "fr#kl 3f#Unh *!7 CC इन पाँच ग्रन्थों का प्रका ान किया।

D- Ekf{kd xfrfof/k;k

d! okf"kZd ijh{kk संस्थान के कनिश्क कक्षाओं की परिक्षाएँ संस्थान द्वारा आयोजित की गई, जब कि स्नातक तथा स्नातकोत्तर के द्वितीय वर्श के कक्षाओं की परीक्षाएँ सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि वविद्यालय,वाराणसी द्वारा संचालित की गई। यद्यापि इस संस्थान को समवत वि वविद्यालय घोशित करने के फलस्वरूप सभी पाठ्यक्रमों की परीक्षा प्रणाली को अर्द्धवार्शिक पाठ्यक्रम प्रणाली में परिवर्तित किया गया है। तद्नुसार स्नातक तथा स्नातकोत्तर के प्रथमवर्श के कक्षाओं की परीक्षाएँ संस्थान द्वारा आयोजित किया गया। इस वर्श के विद्यार्थियों के कुल परीक्षाफल 82.83 प्रति ात रहा।

$k! lxkfoH संस्थान ने दिनांक 23 अगस्त से 26 अगस्त, 2016 तक »pkj ;k;kll;CC विशय पर चार दिवसीय अखिल भारतीय परिसंवाद संगोश्ठी का आयोजन आचार्य नागार्जुन सभा–भवन में किया। भारत के विभिन्न क्षेत्रों से विद्वानों को आमन्त्रित किया और उन्होंने अपने मूल्यवान भाोधपत्र प्रस्तुत किया। इस परिसंवाद गोश्ठि का उद्घाटन श्रद्धेय गदन ट्री रिनपोछे जी ने किया।

D

x! lrr fpfdIlk f'k{kk ij dk;|'kk,k संस्थान के सोवा–रिगपा विभाग ने आयुश मंत्रालय, भारत सरकार के वित्तीय सहयोग से दिनांक 20 से 25 सितम्बर, 2016 तक छः दिन का कार्य ााला आयोजित किया। इस के लिए विभिन्न संस्थाओं से अनेक विद्वानों को ज्ञानसाधन व्यक्ति के रूप में आमन्त्रित किया और उन्होंने अपने मूल्यवान पत्र प्रस्तुत किये तथा उपचार का प्रदर्शन भी किया। कुल 70 सोवा–रिगपा वैद्य तथा विद्यार्थियों ने इस कार्य ााला का लाभ उठाया।

8k! if'k{k.k संस्थान ने दिनांक 28.9.2016 से 29.9.2016 तक लद्धाख न्यूट्रेन प्रोजेक्ट, लेह के साथ यूनीसेफ के वित्तीय सहयोग से ''ि ा ु संरक्षा तथा भाारीरिक दण्ड'' विशय पर गोनपा तथा श्रामणेरी विद्यालयों के अध्यापकों के लिए दो दिन के अध्यापक प्रि ाक्षण का आयोजन किया।इस के लिए यूनिसेफ के तीन वि ोशज्ञों को ज्ञानसाधन व्यक्ति के रूप में निमन्त्रित किया और उन्होंने प्रि ाक्षण दिया। इस प्रि ाक्षण में कुल 65 अध्यापक तथा 35 गोनपा प्रबन्धकों ने सक्रियता से भाग लिया।

J! ik..f,fi l lk/ku rFkk lj{k.k dUn राश्ट्रीय पाण्डुलिपि मि ान, भारत सरकार ने केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह को लद्धाख क्षेत्र के लिए पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र तथा पाण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र के रूप में मनोनित किया। तद्‌ानुसार संस्थान ने अनुबन्ध के आधार पर विद्धानों की नियुक्ति कर इन्हें काम सौंपा है। संस्थान लद्धाख क्षेत्र में उपलब्ध सभी पाण्डुलिपियों को संग्रह करने का प्रयत्न कर रहा है। पाण्डुलिपि संरक्षण के लिए एक क्षेत्रप्रयोग ााला भी स्थापित किया है और हेमिस गोनपा में स्थित बहुत से क्षतिग्रस्त पाण्डुलिपियों का संरक्षण किया गया है।

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान

Central Institute of Buddhist Studies

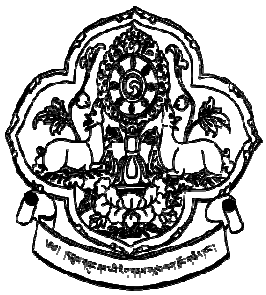

वर्ष 2015–2016 के खातों का

लेखा–परीक्षा–प्रतिवेदन

Audit Report & Audit Statement of

Accounts for the year

2015–2016

चोगलमसर, लेह–लदाख–194101 (ज. एवं क.)

Choglamsar, Leh-Ladakh 194101 (J&K

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान लेह का समाप्त वर्ष 31 मार्च 2016 के खातों पर भारत सरकार के नियंत्रक एवं लेखा–परीक्षक का पृथक् लेखा परीक्षण रिपोर्ट।

हमने नियंत्रक एवं महा लेखापरीक्षक के अधिनियम 1971 के अनुच्छेद 20(1) (कर्तव्य, अधिकार एवं सेवा की शर्तों) के अधीन केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान के 31 मार्च 2016 तक के तुलन–पत्र एवं उसी दिन समाप्त वर्ष के आय एवं व्यय खातों तथा प्राप्ति एवं भुगतान खातों की परीक्षा की। ये वित्तीय विवरण केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान के प्रबन्धन की जवाबदेही है। हमारा उत्तरदायित्व इन वित्तीय विवरणों पर लेखा परीक्षण के आधार पर विचार अभिव्यक्त करना है।

2. इस पृथक लेखा परीक्षा में वर्गीकरण, उत्तम लेखा–व्यवहारों की अनुरूपता, लेखा के मानकों एवं उद्घाटित नियम आदि के सन्दर्भ में भारत सरकार के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की टिप्पणी सम्मिलित है। यह लेखा परीक्षण, विधि, नियमों एवं विनियमों (अधिकार एवं नियमन) तथा दक्षता–सह– कार्यक्षमता, यदि कोई हो, तो उसके लागू करने के सन्दर्भ में निरीक्षण रिपोर्ट/सी.ए.जी. लेखापरीक्षण रिपोर्ट के माध्यम से अलग–अलग सूचित किया गया है।

3. हमने, भारत में सामान्य रूप से स्वीकृत लेखा परीक्षामानकों के अनुसार अपनी लेखापरीक्षा की है। इन मानकों के लिए आवश्यक है कि यह लेखा परीक्षण की योजना और क्रियाान्वयन इस सकारात्मक दावे के लिए करते हैं कि वित्तीय विवरण मिथ्या तथ्यों से मुक्त हो। लेखा–परीक्षण में जाँच के आधार पर राशि और प्रकटीकरण के समर्थन में दिये गये साक्ष्य पर आधारित वित्तीय विवरण सम्मिलित रहता है। लेखा–परीक्षण में उपयोग में लाये गये लेखा सिद्धान्तों तथा प्रबन्धन द्वारा किये गये महत्त्वपूर्ण प्राक्कलनों एवं यहाँ तक कि वित्तीय विवरणों के सम्पूर्ण प्रस्तुतीकरण का मूल्याकन भी शामिल है। हमें विश्वास है कि हमारा लेखा–परीक्षण हमारे विचार को एक न्यायोचित आधार प्रदान करता है।

4. हमारे लेखापरीक्षा के आधार पर हम प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हैं कि–

   (1) हमें सभी सूचनाएँ और स्पष्टीकरण, जो हमारे संज्ञान एवं विश्वास के अनुसार लेखा परीक्षा के उद्देश्य के लिए आवश्यक थे, प्राप्त हुए।

   (2) तुलन पत्र, आय एवं व्यय खाते तथा प्राप्ति एवं भुगतान खाते जिन को इस रिपोर्ट में लिया गया है, वित्तमंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित प्रपत्र पर वर्णित हैं।

   (3) हमारे विचार में, लेखा–बही और अन्य सम्बन्धित अभिलेखों का अनुपालन केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान द्वारा सही तरीके से किया गया है, जैसा कि इन पुस्तिकाओं के परीक्षण से हमारे सामने आया है।

(4) हम आगे रिपोर्ट देते हैं कि:

क. आय और व्यय का लेखा :

अन्य प्रशासनिक व्यय (सारणी 8) रू.1.04. करोड़

उपरोक्त में इस वर्ष के दौरान खरीदे गए परदे शामिल है जिस का मूल्य रू. 2.99 लाख है, जिस को स्थिर सम्पत्तियों के अंतर्गत दर्ज करना चाहिए था। इस के परिणामस्वरूप इस वर्ष के दौरान स्थिर सम्पत्तियों को कम और व्यय को रू. 2.84 लाख अधिक कहा गया है। (अर्धवर्ष के रू. 0.15 लाख के लिए रू.2.99 लाख प्रतिवर्ष 10 % प्रतिशत के दर से कम अवमूल्यन है)

ख. महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ (सारणी 9)

ख.1 लेखा नीति के संख्या (क) में कहा गया है कि वित्तीय विवरण भारत के चार्टर्ड एकाउन्ट्स संस्थान द्वारा निर्दिष्ट लेखा मानकों (ए.एस.) के अनुसार तैयार किया गया है। ए.एस. 15 के अनुसार सेवानिवृत्ति लाभ का लेखा से संबंधित लेखा वर्ष के अन्त तक सेवा प्रदान करने की सेवा–पारितोषिक एवं अवकाश–नगद के लिए प्रावधान होना चाहिए। हालंकि संस्थान ने सेवा में रत अपने कर्मचारियों के लिए 31 मार्च 2016 तक सेवा–पारितोषिक एवं अवकाश–नगद से संबन्धित कोई प्रावधान नहीं किया है, जिससे लेखांकन नीति संख्या (क) का उल्लंघन हुआ है, जैसा कि ऊपर कहा गया है।

ख.2 ऊपर के संख्या (1) को ध्यान में रखते हुए लेखा नीति संख्या (ख) के अनुसार, जो लेखांकन के नकद विधि का अनुसरण करते हुए वित्तीय विवरण तैयार किया गया है, वह भी लेखा नीति के संख्या (क) तथा ए.एस. 15 के अनुरूप नहीं है। लेखा के आधार प्रोदभव का अनुसारण नहीं करने के फलस्वरूप ऋणों को कम बतलाया गया है तथा वर्ष 2015–16 के आवश्यक वस्तुओं के खर्चे रू.83.28 लाख को 2016–17 में भुगतान किया है।

ख.3 लेखा निति के संख्या (ग) में कहा गया है कि संस्थान ने प्रारंभ से अवमूल्यन शुल्क नहीं लिया गया है, जबकि लेखा निति के संख्या (घ) में कहा गया है कि अवमूल्यन शुल्क आयकर के अधिनियम 1961 की दर के अनुसार लिया गया है जो डब्ल्यू. डी. वी. पुस्तकों एवं पश्चातवर्ती सुधारों में दर्शाया गया है। लेखा निति के संख्या (ग) और (घ) में अभिलिखित विवरण विरोधात्मक है।

ग. सामान्य :

ग.1 वार्षिक लेखा पर लेखापरीक्षा टिप्पणियों का वास्तविक प्रभाव

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान लेह के 31 मार्च 2015 में समाप्त वर्ष के वार्षिक लेखा पर लेखापरीक्षा टिप्पणियों का वास्तविक प्रभाव निम्नलिखित है:

i. संपत्तियों का रू.2.84 लाख कम कथन हुआ है।
ii. ऋणों का रू.83.28 लाख कम कथन हुआ है।
iii. कोष निधि / पूंजी निधि राशि रू.80.44 लाख अधिक कहा गया है।

ग.2 लेखाओं में पृष्ठ संख्या नहीं डला गया है।

घ. सहायक अनुदान

उपलब्ध कोश रू.16.76 करोड़ जिसमें संस्थान को वर्तमान वर्ष 2015–16 के दौरान भारत सरकार से प्राप्त सहायक अनुदान रू.15.57 करोड़ शामिल है और पिछले साल के अव्ययित शेष रू.1.19 करोड़ में से रू.0.89 करोड़ अव्ययित शेष रूप में छोड़ कर रू.15.87 करोड़ का उपयोग 31–3–2016 तक संस्थान द्वारा किया जा सका।

v पूर्व पैराओं में बताए गए हमारे निरीक्षण के अधीन हम उल्लेख करते हैं कि तुलन पत्र, आय एवं व्यय का हिसाब और प्राप्ति एवं भुगतान के हिसाब, जो इस रिपोर्ट में है, वे लेखा पुस्तकों के अनुकूल बैठते हैं।

vi हमारे विचार में तथा हमारी जानकारी के अनुसार, जो स्पष्टीकरण हमें उपलब्ध कराये गये, उक्त वित्तीय विवरण को लेखा–परीक्षण सिद्धान्तों एवं लेखा–टिप्पणियों के साथ इस रिपोर्ट के परिशिष्ट में उल्लिखित महत्त्वपूर्ण तथ्यों को भारत में स्वीकृत लेखा–परीक्षण के सामान्य सिद्धान्तों के अनुरूप सत्य एवं सही दृष्टि प्रदान करता है।

• यह केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान के कार्य कलापों का तुलन–पत्र 31 मार्च 2016 तक से सम्बन्धित है, तथा

• यह उस तिथि को समाप्त वर्ष के आय एवं व्यय खाता के घाटे से सम्बन्धित है।

भारतीय नियन्त्रक एवं महालेखापरीक्षक
के लिए / की ओर से

हस्त
मुख्य लेखा परीक्षा महा निदेशक (मध्य) ,
चंडीगढ़

स्थान : चंडीगढ़
दिनांक :

परिशिष्ट

1. **आन्तरिक लेखा प्रणाली :**

संस्थान में आन्तरिक लेखा प्रणाली नहीं है।

2. **आन्तरिक नियन्त्रक प्रणाली :**

आन्तरिक नियन्त्रक प्रणाली निम्नलिखित दृष्टियों से अपर्याप्त है।

(i) आन्तरिक लेखा प्रणाली का नहीं होना।

(ii) संस्थान ने लेखांकन नियमावली तैयार नहीं किया है।

(iii) आयु–वार ऋण और अग्रिम का विश्लेषन नहीं किया गया है।

(iv) स्थिर सम्पत्ति के पंजिका सामान्य वित्तीय नियम में निर्धारित प्रपत्र में नहीं बनाया रखा गया है।

(v) स्थिरसम्पत्ति तथा चल–सम्पत्ति की सूचियों के भौतिक सत्यापन का संचालन नहीं किया गया है।

(vi) प्रबन्धकदल द्वारा 31–3–2016 तक के बैंक शेष/निवेश/नियत जमा–राशि का भौतिक सत्यापन नहीं किया गया है। तुलनपत्र में दर्शाया गया 31–3–2016 तक के बैंक शेष/निवेश/नियत जमा–राशि से सम्बन्धित प्रमाणपत्र का भौतिकरूप से सत्यापन किया है और सही पाया है। इन को संस्थान के नाम से किया गया है जिन को शीघ्र ही जुटाया जा सकता है।

(vii) संस्थान को बैंक से 31–3–16 तक के बैंक शेष/निवेश/नियत जमा–राशि से सम्बन्धित पुष्टिकरण प्राप्त नहीं हुआ है। इसी को शीघ्र ही प्राप्त कर लेखापरीक्षक को जुटाया जाए।

3. **अचल परिसम्पत्तियों तथा चल–सम्पत्तियों के भौतिक सत्यापन :**

वर्ष 2015–2016 के दौरान अचल परिसम्पत्तियों और चल–सम्पत्तियों के भौतिक सत्यापन का संचालन नहीं किया गया है।

4. **वैधानिक बकाया को भुगतान करने में नियमितता**

लेखाबही के अनुसार संस्थान उपयुक्त अधिकरियों के साथ वैधानिक बकायों को जमा करने में नियमितता है।

हस्त.
निदेशक

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह (लदाख)

31.03.2016 तक का तुलन–पत्र

राशि रू.में

ब्यौरा	अनुसूची	वर्तमान वर्ष	पिछला वर्ष
मूलधन और देनदारी			
मूलधन	1	44,74,71,250	46,01,98,521
कुल		**44,74,71,250**	**46,01,98,521**
पसिम्पत्तियाँ			
स्थायी सम्पत्ति	2	40,26,85,349	42,12,18,237
वर्तमान सम्पत्ति, ऋण एवं अग्रिम	3	4,47,85,900	3,89,80,284
कुल		**44,74,71,249**	**46,01,98,521**

महत्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	10	
आकस्मिक देनदारियाँ तथा लेखा पर टिप्पणियाँ	11	

हस्ताक्षर
सी.ए. वरूनसोनी
बी.आर. सोपती और सह के लिए
सनदी लेखाकार

हस्ताक्षर
प्रशासनिक अधिकारी

हस्ताक्षर
निदेशक

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह (लदाख)

31.03.2016 वर्ष /अवधि तक का आय–व्यय का लेखा

राशि रू. में

ब्योरा	अनुसूची	वर्तमान वर्ष	पिछला वर्ष
(अ.) आय			
सहायक अनुदान	4	155,672,000	163,230,000
ब्याज प्राप्त	5	1,036,036	1,558,838
अन्य आय	6	247,650	1,09,539
कुल (अ)		**156,955,686**	**164,898,377**
(ब.) व्यय			
स्थापना खर्च	7	139,331,311	133,087,072
अन्य प्रशासनिक खर्च	8	10,325,818	7,194,252
अनुदान पर खर्च			
अवमुल्यन (सिडुल 2 के अनुसार वर्षान्त का कुल योग)	2	20,021,328	20,769,816
कुल (ब.)		**169,678,457**	**161,051,140**
शेष खर्च की तुलना में आय अधिक (अ–ब)		**-12,722,771**	**3,847,237**
शेष मूलधन में लाया गया अधिशेष/घाटा		**-12,722,771**	**3,847,237**

महत्वपूर्ण लेखा नीतियाँ 10

आकस्मिक देनदारियाँ तथा लेखा पर टिप्पणियाँ 11

हस्ताक्षर
सी.ए. वरूनसोनी
बी.आर. सोपती और सह के लिए
सनदी लेखाकार

हस्ताक्षर
प्रशासनिक अधिकारी

हस्ताक्षर
निदेशक

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह (लदाख)
31–3–2016 तक तुलन–पत्र से निर्मित अनुसूची

अनुसूची–1 राशि रूपये में

मूलधन	चालू वर्ष	पिछला वर्ष
वर्ष के प्रारंभ में राशि	460,198,521	456,247,547
योग : मूलधन में योगदान		103737
कम : भण्डार में घाटा(पिछला वर्ष का बिक्री आय में दिखा गया है)	-4,500	
योग/कटौती : आय/खर्च में कुल राशि जो आमदनी और खर्च लेखा से लाया गया –	-12,722,771	3,847,237
वर्षान्त में राशि	**447,471,250**	**460,198,521**

हस्ताक्षर
सी.ए. वरूनसोनी
बी.आर. सोपती और सह के लिए
सनदी लेखाकार

हस्ताक्षर
प्रशासनिक अधिकारी

हस्ताक्षर
निदेशक

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह (लदाख)

31–3–2016 तक तुलन–पत्र से निर्मित अनुसूचियाँ

अनुसूची–3 राशि रूपये में

चालू सम्पत्ति, ऋण एवं अग्रिम	चालू वर्ष	पिछले वर्ष
अ. चालू सम्पत्ति		
1. विस्तृत सूची		
क) भण्डार पुर्जे		
दवा भण्डार	186,532	237,170
प्रकाशन पत्रिका	4,169,271	4,623,968
संग्रहालय सामान/परम्परा	536,498	489,375
पुस्तकें	44,583	44,583
2. हाथ में कुल राशि (चेक/ड्राफट आदि सहित)	शून्य	शून्य
3. बैंक में राशि		
क) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, चोगलमसर खाता नं. 11359017437	14,062,571	16,048,743
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, लेह, खाता नं. 10942161236	16,504	16,504
कुल अ.	**19,015,959**	**21,460,343**
आ		
1. ऋण		
क) कर्मचारी	-2,465	-2,465
ख) अन्य को		
ग) अन्य		
2. अग्रिम एवं अन्य राशि जो बाद में वसूला जाएगा		
राष्ट्रीय अभिलेखागार नेपाल	5,906	5,906
लोक निर्माण विभाग को अग्रिम	25,750,000	17,500,000
ज़मा		
सिक्युरिटी जमा		
टेलीफोन सिक्युरिटी	15,900	15,900
पुस्तकालय सिक्युरिटी	600	600
कुल आ	**25,769,941**	**17,519,941**
कुल अ+आ	**44,785,900**	**38,980,284**

हस्ताक्षर
सी.ए. वरूनसोनी
बी.आर. सोपती और सह के लिए
सनदी लेखाकार

हस्ताक्षर
प्रशासनिक अधिकारी

हस्ताक्षर
निदेशक

31–3–2016 तक तुलन–पत्र से निर्मित अनुसूचियाँ

अनुसूची–4 राशि रूपये में

अनुदान/कटौती	चालूवर्ष	पिछले वर्ष
सहायक अनुदान		
1. केन्द्रीय सरकार		
भारत सरकार से प्राप्त राशि		
क. योजना मद में	76,147,000	87,782,000
ख. गैर योजना मद में	79,525,000	75,448,000
कुल	**155,672,000**	**163,230,000**

हस्ताक्षर
सी.ए. वरूनसोनी
बी.आर. सोपती और सह के लिए
सनदी लेखाकार

हस्ताक्षर
प्रशासनिक अधिकारी

हस्ताक्षर
निदेशक

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह (लदाख)
31–03–2016 तक तुलन–पत्र से निर्मित अनुसूचियाँ

अनुसूची–5 राशि रूपये में

ब्याज प्राप्ति	चलू वर्ष	पिछले वर्ष
1. बचत खाते पर		
क) अनुसूचित बैंक पर	1,036,036	1,558,838
2. ऋण पर		
क) कर्मचारी/स्टाफ		
कुल	**1,036,036**	**1,558,838**

अनुसूची–6		
अन्य आमदनी	चालू वर्ष	पिछलेवर्ष
1. विविध सेवाओं पर फीस		
विद्यालय छोड़ने का प्रमाणपत्र	300	250
विलम्ब शुल्क	1,444	832
अतिथि आवास के कमरा किराया से	62,500	70,480
फोटोकापी चार्ज	3,841	31,667
खोये हुए पुस्तकों का मूल्य		1,522
खोये हुए पुस्तकालयी पुस्तकें		176
अर.टी.अई शुल्क		112
2. विविध आय		
विविध आय	179,565	
सोवारिगपा औषधों का ब्रिक्री	8,377	4,500
कुल	**256,027**	**109,539**

हस्ताक्षर
सी.ए. वरूनसोनी
बी.आर. सोपती और सह के लिए
सनदी लेखाकार

हस्ताक्षर
प्रशासनिक अधिकारी

हस्ताक्षर
निदेशक

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह (लदाख)
31–03–2016 तक तुलन–पत्र से निर्मित अनुसूचियाँ

अनुसूची–7 राशि रूपये में

स्थापना खर्च	चालू वर्ष	पिछले वर्ष
क.) वेतन आदि	95,544,934	90,128,803
ख.) भत्तादि और बोनस		
ग.) भविष्य–निधि योगदान	23,689,237	22,131,428
घ.) अन्य (चिह्नित) गोंनपा स्कूलों को छात्रवृत्ति	16,830,048	15,469,303
ङ.) जनजातीय उप योजना	3,267,092	5,357,538
कुल	**139,331,311**	**133,087,072**

हस्ताक्षर
सी.ए. वरूनसोनी
बी.आर. सोपती और सह के लिए
सनदी लेखाकार

हस्ताक्षर
प्रशासनिक अधिकारी

हस्ताक्षर
निदेशक

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह (लदाख)
31–03–2016 तक तुलन–पत्र से निर्मित अनुसूचियाँ

अनुसूची–8 राशि रूपये में

अन्य प्रशासनिक खर्च, आदि	चालू वर्ष	पिछले वर्ष
1 बिजली ऊर्जा	1,000,000	18,335
2 पानी फीस		
3 मरम्मत और रखरखाव		
4 वाहन चालन और रखरखाव	498,137	292,761
5 डाक खर्च, टेलीफोन एवं संचार फीस	115,364	81,528
6 छपाई और स्टेशनरी		
7 यात्रा और वाहन खर्च	2,679,543	2,824,562
8 संगोष्ठी और कार्यशाला पर खर्च	1,260,250	661,419
9 कम्प्यूटर शिक्षण पर खर्च		100,100
10 लेखापरीक्षक पारिश्रमिक		
11 विविध खर्च	1,723,792	992,202
12 विधिक फीस		5,500
13 छात्रों को पाठ्यपुस्तकें वितरण		
14 पोशाक खर्च	124,470	98,780
15 औषधीय पौधे परीक्षण हेतु अमची यात्रा		
16 चिकित्सीय प्रतिपूर्ति	79,820	234,916
17 नियतकालीन शोधपत्रिका	72,810	46,718
18 शीतकालीन ईंधन	269,252	69,379
19 शैक्षणिक यात्रा	656,800	550,000
20 छात्रावास ईंधन	457,279	797,023
21 चिकित्सीय खर्च	122,763	192,170
22 दवा उपभोग	173,401	95,780
23 वार्षिकोत्सव	89,330	111,135
24 मुख्य द्वार की सजावट		
25 जेनरेटर के लिए ईंधन	143,954	50,576
26 डी.पी.एस. खर्च	981,475	163,538
27 बैंक चार्ज	141	
कुल	**10,448,581**	**7,386,422**

हस्ताक्षर
सी.ए. वरूनसोनी
बी.आर. सोपती और सह के लिए
सनदी लेखाकार

हस्ताक्षर
प्रशासनिक अधिकारी

हस्ताक्षर
निदेशक

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह (लदाख)
31–3–2016 अवधि/वर्ष तक का प्राप्ति और भुगतान

क्र.स. प्राप्ति	वर्तमान वर्ष	पिछलावर्ष	क्र.सं. भुगतान	वर्तमान वर्ष	पिछलावर्ष
क. शुरूवाती राशि			क. खर्च		
अ. हाथ में राशि	शून्य	शून्य	अ. स्थापना खर्च (अनुसूची 7 के अनुसार)	139,331,311	133,087,072
आ. बैंक में राशि			आ. प्रशासनिक खर्च(अनुसूची 8 के अनुसार)	10,275,180	7,290,642
च. चालुखाता में	शून्य	शून्य			
छ. जमा खाता में	शून्य	शून्य	ख. अन्य परियोजनाओं में भुगतान		
ज. बचत खाता में			नमग्यल इन्स्टीच्यूट फॉर रिसर्च ऑन लदाखी आर्ट एण्ड कल्चर		
एस. बी. आई., चोगलमसर खाता सं. 11359017437	16,048,743	6,149,560			
एस. बी. आइ., लेह खाता स. 10942161236	16.504	16.185			
ख. अनुदान प्राप्त			ग. स्थायी सम्पत्ति एवं पूंजीगत कार्य में भुगतान		
अ. भारत सरकार से	155,672,000	163,230,000	अ. स्थायी सम्पत्ति की खरीद	1,488,441	10,781,673
			आ. पूंजीगत कार्य में खर्च		
ग. ब्याज प्राप्त			घ. अन्य भुगतान		
अ. बैंक में जमा राशि पर	1,036,036	1,558,838			
आ. ऋण, अग्रिम पर			प्रकाशन	635,750	584,591
			संग्रहालय सामान/परम्परा	60,000	5,685
घ. अन्य आमदनी	247,650	105,039			
			भवन निर्माण के लिए पी.डब्लयू. डी. को	8,250,000	3,500,000
ङ. अन्य प्राप्ति			ङ. अन्तिम शेष		
प्रकाशन से आमदनी	1,090,447	250,788	अ. हाथ में राशि	शून्य	शून्य
संग्रहालय सामान/परम्परा	8,377	4,500	आ. बैंक में राशि		
अमची दवा की विक्री से आय	–		बचत खाता		
			एस. बी. आई. चोगलमसर खाता सं. 11359017437	14,062,571	16,048,743
जेई. स्तनजिन आंगमो से प्रतिपूर्ति आय			एस. बी. आई. लेह, खाता सं 10942161236	16,504	16,504
कुल	**174,119,757**	**171,314,910**	कुल	**174,119,757**	**171,314,910**

हस्ताक्षर
सी.ए. वरूनसोनी
बी.आर. सोपती और सह के लिए
सनदी लेखाकार

हस्ताक्षर
प्रशासनिक अधिकारी

हस्ताक्षर
निदेशक

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह (लदाख)

31–3–2016 तक तुलन–पत्र से निर्मित अनुसूचियाँ

राशि रूपये में

अनुसूची 2 –स्थायी सम्पत्तियाँ	सकल कुलराशि					अवमूल्यन				वास्तविक राशि	
विवरण	वर्ष के प्रांरभ में मूल्य	प्रथम अर्ध वर्ष के दौरान योग	दूसरे अर्ध वर्ष के दौरान योग	वर्ष के दौरान कटौती	वर्षान्त में मूल्य	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान योग	अवमूल्यन दर	कुल वर्षान्त में	चालूवर्ष के अन्त में	पिछले वर्ष के अन्त में
अ. स्थायी परिसम्पत्तियाँ											
1. भूमि											
क) लीज़ होल्ड	2,342,000.00				2,342,000.00					2,342,000.00	2,342,000.00
2. भवन											
क) लीज़ होल्ड भूमि पर	339,919,024.30				339,919,024.30	16,995,951.22	-	5%	16,995,951.22	322,923,073.08	339,919,024.30
3. मशीनरी एवं उपकरणादि	3,576,847.03				3,576,847.03	536,527.05	-	15%	536,527.05	3,040,319.98	3,576,847.03
4. वाहन	2,203,758.66				2,203,758.66	330,563.80	-	15%	330,563.80	1,873,194.86	2,203,758.66
5. फर्नीचर आदि	12,958,034.89		544,631		13,502,665.89	1,295,803.49	27,231.55	10%	1,323,035.04	12,179,630.85	12,958,034.89
6. पुस्तकालय पुस्तकें	3,674,692.18	12,982.00	309,253		3,996,927.18	551,203.83	25,141.28	15%	576,345.11	3,420,582.07	3,674,692.18
7. चापाकल एवं जलापूर्ति	82,395.35				82,395.35	12,359.30	0.00	15%	12,359.30	70,036.05	82,395.35
8. सौर उर्जा उपकरण	57,010.35				57,010.35	8,551.55	0.00		8,551.55	48,458.80	57,010.00
9. अन्य स्थायी परिसम्पत्तियाँ											
क.) खेलकूद	521,752.98	85,290.00	61,985		669,027.98	78,262.95	17,442.38	15%	95,705.33	573,322.65	521,752.98
							0.00				
10. कम्पुटर योजना			474,300		474,300.00		142,290.00	60%	142,290.00	332,010.00	
चालू वर्ष में कुल	**365,335,515.74**	**98,272.00**	**1,390,169.00**	**-**	**366,823,956.74**	**19,809,223.19**	**212,105.21**		**20,021,328.40**	**346,802,628.34**	**365,335,515.39**
आ. पूजीगतकार्य प्रगति पर	55,882,721.00				55,882,721.00					55,882,721.00	55,882,721.00
योग (अ+आ)	**421,218,236.74**	**98,272.00**	**1,390,169**	**-**	**422,706,677.74**	**19,809,223.19**	**212,105**		**20,021,328**	**402,685,349.34**	**421,218,236.39**

हस्ताक्षर
सी.ए. वरूनसोनी
बी.आर. सोपती और सह के लिए
सनदी लेखाकार

हस्ताक्षर
प्रशासनिक अधिकारी

हस्ताक्षर
निदेशक

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह (लदाख)

31–03–2016 तक का अंशदायी भविष्य निधि लेखा

राशि रूपये में

विवरण	राशि		विवरण	राशि
प्रारंभिक राशि	145,559,918		रकम और बैंक रकम	
जोड़ : प्राप्ति	23,689,237		भारतीय स्टेट बैंक, चोगलमसर खाता सं. 11359017448	14,852,348
जोड़ : ब्याज का अन्तर	-		भारतीय स्टेट बैंक,लेह खाता सं. 10942161688	140,359
	169,249,155			
घटाना : भुगतान	16,763,777		सावधि जमा	129,871,094
	152,485,378			
		152,485,378	(अनुसूची अ)	
जोड़ : वर्ष में ब्याज का प्रावधान		12,775,368	ब्याज प्राप्ति	12,707,843
			राशि प्राप्य (सामन्जस्य करना है)	7,689,102
		165,260,746		**165,260,746**

हस्ताक्षर
सी.ए. वरुनसोनी
बी.आर. सोपती और सह के लिए
सनदी लेखाकार

हस्ताक्षर
प्रशासनिक अधिकारी

हस्ताक्षर
निदेशक

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर, लेह (लदाख)
31–03–2016 तक बैंक सामन्जस्य वर्णन
भारतीय स्टेट बैंक, चोगलमसर, लेह (लदाख)

बैंक के अनुसार शेष राशि रु. **19,841,693**

कम निर्गत परन्तु बाद में प्रेषित

क्र.सं.	चेक सं.	दिनांक	राशि
1.	011667	28-03-2016	रू. 16,316=00
2.	011668	28-03-2016	रू.6,00,000=00
3.	011669	28-03-2016	रू. 20,620=00
4.	011670	28-03-2016	रू.103,500=00
5.	011671	28-03-2016	रु. 18,000=00
6.	011672	28-03-2016	रू. 15070=00
7.	011673	28-03-2016	रू. 28,609=00
8.	011674	28-03-2016	रू. 33,368=00
9.	011675	28-03-2016	रू. 78,472=00
10.	011676	28-03-2016	रू. 360=00
11.	011678	28-03-2016	रू.122,763=00
12.	011679	28-03-2016	रू.354,598=00
13.	011680	28-03-2016	रू.255,100=00
14.	011681	28-03-2016	रू.289,531=00
15.	011682	28-03-2016	रू.80,900=00
16.	011683	28-03-2016	रू.393,400=00
17.	011686	28-03-2016	रू.661,679=00
18.	011687	28-03-2016	रू.55,711=00
19.	011688	28-03-2016	रू.2,250,000=00
20.	011689	31-03-2016	रू.1,000,000=00
	कुल		रू. **5,779,122=00**

कैश बुक के अनुसार जमा शेष रु.14,062,571=00

हस्ताक्षर प्रशासनिक अधिकारी	हस्ताक्षर सी.ए. वरूनसोनी हेतु बी.आर. सोपती और सह सनदी लेखाकार	हस्ताक्षर निदेशक

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, चोगलमसर,लेह (लदाख)
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ और लेखा पर टिप्पणियाँ

1. महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ :

क. **वित्तीय कथन तैयार करने का आधार** – वित्तीय कथन भारत में चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट संस्थान के द्वारा निर्मित लेखा मानकों के आधार पर तैयार किया गया है।

ख. **लेखा करार और राजस्व मान्यता** – वित्तीय कथन लेखा के नकदी विधि के आधार पर तैयार किया गया है।

ग. **स्थायी परिसम्पत्ति** – स्थायी परिसम्पत्ति के अभिग्रहण मूल्य और पश्चातवर्ती सुधार के आधार पर कहा गया हैं। संस्थान ने प्रारंभ से ही अवमूल्यन की फीस नही लिया है।

घ. **अवमूल्यन** – अवमूल्यन फीस आयकर के अधिनियम 1961 की दर के अनुसार लिया गया है जो डब्ल्यू डी वी पुस्तकों एवं पश्चातवर्ती सुधारों में दर्शाया गया है।

ङ **विस्तृत सूची** – विस्तृत सूचियों का मूल्यांकन लागत मूल्य के आधार पर किया गया है।

च. **निवेश** – निवेश लागत मूलय के आधार पर किया गया है।

छ. **विदेशी मुद्रा का परिचालन** – चालू वर्ष में कोई भी परिचालन विदेशी मुद्रा में नही हुआ।

ज. **सेवानिवृति लाभ–**

1. **सेवोपहार** – श्री छ़ीरिङ मोटुप, गार्ड कमांडर, श्री छ़ेवङ नोरबु, चपरासी और श्रीमती छ़ेरिङ पलमो, चपरासी अपने–अपने सेवा से सेवा निवृत हुए और उन तीनों को चालू वर्ष में सेवोपहार दिये गये।

2. **छुट्टी के बदले राशि** – श्री छ़ीरिङ मोटुप, गार्ड कमांडर, श्री छ़ेवङ नोरबु, चपरासी और श्रीमती छ़ेरिङ पलमो, चपरासी अपने–अपने सेवा से सेवा निवृत हुए और उन्हें चालू वर्ष में छुट्टी के बदले राशि प्रदान की गई।

3. **निवृत्ति वेतन** – चालू वर्ष में कोई निवृति वेतन राशि निर्गत नहीं की गयी।

झ. **पूर्वावधि अनुकूलन, विशेष मद तथा लेखा नीतियों में बदलाव** – पूर्वावधि अनुकूलन, विशेष मद तथा लेखा नीतियों में बदलाव वित्तीय मामले में महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है अतः इसे प्रकट किया गया है।

ञ. **आकस्मिक देनदारियाँ** – चालू वर्ष में कोई आकस्मिक देनदारी नहीं रही।

लेखा पर टिप्पणियाँ

2. लेखा पर टिप्पणियाँ :

क. चालू वर्ष की तूलना में पिछले वर्ष की संख्या को आवश्यकतानुसार नये समूहों में आयोजित किया गया है।

ख. अग्रिम, विविध देनदारी आदि सत्यापन के अधीन है।

ग. संस्थान ने अवमूल्यन की फीस प्रारंभ से ही नही लिया है और संस्थान द्वारा कोई भी अवमूल्यन लेने का प्रावधान नही है।

घ. संस्थान द्वारा किसी प्रकार का आय–कर का प्रावधान नहीं रखा गया है और कर देनदारी स्थगित है।

ङ संस्थान का कोई टीडीएस खाता नहीं है जैसा कि बैंक कटौती करता है।

वर्ष 2015–16 के दौरान केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह–लद्दाख के

कार्यकरण की समीक्षा विवरण

केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह–लद्दाख, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्णतया वित्त पोषित एक स्वायत्त संगठन है। यह संस्थान, इस क्षेत्र के दूरदराज से आने वाले युवा लामाओं (नवशिष्य) तथा अन्य विद्यार्थियों को बौद्ध अध्ययन के सभी क्षेत्रों में शिक्षा–दिक्षा देने में सक्रिय रूप से कार्यरत है। संस्थान शोध परियोजनाओं, दुर्लभ पुस्तकों के अनुवाद, सेमिनारों, कार्यशालाओं तथा संगोष्ठियों के आयोजन, प्राचीन पाण्डुलिपियों के संग्रह के माध्यम से समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के परीक्षण का सफल प्रयास करता आ रहा है। संस्थान विद्यार्थियों को देश के महान ऐतिहासिक, औद्योगिक तथा भौगोलिक महत्त्व से परिचित कराने के उद्देश्य से, भारत दर्शन/लद्दाख दर्शन/आमची हर्ब्सर/खनिज अभिज्ञान दौरे भी आयोजित करता है। इस के अलावा, संस्थान विद्यार्थी जिला तथा राज्य स्तरीय खेलकूद और अन्य शैक्षिक कार्यकलापों में भाग लेते हैं। संस्थान का प्रबंधन एक प्रबंधन बोर्ड द्वारा किया जाता है जिस के अध्यक्ष भारत सरकार, संस्कृति मन्त्रालय के संयूक्त सचिव है। इस प्रबंधन बोर्ड की सहायता के लिए विभिन्न उप समितियाँ नामतः वित, शैक्षिक, प्रकाशन, पुस्तकालय, अनुसंधान आदि है। राष्ट्र मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषत, बंगलौर ने के,बौ.वि.सं. लेह को ग्रेड–ए के साथ मान्यता प्रदान की । तदनुसार भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने अधिसूचना संख्या अधिसूचना संख्या एफ.9–5/2001–यू.एस.(ए) दिनांक 15–01–2016 के अनुसार केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह को 'समवत् विश्वविद्यालय' का दर्जा प्रदान किया।

2. रिपोर्टाधीन वर्ष 2015–16 के दौरान, इस संस्थान में छठी से आठवीं कक्षा सहित मध्यमा, शास्त्री तथा आचार्य में नौ वर्ष के ग्रेडबद्ध पाठयक्रमों में 698 विद्यार्थियों को प्रवेश दिया। संस्थान ने विभिन्न कक्षाओं में 110 विद्यार्थियों को नया प्रवेश दिया। इसके अलावा, बौद्ध धर्म के चार पंथों के क्षेत्र में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मानदंडों के अनुसार अध्येताओं को पी0 एच0 डी0 के लिए कनिष्ठ अध्येतावृत्तियाँ प्रदान की गई। संस्थान के 50 गोन्पा/मठ स्कूल हैं जो लद्दाख के विभिन्न मठों में नए शिष्यों को प्रारंभिक शिक्षा देते हैं। गत वर्ष इन फीडर स्कूलों में 903 विद्यार्थी अध्ययनरत थे। संस्थान के दो शाखा स्कूल हैं, डी.पी. एस., जंस्कार और बौद्ध दर्शन संस्कृत विद्यालय, मण्डोगलु (हि.प्र.) जिन में पहली से दशवीं कक्षा तक विभिन्न कक्षाओं में 370 विद्यार्थी थे।

3. वर्ष 2015–16 के दौरान, संस्थान द्वारा अपने परिसर में लद्दाख के विभिन्न विहारों एवं संस्थानों से विद्वानों को आमंत्रित कर दिनांक 11–07–2015 से लेकर 14–07–2015 तक '' बौद्ध महायान के सक्या समप्रदाय के विशिष्ट दृष्टि, भावना एवं चर्या'' विषय पर चार दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन आचार्य नागार्जुन सभाभवन में किया। उक्त परिसंवाद गोष्ठी का उद्घाटन बौद्ध महायान के सक्या सम्प्रदाय के परम पूज्य सक्या ठीज़िन रिनपोछे जी ने किया।

4. वर्ष 2015–16 के दौरान संस्थान द्वारा पांच ग्रन्थों को प्रकाशित किया – परम पूज्य तोकदन रिनपो द्वारा विरचित 'लदाख का इतिहास', 'जंस्कार की सांस्कृतिक विरासत', 'तिब्बती पर्याय का शब्दकोश', भोटी में 'धर्मपद' तथा श्री टशी रबग्यस द्वारा विरचित हिन्दी में 'लदाख का इतिहास'।

5. संस्थान ने उत्तर मध्यमा द्वितीय आचार्य प्रथम एवं द्वितीय वर्ष, शिल्पकला तथा थंका चित्रकला कक्षा के 50 छात्रों के एक दल को जनवरी 2015 में 36 दिनों के लिए शैक्षिक यात्रा (भारत दर्शन) के लिए भेजा था। उक्त यात्रा का उद्देश्य छात्रों को देश की ऐतिहासिक, औद्योगिक, धार्मिक और भौगोलिक धरोहर से परिचित कराना तथा उन में राष्ट्रीय एकता की भावना उत्पन्न करना है।

6. इस सत्र के दौरान संस्थान द्वारा कुल 824 पुस्तकें खरीदी गईं। सत्र के दौरान पुस्तकालय 22 भारतीय एवं विदेशी शोध पत्रिका/समसामयिक पत्रिकाओं तथा 20 प्रकार की पत्रिकाओं का ग्राहक बना।

7. केन्द्रीय बौद्ध विद्या संस्थान, लेह लद्दाख क्षेत्र के लिए "पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र" तथा "पण्डुलिपि संरक्षण केन्द्र" है। तदनुसार संस्थान ने लादाख क्षेत्र के 2130 मठों, महलों एवं व्यक्तियों से लगभग 30807 पाण्डुलिपियों का संग्रह किया।

****